



AISHE Code: C-28817

NIRF Code: IR-C-C-28817

सौरभ

महाविद्यालय का दर्पण

(By the students, of the Students, for the Students)

2023-24



Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut

Re-Accredited B+ Grade by NAAC (IVth Cycle)

CPE Status by UGC (2004-14) College of Excellence (2014-19)



सरस्वती वंदना

हे हंसवाहिनी, हे जगती, हे वागीश्वरी नमन तुमको ।
जालकर दिव्य दृष्टि इधर तुम, कर दो पावन इस मन को ।
हे वीणावादिनी, मां शारदे, हम आकर तेरे द्वार खड़े ।
तू खोल दे पट अंतर्मन के, दूर हो सभी विषाद बड़े ।
हे भुवनेश्वरी, बुद्धिदात्री, दे करके दान बुद्धि का तुम ।
यश, कीर्ति जगत में फहराओ, सार्थक हो जाए जन्म मेरा ।
हे कुमुदी, हे मां सरस्वती, बनकर वरदायिनी वर देना ।
सत्कर्म, सदाचरण के पथ पर, चलकर सत्चेतन हो जाऊं ।
मां ब्रह्मचारिणी, चंद्रकांति, मां भारती, सब तुझ पर अर्पण ।
बस यही प्रार्थना जीवन पथ पर, चलकर असीम ज्ञान को पाऊं ।
हे हंसवाहिनी, हे जगती, हे वागीश्वरी नमन तुमको ।
जालकर दिव्य दृष्टि इधर तुम, कर दो पावन इस मन को ।



सादर श्रद्धांजलि एवं समर्पण



डॉ० मनमोहन नाथ सेठ (पूर्व सचिव)

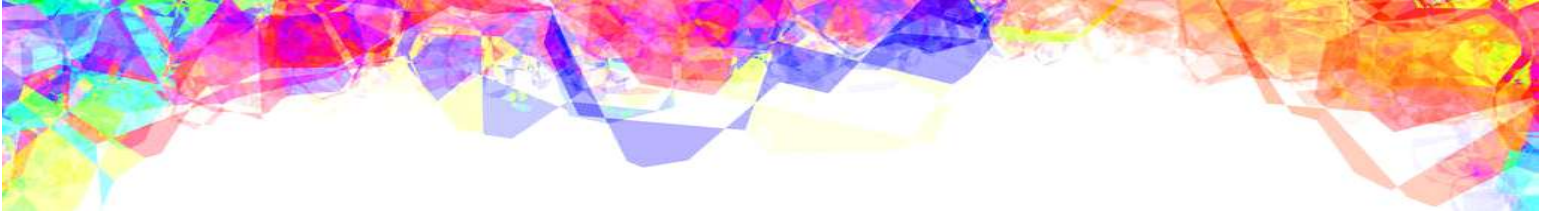
प्रबन्ध समिति

(12.09.1993 – 17.10.2022)

स्मृतियों की अमर ज्योति में, आपके व्यक्तित्व का प्रकाश,
आपके कर्म की महक से, सजी यह पत्रिका "सौरभ" आज।

ज्ञान की अनमोल धारा, आपने सदा प्रवाहित की,
शिक्षा के इस मन्दिर में, आपने अविष्ट छाप छोड़ी।

आपके आदर्शों की प्रेरणा, सदैव हमें पथ दिखायेगी,
समर्पण की इस पवित्र आत्मा को, शत-शत नमन हमारा।



Manmohan Nath Memorial Trophy
for Maximum Attendance in the College
Tisha
(B.A. IInd Year) - 96.5%



उद्बोधन:

प्राचार्या की लेखनी से



मानव जीवन को सुगम, सुन्दर एवं सार्थक बनाने की प्रशस्त मार्ग है—शिक्षा। अच्छी शिक्षा में भविष्य के स्वप्न होते हैं। स्वामी विवेकानन्द में कहा है कि शिक्षा मनुष्य को उसके आदर्श और असीम विकास की ओर ले जाने की प्रक्रिया है। शिक्षा द्वारा शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है। हमारा महाविद्यालय उच्च शिक्षा की समृद्धि हेतु निरन्तर प्रयासरत् है। उसी का परिणाम है कि इस संस्था की पढ़ी छात्रायें प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रभावी भूमिका निभा रही हैं।

नई शिक्षा नीति—2020 रोजगारमुख शिक्षा प्रणाली में छात्राओं के अच्छे भविष्य की असीम संभावनायें छिपी हैं। इस शिक्षा प्रणाली ने शिक्षिकाओं के दायित्वों को भी बढ़ा दिया है। मुझे विश्वास है कि हम छात्राओं के हित में भूमण्डलीय दायित्वों को चुनौती मानकर पूरा करेंगे। महाविद्यालय की प्रत्येक ईकाई को कार्यशील होकर छात्राओं, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में नव सृजन करना है, आत्म—मूल्यांकन करते हुए उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करना है। छात्राओं को प्रेरित कर उन्हें सुरभित करना है ताकि वह भविष्य में पुष्प बन अपने अनुजों को सुरभित कर सकें।

महाविद्यालय न केवल छात्राओं के विकास हेतु अपितु, बाहरी कम्युनिटी के विकास को भी उद्यत रहता है अतः इसी प्रयास में एक मोहिउद्दीनपुर गांव को गोद लिया हुआ है। साथ ही वृक्षारोपण, स्वच्छता, पोस्टर, जल—शरबत वितरण द्वारा सामाजिक विकास में योगदान देता रहा है। स्वच्छ, पर्यावरण हेतु सम्पूर्ण महाविद्यालय प्रांगण को 'हरित पहल' के अन्तर्गत प्लास्टिक फ्री बनाया गया है।

इस सत्र में अनेक सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों के साथ विभिन्न योजनाओं को लेकर समझौता—ज्ञापन हुए, जिनके अन्तर्गत हुए कार्य निश्चय ही छात्राओं के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

महाविद्यालय के समग्र विकास अध्ययन—अध्यापन में गुणवत्ता, पुस्तकालयों, प्रयोग—शालाओं के उचित रख रखाव हेतु महाविद्यालय दृढ़ संकल्पित है।

'सौरभ' वार्षिक पत्रिका का यह अंक विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्ति का द्योतक है। शिक्षा के साथ सह—शैक्षणिक गतिविधियों में छात्राओं की भागीदारी को रंगीन छात्राचित्रों द्वारा पत्रिका में स्थान दिया गया है। महाविद्यालय के उभरते रचनाकारों की रचनायें, विद्वान शिक्षकों के ज्ञानवर्धक लेख एवं विभिन्न क्षेत्रों में महाविद्यालय के पूरे सत्र की विशिष्ट उपलब्धियों के संकलन से 'सौरभ' पत्रिका के प्रकाशन पर सम्पूर्ण प्रबन्ध समीति के सम्मानित सदस्यों, महाविद्यालय परिवार, सम्पादक मण्डल एवं सभी प्यारी छात्राओं को ढेर सारी बधाईयाँ।

प्रिय छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें.....

प्राचार्य एवं संरक्षिका
प्रो. निवेदिता कुमारी

सम्पादकीय



‘सौरभ-2023-24’ महाविद्यालय में युवा प्रतिभा का दर्पण है जो पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न लेखों, गतिविधियों एवं उपलब्धियों के रूप में पाठक तक पहुँचता है। महाविद्यालय की समस्त उपलब्धियाँ महाविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट कॉलेज-को-स्कोप में प्रकाशित होती है, सौरभ तो छात्राओं की प्रतिभा से सुवासित पत्रिका है।

आजकल की युवा पीढ़ी सोशल मीडिया यथा-वाट्सएप, फेसबुक एवं इन्स्टॉग्राम से बहुत प्रभावित है। फलस्वरूप, युवाओं का सर्वांगीण विकास नहीं हो रहा है। अतः युवा पीढ़ी को इन्टरनेट का प्रयोग उसकी प्राथमिकता को देखते हुए ही करना चाहिए। सत्यता यही है कि कक्षा में गुरु द्वारा दिया ज्ञान ही युवाओं को समाज-सापेक्ष बनाता है। अतः यदि हमें विकास के सोपानों को तय करना है तो श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाना होगा और उसकी सार्थक अभिव्यक्ति करनी होगी। मेरे विचार से महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ‘सौरभ’ अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हमारे महाविद्यालय की छात्रायें पुस्तक ज्ञान के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों में भी सक्रिय भागीदारी कर रही हैं। छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु कृत संकल्पित इस महाविद्यालय में समय-समय पर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जिनमें वृक्षारोपण, ग्रीन कैम्पस, मतदाता जागरूकता कैम्पेन, योग का महत्व, विभिन्न खेल-कूद जैसे अनेक कार्यक्रमों में छात्राओं की भागीदारी रहती है। साथ ही एस. सी. सी., एन. एस. एस., रोवर एण्ड रेजर, सांस्कृतिक कार्यक्रम, युवा महोत्सव, शोधपरक व्याख्यान, कार्यशाला, सेमिनार, स्किल एवं एडओन कोर्सेस द्वारा महाविद्यालय निरन्तर नये आयाम स्थापित करता है। अतः शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है, वरन् वह विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को भी आकार देती है। “सौरभ” इसी विचारधारा का समर्थन करते हुए छात्राओं की कवितायें एवं विभिन्न आलेखों को एकत्र कर उन्हें प्रस्तुत करने का कार्य करती है। यह पत्रिका हमारे महाविद्यालय के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण है।

मैं, इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रबन्ध समीति, प्राचार्य महोदया, सम्पादकीय टीम, लेखकों और सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ‘सौरभ’ का यह अंक पाठकों को नई ऊर्जा एवं प्रेरणा देगा।

सादर

प्रो. अर्चना रानी



डा० लक्ष्मीकान्त बाजपेयी
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भा.ज.पा.
सांसद एवम् मुख्य सचेतक (राज्य सभा)
Dr. Laxmikant Bajpai
National Vice President, BJP
Member of Parliament Chief & Whip
(Rajya Sabha)



अध्यक्ष / Chairman :
अधीनस्थ विधान संबंधी समिति
Committee on Subordinate Legislation
सदस्य / Member :
• कार्य मंत्रणा समिति / Business Advisory Committee
• संचार और सूचना प्रौद्योगिकी समिति / Committee on
communication and information Technology

पत्रांक

दिनांक 19/07/2024


शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि रघुनाथ गर्ल्स (पीजी) कॉलेज, मेरठ गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की छात्राओं की प्रतिभा, विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र, संग्रहणीय लेखों के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'सौरभ' का यह अंक श्रेष्ठ होगा और पाठकों को पसंद आएगा। इस अवसर पर मैं महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर निवेदिता मलिक एवं संपादक मंडल के प्रति शुभ आशीर्वाद के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभ कामना सहित


(डॉ. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी)

दीपक मीणा
आई.ए.एस.
कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट



अर्द्ध.शा. पत्र सं. सीजे/OSD-Cummb/2024
दिनांक : 4-9-2024
कार्यालय : 0121-2664133
निवास : 0121-2642232
फैक्स : 0121-2647200
ई-मेल : dmmee@nic.in
कार्यालय कलेक्टर/जिला मजिस्ट्रेट, मेरठ

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि विगत वर्षों की भॉति आर०जी० पी०जी० कॉलेज, मेरठ द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "सौरभ" सत्र 2023-24 अंक का प्रकाशन शीघ्र किया जा रहा है। मुझे आशा है कि "सौरभ" 2023-24 पत्रिका कॉलेज के छात्र-छात्राओं का ज्ञान वर्धन करेगी एवं उनके भविष्य के लिए मार्गदर्शक के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध करेगी। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री छात्राओं के भविष्य सृजन के लिए उपयोगी होगी।

वार्षिक पत्रिका "सौरभ" सत्र 2023-24 के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएँ।


(दीपक मीणा)

प्रो० निवेदिता कुमारी,
प्राचार्य,
आर०जी० पी०जी० कॉलेज,
वेस्टर्न कचहरी रोड,
मेरठ।





Puneet Nath
Secretary

RAGHUNATH GIRLS' POST GRADUATE COLLEGE
Western Kutchery Road, Meerut-250001

Re-Accredited 'B⁺' Grade by NAAC (CPE Status since 2006)
College of Excellence 2014

Principal - 9520886032

IQAC-CO - 9520886033

Chief Adm. - 9520886031

E-mail : rgpgcollegemrt@gmail.com

Website : <https://rgcollege.ac.in>

Facebook ID : Raghunandini Rgpg Meerut

YouTube Channel : <https://www.youtube.com/@RPGPCOLLEGE>

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ इस वर्ष 'सौरभ' पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। इस अंक में शिक्षा, साहित्य, कला एवं विज्ञान पर आधारित सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा जो छात्राओं के साथ-साथ पाठकों के लिये उपयोगी, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका 'सौरभ' का यह अंक अपने आप में अनूठा सिद्ध होगा। पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं प्राचार्या, शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को साधुवाद देता हूँ। इस प्रयास के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक-मण्डल को मेरी अनन्त शुभकामनायें।

सचिव
प्रबन्ध समिति





RAGHUNATH GIRLS' POST GRADUATE COLLEGE
Western Kutchery Road, Meerut-250001

Re-Accredited 'B⁺' Grade by NAAC (CPE Status since 2006)
College of Excellence 2014

Dr. Rahul Mithal
Joint Secretary

Principal - 9520886032

IQAC-CO - 9520886033

Chief Adm. - 9520886031

E-mail : rgpgcollegemrt@gmail.com

Website : <https://rgcollege.ac.in>

Facebook ID : Raghunandini Rgpg Meerut

YouTube Channel : <https://www.youtube.com/@RGPGCOLLEGE>

MESSAGE

Dear Principal

Prof. Nivedita Malik

I extend my heartfelt congratulations to you and the entire team on the publication of the annual magazine “**Saurabh**” at Raghunath Girls' Post Graduate College, Meerut. This magazine stands as a testament to the hard work, creativity and dedication of our students and faculty, beautifully capturing the spirit and achievements of our college community. Your leadership and guidance have been instrumental in bringing this wonderful edition to life. May “Saurabh” continue to inspire and illuminate the path for all its readers.

Warm regards,

Rahul Mithal



अनुक्रमणिका

हिन्दी विभाग

सम्पादकीय

1. न जाने क्या होगा?	– प्रो० सुनीता	2
2. दिखावे की दुनिया	– प्रो० अर्चना रानी	3
3. गौरेया	– ईशा चौधरी	4
4. तुम्हारे लिए	– स्वाति	5
5. सेना	– डॉ० शुभम त्यागी	6
6. वक्त की दरार	– तनु कुमारी	7
7. नौकरी	– प्रो० रीनू जैन	8
8. आत्मनिर्भर भारत	– प्रेम सागर	9
9. छाया और मुसाफिर	– सुनीता मुण्डेफी	10
10. 'वेदान्त' दर्शन	– विनीत मिश्रा	11
11. मन की बात	– डॉ० पूजा राजोरिया	12
12. खुद का कोसना बंद कीजिए	– डॉ० मीनाक्षी जैन	13
13. 'आत्मनिर्भर भारत का दार्शनिक आयाम'	– विनीत मिश्र	14
14. कहानी लेखन "जैसा करोगे वैसा पाओगे"	– अंजली यादव	15
15. नवीन वैश्विक संकट : ग्लोबल बॉयलिंग	– ज्योति	16
16. आर्मी	– प्रो० अनु रस्तोगी	17
17. कुछ प्रश्न?	– टीना	20
18. उम्मीद	– डॉ० पूनम लता सिंह	21
19. मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव	– कुमार नवीन	22
20. बड़प्पन	– प्रिया	23
21. नाद ब्रह्म	– प्रो० नीना बत्रा	24
22. चुनाव लोकतंत्र का आधार	– डॉ० स्वाति शर्मा	25
23. राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में दूरदर्शन का योगदान	– गुलशफा त्यागी	26
24. क्या मैं वहीं हूँ	– डॉ० सुजाता चावला	27
25. भारतीय चित्रपट संगीत	– श्रुति मिश्रा	29
26. NCC कैडेट्स का यातायात नियन्त्रण में योगदान	– रुकैया	30
27. क्रोध आने पर सोचे	– अर्पिता वर्मा	32
28. जिन्दगी की दौड़ में	– डॉ० शिवानी त्यागी	33
29. कोई तो और है	– कृ. गरिमा कुमारी	34
30. असफलता एक चुनौती	– हिना यादव	35
31. 'आत्मनिर्भर भारत'	– अंजली गुप्ता	36
32. आलू बुखारा के अनगिनत फायदे	– रानी	37
33. स्त्री शिक्षा	– श्रीमती ममता कुमारी	38
34. भारत की बेटा	– ज्योति दुबे	39
35. संगीत के क्षेत्र में शोध की संभावनाएं	– प्रो० अंजुला राजवंशी	40
	– डॉ० किरन शर्मा	41

36. तो हर्ज क्या है?	— वंशिका शर्मा	43
37. एन0 सी0 सी0 शिविर	— निक्की	44
38. एन0 सी0 सी0 जीवन	— खुशी	45
39. स्वर्ग से सुन्दर	— अनिता भारद्वाज	45
40. लघु सरिता	— मंजू सिंह	46
41. ज्यादा क्रोध मत करो	— डॉ0 शीतल पाण्डे	47
42. मुसलमान लड़की	— कुमार नवीन	48
43. थोड़ा सा प्रयास और स्वस्थ पर्यावरण	— डॉ0 शैलजा	49
44. राष्ट्रभाषा हिंदी बाधाएँ, चुनौतियाँ और समाधान	— राशि शर्मा	50
45. कुछ दोस्त	— लक्ष्मी	51
46. ग्लोबल वार्मिंग	— प्राची	52

विविध गतिविधियों की झलकियाँ

47. कला संकाय की विविध गतिविधियाँ	53
48. विज्ञान संकाय की विविध गतिविधियाँ	55
49. वाणिज्य विभाग की विविध गतिविधियाँ	57
50. शिक्षा विभाग की विविध गतिविधियाँ	58
51. शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडा विभाग की विविध गतिविधियाँ	59
52. एन0 सी0 सी0 की उपलब्धियाँ	60
53. एन0 एस0 एस0 एवं रेंजर्स की उपलब्धियाँ	61
54. महाविद्यालय में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज कराने वाली छात्रायें	62
55. महाविद्यालय में सत्र 2023–24 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रायें	63
56. महाविद्यालय के गर्व— हमारी छात्रायें	65
57. महाविद्यालय के विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ	67

संस्कृत विभाग

सम्पादकीय	— प्रो0 पूनम लखनपाल	70
58. मङ्गलम्	— अलका	72
59. वन्दना	— मनीषा सिंह	73
60. पादमी भक्ति:	— प्रो0 पूनम लखनपाल	74
61. संस्कृत भाषाया: महत्त्वं	— अनुराधा	75
62. गीतामृतम्	— निधि पाण्डेया	76
63. महामना मदनमोहन मालवीय:	— तरंग	77
64. आधुनिकयुगे संस्कृतस्योपयोगिता	— दिव्या	78
65. महाकवि: कालिदास:	— तानिया	79
66. जयतु वृक्षं जयतु वृक्षम्	— तानिया	80
67. भारतीयसन्तगीति:	— शिवाँगी चपराना	81
68. विधाधनं सर्वधनप्रधानम्	— तनीषा रोहिला	82
69. दूरदर्शनस्य लाभा: नष्टा: च, अद्भुतस्वप्नम्	— कनिका	83
70. प्रदर्शनम्	— स्वीटी	84
71. शिशुदृष्टि:	— प्रेरणा	85

72. रसनिष्पत्तिः	– अञ्जलिः	86
73. सुभाषितरत्नानि	– गरिमा	87
74. श्रीलालबहादुरशास्त्री	– मुस्कान	88
75. स्त्री शिक्षा	– सोनी जैनर	88
76. संस्कृतभाषा	– काजल	89
77. माता	– पारुल	89
78. अनुशासनम्	– मेघा त्यागी	90
79. विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्	– अंशु	91
80. जलम्	– श्वेता	91
81. अपूर्वः अतिथिः	– दीपांशी चौधरी	92
82. परिवर्तिनी काले नार्यः	– जयश्री	93
83. हास्यालाप	– मनीशा सिंह	94

ENGLISH SECTION

EDITORIAL

84. The Energetic Essence of Words	– <i>PROF. MAMTA UPADHYAY</i>	96
85. Lost in Landour	– Dr. Arti Sharma	97
86. The Symphony of the Mind: Exploring the Intersection Psychology and Music	– Ms. Chinky Upadhyaya	98
87. Second Sight	– Prof. Kumkum Pareek	99
88. Silent Messages by Plants	– Pinki	101
89. Whispers of Departure	– Reena	102
90. The Best Academic Educational Initiatives and Its Impact on Student Progression	– Anny Saifi	103
91. Echoing Wishes	– Prof. Bhawna Mittal	104
92. Art: Expression, Reflection, Innovation	– Ms. Preeti	106
93. Self-Reliant India - Throughway to Real Emancipation	– Dr. Nazima Irfan	107
94. Girls Rising: A Journey of Education	– Sonali Kataria	109
95. Geography and Sustainability: Exploring the Interconnected Path to a Greener Future	– Kareena Qamar	110
96. Self-Reliant India: A Dream Coming True	– Ms. Shail Verma	111
97. What is Yoga?	– Mrs. Vandana Agarwal	113
98. Mighty Millets: The Nutritious Grains of the Future	– Mrs. Shreya Goyal	114
99. Follow Right One	– Ms. Anvita Mishra	115
100. Life and Death	– Isha Chaudhary	116
101. LGBTQ (Gay Marriage, Equal Rights)	– Reena	117
101. Role of Women in Nation Building	– Anjali	118
102. Women Empowerment: Winds of Change	– Sabiya M Ansari	119
103. Mother	– Ms. Shruti Gupta	120
104. Creativity and Innovation	– Reena	121
	– Ankita Yadav	122

105. Mastering Lifestyle Management: A Guide to Balanced Living	– Mrs. Himani Vishnoi	123
106. Childhood Memories	– Ms. Guari Shani	125
107. Narrowing the Dream Gap: Empowering the Aspirations of Indian Women	– Ms. Anandita Dass	126
108. New Beginning- The College Experience	– Ms. Poonima Singh	128
109. Friendship	– Sakshi Ahlawat	129
110. Celebrating Incredible Science	– Anushka Sharma	130
111. Everyone Deserves a Second Chance...	– Ms. Aditi Kaushik	131
112. Silent Shadows: A Queen's Lament	– Ms. Anandita Dass	134
113. Nature's Harmony	– Isha Chaudhary	135
114. In Democracy	– Prof. Lavi Azad, Renu Jain	136

महाविद्यालय की विभिन्न झलकियाँ

115. महाविद्यालय में NAAC टीम के आगमन की झलकियाँ		137
116. मोबाईल एवं टेबलेट वितरण समारोह		138
117. College Faculty Members		139
118. Department in Changer & Coordinators		140
119. Professor of College		140
120. Self - Finance Faculty Members		141
121. IQAC Members		141
122. R.G. PG Innovation Cell		142
123. Faculty of Education		142
124. Faculty of Commerce		143
125. Time-Table & Admission Committee		143
126. College-O-Scope, 'SAURABH' Magazine Committee		144
127. Proctorial Board Committee		144
128. Media Cell Committee		145
129. College Staff Club Members		145
130. Library Staff		146
131. Office Staff		146
132. Lab Assistants Staff		147
133. Class IV Employees		147
134. महाविद्यालय से सेवानिवृत्त साथी बहनों		148



हिन्दी विभाग

सम्पादकीय

साहित्य समाज की अमूल्य धरोहर हैं सामाजिक संवेदनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों एवं मानवीय चिंतन को पीढ़ी दर पीढ़ी साहित्य ही हस्तान्तरित करता है। किसी भी घटना से उपजे मनोभावों को शब्दबद्ध करने के आरंभिक प्रयास ही कालान्तर में प्रख्यात साहित्यकारों को जन्म देते हैं।



महाविद्यालय की प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'सौरभ' भी भावी रचनाकारों के लिए आरंभिक जमीन प्रदान करती है। आज का जीवन निरन्तर आन्तरिक एवं ब्राह्म्य द्वन्द्व, कुंठा, आकुलता, अति लालसा एवं महत्वाकांक्षाओं से घिरता जा रहा है। जिससे उपजी क्षणिक आशा और क्षणिक निराशा हृदय को उद्वेलित करती रहती है। सौरभ पत्रिका का यह अंक छात्राओं के हृदय की इन्हीं स्वाभाविक भावनाओं का दर्पण है।

साहित्य कला, विज्ञान एवं वाणिज्य का अद्भुत संगम यह पत्रिका छात्राओं के मौलिक प्रयासों को लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत है आशा है यह अंक आपको अवश्य प्रभावित करेगा। आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रो० सुनीता

(प्रभारी, हिन्दी विभाग)

न जाने क्या होगा?

भ्रम की काली रात में जब
जब कैनवास पर रंग बिखरेंगे
सितारे तब नभ से पूछेंगे
उस पार न जाने क्या होगा।

भव के मायाजाल को तोड़
महासागर जब मैं पार करूँगी
जल के जन्तु तब पूछेंगे
उस पार न जाने क्या होगा।

नये जग का जब सृजन होगा
भावनाओं को नव रूप मिलेगा
मानव-आत्मा पुकार उठेगी
इस पार की भव्य सृष्टि देखकर।



प्रो० अर्चना रानी
(प्रभारी, ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग)

दिखावे की दुनिया

दिखावे की दुनियादारी को ही हम सार समझ बैठे हैं,
मोह माया और जरूरतों को ही प्यार समझ बैठे हैं।
मन का कुछ बिना मेहनत भी हासिल हो जाए तो उसे जीत समझ लेते हैं,
कोशिश विफल हो जाने पर उसे हार समझ बैठें हैं।
दौलत ने सबको गुलाम बना रखा है,
प्यार और भावनाओं को आज व्यापार समझ बैठे हैं।
छल से पाई गई शांति और खुशी का ही राज है,
संस्कारों में रहकर सच को तो आज बेकार समझ बैठे हैं।
इंसानियत बिना जीना एक ट्रेंड है,
इंसान की तरह बर्ताव करने पर तो आज बीमार समझ बैठे हैं।
खोखला कर दिया जिसने सबकी परवरिश और सम्मान को,
उन्हें ही आज हम अपना किरदार समझ बैठें हैं।
क्या बताएं इस जहान की फितरत,
कड़वे को दुश्मन और मीठे ठगों को पहरेदार समझ बैठें हैं।

ईशा चौधरी
(बी.एड. प्रथम वर्ष)



गौरैया

सच, कितनी जानी-पहचानी थी तुम।
हमारे बचपन की प्यारी-सी कहानी थी तुम
कभी फोटो के पीछे तुम्हारे लाये तिनके देख
बहुत ही खुश हो जाया करते थे।
कभी बिजली के मीटर पर, घोंसला देख
कितना डर जाया करते थे।
माँ चावल बीनती और तुम डाले गये दानों को
चोंच से तोड़-तोड़ कर खाती जाती थी
और कभी-कभी कैसे तुम
घर के भीतर बन्द हो जाती थी।
तुम्हें यहाँ-वहाँ उड़ता देख,
हम कितने खुश हो जाते थे,
अरे बुद्धू दरवाजा तो खुला है—
कहकर निकलने का रास्ता समझाते थे।
फिर सादगी जब शोर-शराबे से जुड़ गई
बचपन की तरह तुम भी फुर्र - से उड़ गई
अरसे से नहीं देखा, याद आने लगी हो तुम
एक बार फिर, चोंच में तिनके लिये
बचपन की मीठी यादों की तरह
मेरे छोटे से घर में फिर से,
लौट आओ न गौरैया ।



स्वाति
(बी.एड. प्रथम वर्ष)

तुम्हारे लिए

तुम्हारे लिए

हर आँख रो रही है।

लब है खामोश

मन में मचा है द्वंद

तुम्हारे लिए।

हर माँ चिंतित है।

बेटी कैसे हो सुरक्षित ?

कौन करेगा उसे रक्षित ?

तुम्हारे लिए।

पिता हो रहे हैं लाचार

कहाँ छिपाएं बेटी ?

सीना ताने खड़ा है।

हर कदम पर अत्याचार/दुराचार

तुम्हारे लिए।

भाई बेबस है आज

दरिंदों के दल के आगे

अकेला कैसे बचाए ?

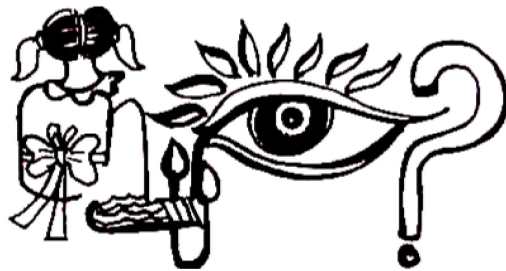
राखी के धागों की लाज

तुम्हारे लिए।

संविधान में संशोधन/परिवर्तन

कड़ाई से पालन चाक चौबंद व्यवस्था कब होगी ?

तुम्हारे लिए।



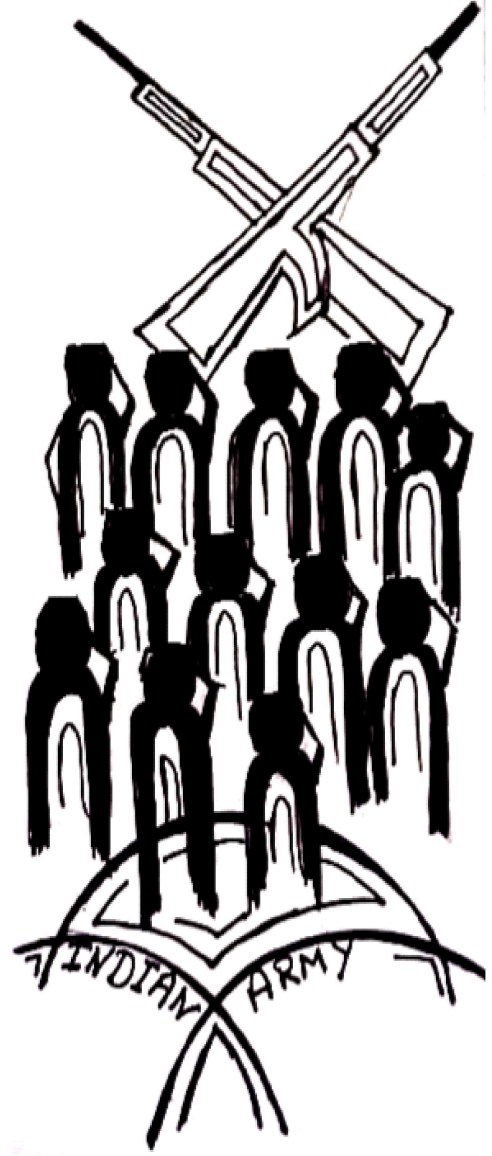
डॉ. शुभम त्यागी

असिस्टेंट प्रोफेसर

(बी.एड. विभाग)

सेना

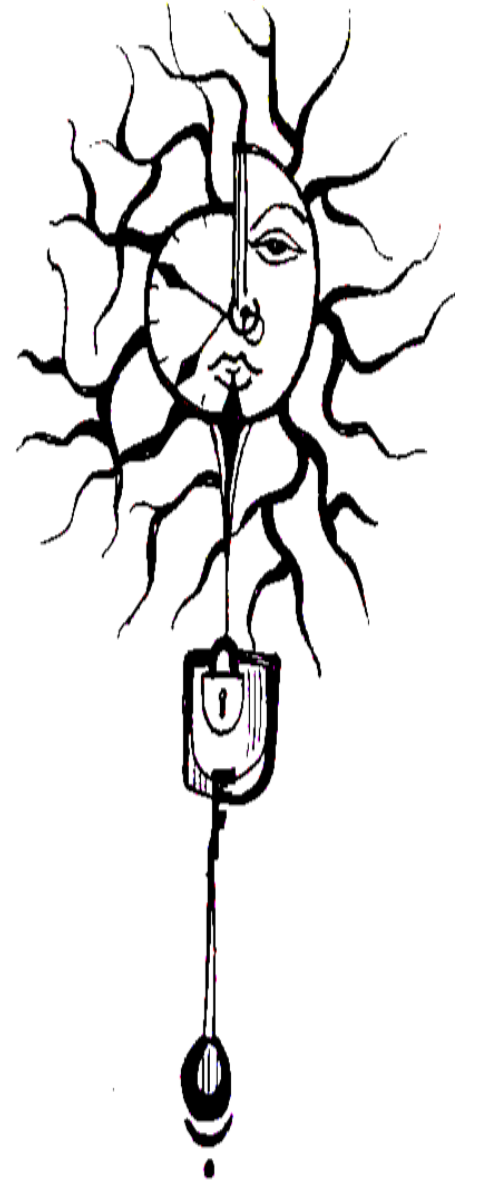
हे वीर शहीदों नमस्कार
तुम स्वतन्त्रता के महोच्चार
तुमसे ज्योतित है राष्ट्र प्रेम
तुमसे माटी का अमर प्यार
हे वीर शहीदों नमस्कार
तेरे बलिदानी की ज्वाला
जगा रही माता का प्यार
सुनकर शत्रु है भय क्रान्त
सिंहो सी तेरी है हुंकार
हे वीर शहीदों नमस्कार
शौर्य पूर्ण गाथाएँ तेरी
जिसमें शस्त्रों की झंकार
सोना-चाँदी नही चाह में
केवल भारत माँ का प्यार
हे वीर शहीदों नमस्कार
मेरे सपनों के भारत में
तेरे प्राणों की रक्तधार
प्रेरित करती तन को, मन को
ले जन्म इसी में बार-बार
हे वीर शहीदों नमस्कार
हम नहीं भूल पायेंगे तुमको
तुम हो देश का मान
वीर सुपुत्र हो तुम भारत माता के
हे वीर शहीदों तुम्हें बार-बार नमस्कार।



तनु कुमारी
(बी.ए. द्वितीय सत्र)

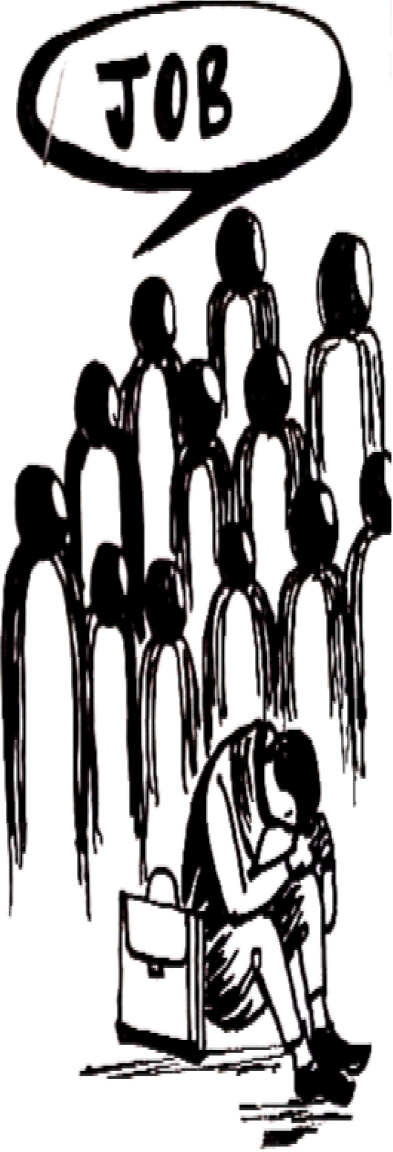
वक्त की दरार

चिलचिलाती धूप में
गर्म रेतीली जमीन पर
हम बरसों खड़े रहे
जैसे हमारी जुबाँ ही न थी
नहीं, जुबाँ तो थी
लेकिन उसपे ताला लगा था
और हाँ, अब तो
छूट है साये में
खड़े होने की
मगर सवाल है
कि आवारा बादलों के
छोटे-छोटे टुकड़े
बहुत कम है
और हम,
इतने ज्यादा कि
हमारे भार से
ये रेगिस्तान भी दब रहा है।
मुझे डर है कि कहीं
वक्त की दरारों में
हम खो न जायें
और हमारी कहानी
हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के
खण्डहरों की तरह
किसी तलहटी में न दब जाये ।



प्रो. रीनू जैन
अध्यक्ष, (इतिहास विभाग)

नौकरी



बड़ी हसीन होगी तू ऐ नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं,
सुख-चैन खोकर, चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते है,
दिन में तहारी और रात को मैगी
आधे पेट ही खाके तेरा नाम जपते है।
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
अंजान शहर में छोटा, सस्ता रूम लेके,
किचन-बेडरूम सब उसी में सहेज के,
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप और
दोस्तों से दूर रहते हैं।
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
राशन की गठरी सिर पर उढाये,
अपनी मायूसी और मजबूरियाँ खुद ही
छुपाये खचाखच भरी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके सफर करते हैं,
सारे युवा आज तुमने ही मरते हैं।
इन्टरनेट अखबारों में तुझकों तलाशते,
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएं पढते-पढते
बत्तीस बसन्त देख चुके अभी कुँवारे फिरते हैं,
तू कितनी हसीन है नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।

प्रेम सागर
शोधार्थी
(समाजशास्त्र विभाग)

आत्मनिर्भर भारत

आत्मनिर्भर भारत! सुनकर ही ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम खुद ही खुद के लिए कुछ बड़ा करने वाले हों, परंतु मुद्दा यह है कि कैसे बनेगा आत्मनिर्भर भारत? क्या देश में बढ़ते भ्रष्टाचार से या फिर दिनों-दिन बढ़ते हुए ऐसे अश्लील कार्यों से, आत्मनिर्भर कोई भी देश इस प्रकार नहीं बन सकता। आत्मनिर्भर का अर्थ है— स्वयं पर निर्भर होना और जहाँ आत्मनिर्भर भारत की बात आती है तो हम तभी आत्मनिर्भर भारत की नींव रख सकते हैं जब देश का हर व्यक्ति आत्मनिर्भर बने, आज हर जगह आत्मनिर्भर भारत बनाने की बात हो रही है परंतु क्या सच देश आत्मनिर्भर बन रहा है या फिर यह केवल एक भाषण का विषय मात्र बन चुका है। आज भारत के प्रधानमंत्री (माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी) भी भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात कर रहे हैं आत्मनिर्भर भारत को बनाने से पहले हमें अपने क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाना होगा। उसके बाद राज्य आत्मनिर्भर होगा, फिर देश का आत्मनिर्भर होना तय है। जिस प्रकार देश को बनाने से पहले कोई राज्यों का निर्माण किया जाता है तब उन छोटे-छोटे राज्यों से देश बनता है उसी प्रकार भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सर्वप्रथम राज्यों को आत्मनिर्भर करना पड़ेगा। जिससे हमारा देश भारत भी आत्मनिर्भर बन सके, और भारत का परचम पूरे विश्व में लहराए।

सुनीता मुण्डेफी
(बी.ए. द्वितीय सत्र)



छाया और मुसाफिर

तुम छाया हो, मैं मुसाफिर हूँ
हमारा मिलन बस, कुछ क्षण का है
मंजिल की राहों में, चलते-चलते
अक्सर किसी पेड़ की छांव में
सुस्ताने के वास्ते बैठ जाता हूँ।
छाया मुझसे कहती है, छोड़कर मत जाओ
मैं छाया से कहता हूँ मेरे साथ चलो
पर हम दोनों ही मजबूर हैं क्योंकि,
जड़ छाया मेरे साथ चल नहीं सकती
गतिमान मैं छाया के साथ ठहर नहीं सकता।
बस हमारा कुछ पलों का साथ है
इन पलों में सदियों का एहसास है
तुमसे निस्वार्थ प्रेम सीखा मैंने
तुमने धूप- पानी में हमें छांव दी है
तुमने थके मुसाफिर को पनाह दी है।

विनीत मिश्रा
शोधार्थी
(हिंदी विभाग)



‘वेदान्त’ दर्शन

वेदांत दो शब्द से बना है— वेद तथा अंत अर्थात् वेदों का अंत। आरम्भ में उपनिषदों के लिए ‘वेदान्त’ शब्द का प्रयोग हुआ किन्तु बाद में उपनिषदों के सिद्धान्तों को आधार मानकर जिन विचारों का विकास हुआ, उनके लिए भी ‘वेदान्त’ शब्द का प्रयोग होने लगा।

यह विचारधारा उपनिषदों में वर्णित जीवन प्रणाली के दर्शन को स्वीकार करती है। वेदान्त ज्ञानयोग का एक स्रोत है जो व्यक्ति को ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद है जो वेदग्रंथों और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते हैं। उपनिषद् वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसीलिए इसको वेदान्त कहते हैं।

इस दर्शन के आधार पर निर्मित प्राचीनतम ग्रंथ ‘बादरायण’ द्वारा लिखित ‘ब्रह्मसूत्र’ था जिसे ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में लिखा और संकलित किया गया था। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही जीवन की वास्तविकता है, और सभी बातें मिथ्या या माया है। वेदान्त की तीन शाखाएँ जो सबसे ज्यादा जानी जाती हैं वे हैं— अद्वैत वेदान्त, विशिष्ट अद्वैत और द्वैत। आदि शंकराचार्य, रामानुज और मध्वाचार्य को क्रमशः इन तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है। 9वीं शताब्दी में उपनिषदों तथा गीता पर टीका लिखने वाले शंकराचार्य के दर्शन संबंधी परिवर्तन के कारण यह दर्शन विकसित हुआ। उनके द्वारा लाय गए परिवर्तन के फलस्वरूप अद्वैत वेदांत का विकास संभव हुआ। इस विचारधारा के एक अन्य दार्शनिक रामानुज थे जिन्होंने 12वीं शताब्दी में कृतियों की रचना की। उनके परिवर्तन के कारण वेदान्त विचारधारा में कुछ मतभेद भी उत्पन्न हुआ।

आधुनिक काल में कुछ प्रमुख वेदान्ती हुये हैं जिनमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष, स्वामी शिवानन्द और रमण महर्षि आदि उल्लेखनीय हैं। ये आधुनिक विचारक अद्वैत वेदान्त शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वेदांत ने कर्म के सिद्धांत को भी विश्वसनीयता प्रदान की। वेदांती पुनर्जन्म के सिद्धांत पर विश्वास करते थे, उनका मानना था कि व्यक्ति को अपने पिछले जन्म में किए गए कर्मों के परिणाम अगले जन्म में भुगतने पड़ते हैं। इस दर्शन के कारण कुछ लोगों का यह तर्क प्रस्तुत हुआ कि कभी-कभी उन्हें पिछले जन्म में किए गए किसी बुरे कर्म के कारण इस जन्म में कष्ट उठाना पड़ा है तथा ब्रह्म प्राप्ति के अतिरिक्त इसका अन्य कोई समाधान नहीं है।

वेदान्त की पुस्तकों पर अनेक टीकाएँ या भाष्य लिखे गये। इन पुस्तकों में तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें शामिल हैं— उपनिषद्, भगवद् गीता और ब्रह्मसूत्र, जिन्हें ‘प्रस्थानत्रयी’ कहते हैं। तदनुसार आदि शंकराचार्य, रामानुज और मध्वाचार्य ने इन तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों पर विशिष्ट रचनायें दीं। तीनों ग्रंथों में लिखित विचारों का कई तरह से व्याख्यान किया जा सकता है। इसी कारण से ब्रह्म, जीव तथा जगत् के संबंध में अनेक मत उपस्थित हुए और इस प्रकार वेदान्त के अनेक रूपों का निर्माण हुआ था।



डॉ. पूजा राजोरिया
(इतिहास विभाग)

मन की बात

हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें।
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।।

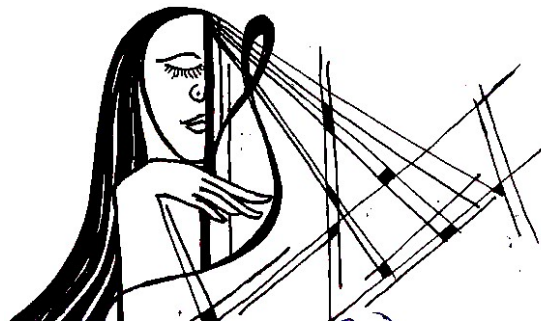
जी हाँ बच्चों में सफलता पाने के अनेक मंत्र हैं परन्तु इनमे सबसे पहला व सर्वाधिक महत्वपूर्ण मंत्र है— आत्मविश्वास यानि खुद पर विश्वास करना।

किसी ने ठीक ही कहा है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। मैं भी यही मानती हूँ कि मन से हारा हुआ व्यक्ति कोई भी संघर्ष या कार्य को करने से पहले ही हार जाता है। जबकि अपने पर भरोसा रखने वाला व्यक्ति जब दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ कार्य आरंभ करता है तो आधार कार्य पूर्ण हुआ सा लगता है उसे मार्ग की कोई रुकावट विचलित नहीं करती और न ही उसे कोई रुकावट, रुकावट लगती है। उसके सारे कष्ट व परेशानियां स्वयं ही उसका रास्ता छोड़ देते हैं और इस प्रकार उसकी विजय सुनिश्चित हो जाती है।

एक बार की बात है, एक गाँव में सूखा पड़ा। सामूहिक प्रार्थना की जा रही थी, अनेक प्रकार से इंद्र देवता को मनाया और प्रसन्न किया जा रहा था ऐसे में एक बच्चा प्रार्थना स्थल पर छाता लेकर आया उसे पूरा विश्वास था कि जब हम सब मिलकर प्रार्थना कर रहे हैं तो इसका असर अवश्य होगा, वर्षा निश्चित रूप से होगी और उसका विश्वास रंग लाया, वर्षा हुई और खूब जोर से हुई। हमारे प्रयासों में भी विश्वास की यही अलक दिखाई देनी चाहिए। आत्मविश्वास मानव में गुणों की प्रतिष्ठा करता है ऐसे महान प्रचंड शक्ति संपन्न आत्मविश्वासी मनुष्य ही समाज तथा राष्ट्र का गौरव, बल तथा उन्नति के द्वार है, सुख, शांति तथा सफलता के प्रदाता है। आत्मनिर्भरता के परिचालक तथा शौर्य शक्ति तथा समृद्धि के साधन है।

जीवन की हर उपलब्धि पर उस मानव का अधिकार है जो आत्मविश्वास रखता है। इसी विश्वास के साथ अपने प्रत्येक कर्तव्य में कार्य की ओर अपना कदम बढ़ाओ, सफलता अवश्य तुम्हारे कदम चूमेगी।

कौन कहता है आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता है,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।



डॉ. मीनाक्षी जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर
(शिक्षा विभाग)

खुद को कोसना बंद कीजिए

हम में से ज्यादातर लोग खुद की स्थिति से संतुष्ट नहीं रहते। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम दूसरों से अपनी तुलना करते हैं। मैं अपने बारे में अच्छे तरीके से जानता हूँ इसलिए अपनी ही बात यहाँ लिख रहा हूँ। मैं जब अपने ही समकक्ष लोगों को अपने से ऊँची स्थिति में देखता था तब मैं खुद को कोसने लगता था। वही परीक्षा मैंने भी दी वही उन्होंने भी, वह सफल हो गए मैं क्यों नहीं? धीरे-धीरे जब समझ आई तब इसका सही-सही उत्तर भी मिला। सफलता और असफलता बहुत कुछ परिस्थिति और माहौल पर निर्भर करते हैं। मैंने जिससे भी अपनी तुलना की पाया की उन सभी के परिवार में उन्हें अनुकूल माहौल मिला। किसी के पिताजी यदि प्रोफेसर हैं और उनके बच्चे भी प्रोफेसर बन जाएँ तो यह कोई बड़ी बात नहीं हुई क्योंकि आर्थिक और सामाजिक दोनों माहौल बच्चे के अनुकूल रहे हैं। हाँ यदि किस प्रोफेसर के बच्चे ओलंपिक में मेडल ले आएँ या किसी स्पोर्ट में चले जाएँ या संगीत अथवा कला में अपना करियर बनाएँ तो यह बड़ी बात हो जाएगी क्योंकि यह उनके पारिवारिक माहौल के बिल्कुल विपरीत था। यदि प्रोफेसर के बच्चे प्रोफेसर, इंजीनियर के बच्चे इंजीनियर, डॉक्टर के बच्चे डॉक्टर और एक्टर के बच्चे एक्टर आदि बन भी जाए तो यह कोई बड़ी बात न हुई।

अब आता हूँ अपनी और अपने जैसे कई लोगों की कहानी पर। माँ पाँचवीं दर्जा तक पढ़ी बमुश्किल हस्ताक्षर कर लेती हैं, शुद्ध रूप से गृहणी हैं। पिताजी 12वीं फेल कुछ दिन सूरत में प्राइवेट सेक्टर में काम किया, अब गाँव में खेती-किसानी करते हैं। इनसे जन्मा मैं एक साधारण-सी बुद्धि लेकर, लेकिन आज जहाँ हूँ वहाँ ऐसे साधारण लोग बहुत कम पहुँच पाते हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आया हूँ, जहाँ सिर्फ यह फिक्र रहती है कि अपने और अपने कुटुंब की देख लो दुनिया भर की बात मत करो। दसवीं के बाद न ही प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई की न ही कोई ट्यूशन लिया। खुद से ही पढ़ाई की अध्यापक ने जो पढ़ाया वही सबसे सही। तब से आज तक (पीएच.डी. तक) का सफर सरकारी संस्थानों में ही छान मारे। एम.ए. में कॉलेज टॉपर रहा, उसके बाद बी. एड. में गवर्नमेंट सीट मिली तब विश्वास हुआ कि अब हम भी कुछ करने लायक हो गए। जिंदगी तब तक सामाजिक और आर्थिक दोनों तरफ से खस्ताहाल ही रही। हम जिस पृष्ठभूमि से आए हैं वहाँ आसपास चार-पाँच गाँव में या यँ कहें 20-25 किलोमीटर के दायरे में एक भी इंसान पीएच. डी. नहीं किए हैं। जिससे मैं अपनी तुलना कर रहा था उनकी पृष्ठभूमि में हर दूसरे घर में पीएच.डी. मिल जाएंगे। कहीं से भी खुद से यह तुलना कभी बनती नहीं थी और तुलना भी की तो उनके आर्थिक स्तर की। मानसिक और संवेगात्मक स्तर पर शायद वह मुझसे बहुत पीछे ही हैं। न तो मुझे वैसा कभी माहौल मिला न मेरे पिताजी किसी उच्च सरकारी पद पर थे। अब जब खुद को पहचानता हूँ तो पाता हूँ कि उनसे आगे जाऊँगा और बहुत आगे जाऊँगा। अब मैंने खुद को कोसना बंद कर दिया। आप भी खुद को मत कोसिए। आप जहाँ भी हैं जैसे भी हैं अपने समय का सही कर्मों में प्रयोग कीजिए यकीनन सफलता मिलेगी। जब भी आप अपनी तुलना किसी से करते हैं तब परमात्मा के बनाए पर उंगली उठाते हैं क्योंकि वह कभी एक जैसी कृति नहीं बनाता। किसी किसान के, मजदूर के, मछुआरे के और कुम्हार आदि कारीगरों के बच्चे जब डॉक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, क्रिकेटर, या एक्टर आदि बनते हैं तो यह गौरव की बात है क्योंकि इन्हें कभी अनुकूल वातावरण नहीं मिलता यह सब कुछ अपने अनुकूल बनाते हैं। बाकी सभी स्थितियाँ हमेशा साधारण ही रही हैं।

विनीत मिश्र

शोधार्थी

(हिंदी विभाग)

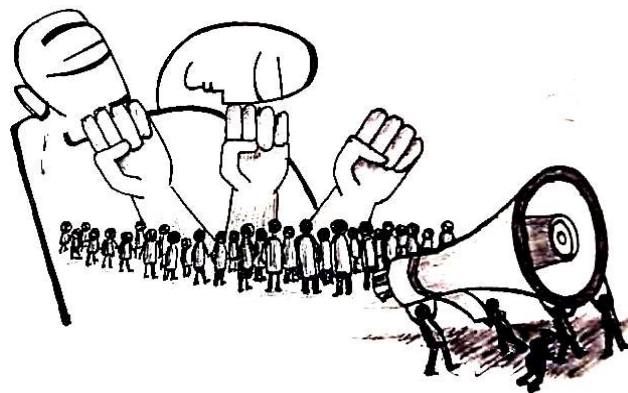


आत्मनिर्भर भारत का दार्शनिक आयाम

आत्मनिर्भर भारत एक नए भारत का दृष्टिकोण है जो निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। आत्मनिर्भर भारत की नींव के रूप में भारतीय दार्शनिक परम्परा को देखा जा सकता है। भारतभूमि ही वह पावन स्थल है जहाँ के दार्शनिक चिन्तन का समृद्ध इतिहास सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। भारत दर्शन के क्षेत्र में सदैव से ही आत्मनिर्भर रहा है। दर्शन का उद्भव वेदों व उपनिषदों से माना जाता है। इनमें विभिन्न दर्शन आते हैं जिसके अन्तर्गत सांख्य- योग, न्याय- वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत आदि आते हैं। इस परम्परा के तीन दर्शन कहे जाते हैं यहां न केवल आस्तिक अपितु नास्तिक दर्शनों का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। और इनका समृद्ध विशाल साहित्य भी उपलब्ध है। भारतीय दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय मोक्ष की प्राप्ति रहा है। मोक्ष अर्थात् समस्त प्रकार के दुःखों की आत्यान्तिक व शाश्वत निवृत्ति। मोक्ष प्राप्ति हेतु सभी आस्तिक व नास्तिक दर्शनों में एक विशिष्ट प्रकार की साधना पद्धति विकसित की गई है जिनका पालन कर प्रत्येक व्यक्ति दुःखों से छुटकारा पाकर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। ध्यातव्य है कि भारतीय दर्शन में आस्तिक व नास्तिक के विभाजन का आधार ईश्वर को न मानकर वेदों को माना गया है। वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने वाले दर्शन यथा- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत आदि आस्तिक तथा वेदों की प्रामाणिकता की स्वीकार न करने वाले दर्शन यथा- चार्वाक, जैन व बौद्ध नास्तिक दर्शन की कोटि में रखे जाते हैं। भारतीय दार्शनिक परम्परा के अन्तर्गत हम इन दोनों ही कोटियों का अध्ययन करते हैं जो भारत के एक अन्य दृष्टिकोण की दिखाता है जिससे इसका आलोचनात्मक चिंतन भी पुष्पित व पल्लवित होता है।

इसी प्रकार बहिष्कार के साथ अविष्कार की नीति को अपनाना ही वर्तमान समय में आत्मनिर्भर भारत के प्रसंग में अत्यन्त आवश्यक है। भारत प्रारम्भ से ही साधन सम्पन्न व ज्ञान सम्पन्न रहा है आवश्यकता है ती मात्र इस बात की कि इस सुसमृद्ध अमूल्य पूँजी को आगे लाना है और ये सभी पक्ष आत्मनिर्भरता में अनुस्यूत है। इसके मुख्यतः दो पक्ष हैं- सैद्धांतिक व व्यवहारिक। दर्शन इसके सैद्धांतिक पक्ष का विश्लेषण प्रस्तुत करने का कार्य करता है यह आत्मनिर्भर भारत का आर्थिक पक्ष नहीं है, वरन, यहाँ भारत के आत्मगौरव का पक्ष भी जुड़ा हुआ है। आत्म निर्भर होने का यह तात्पर्य नहीं कि हम आत्मकेन्द्रित हो जाए, अपितु इसका अर्थ यह है कि यह एक आत्म गौरव की भावना है जो हमें समाज के लोगों की, विश्व के अन्य लोगों की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। सारांशतः यह कहा जा सकता है कि आत्मनिर्भरता की जो अवधारणा है उसके पीछे सांस्कृतिक पक्ष और आर्थिक पक्ष दोनों के समेकित रूप को देखते हुए इसकी एक सर्वांगीण संकल्पना को विकसित करने की आवश्यकता।

अंजली यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
(दर्शनशास्त्र विभाग)



कहानी लेखन “जैसा करोगे वैसा पाओगे”

एक औरत की दृष्टि अचानक चली गई और वह अंधी हो गई। वह औरत बहुत धनी थी और अकेली ही रहती थी। उसके घर में कीमती फर्नीचर था। दूसरी भी बहुत सी कीमती चीजें थी। उस औरत ने आंखों के इलाज के लिए डॉक्टर को घर बुलाया। उसने यह शर्त रखी कि आंखें अच्छी होने पर ही वह डॉक्टर को पूरी फीस देगी। डॉक्टर ने शर्त मान ली।

डॉक्टर प्रतिदिन उस औरत के घर इलाज करने के लिए आने लगा। जाते समय वह उसके घर से कोई ना कोई कीमती चीज उठाकर ले जाता था। वह सोचता था कि औरत को कुछ दिखाई तो देता नहीं उसे चोरी का पता कैसे चलेगा। इस तरह उसने अंधी औरत के घर से कई कीमती चीजें गायब कर दी। धीरे-धीरे औरत की आंखें अच्छी होने लगी।

डॉक्टर की चोरी का उसे पता चल गया। फिर भी वह चुप रही। आखिर औरत की आंखें बिल्कुल अच्छी हो गई डॉक्टर ने उसे अपनी फीस माँगी औरत ने फीस देने से इनकार कर दिया। डॉक्टर ने अदालत में औरत के खिलाफ शिकायत दर्ज की। न्यायाधीश ने औरत से कहा अब तो तुम इस डॉक्टर के इलाज से देख सकती हो। तुम्हें इसकी फीस चुका देनी चाहिए। औरत ने कहा, “यदि मैं देख सकती हूँ, तो मुझे अपने घर का सारा फर्नीचर और कीमती चीजे क्यों दिखाई नहीं देती?”

न्यायाधीश सारा मामला समझ गए। उन्होंने डॉक्टर से कहा। तुमने इस औरत के घर से जो-जो चीजें चुराई है, उन्हें लौटा दो। तुमने इसके अंधेपन का जो इलाज किया है, उसके लिए तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा। यही तुम्हारी सजा है।

बोध: किसी व्यक्ति की लाचारी का अनुचित लाभ उठाने का परिणाम बुरा होता है।



ज्योति
(बी.ए. द्वितीय वर्ष)

नवीन वैश्विक संकट: ग्लोबल बॉयलिंग

“ग्लोबल वार्मिंग” शब्द का इस्तेमाल दशकों से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण पृथ्वी के बढ़ते औसत तापमान का वर्णन करने के लिए किया जाता रहा है। लेकिन हाल ही में, एक नया शब्द सामने आया है, जो स्थिति की तात्कालिकता को दर्शाता है। ग्लोबल बॉयलिंग पृथ्वी की जलवायु की अप्रत्याशित प्रकृति के बने रहने के कारण, जलवायु अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान एक उल्लेखनीय परिवर्तन से गुजरा है, जो ग्लोबल वार्मिंग की पारंपरिक धारणा से हटकर एक अधिक विचलित करने वाली घटना की ओर स्थानांतरित हो गया है जिसे आमतौर पर “ग्लोबल बॉयलिंग” कहा जाता है। वर्तमान लेख वैज्ञानिक साक्ष्य को स्पष्ट करने का प्रयास करता है जो जलवायु पैटर्न में एक स्पष्ट परिवर्तन को दर्शाता है, विशेष रूप से अत्यधिक गर्मी की घटनाओं के बढ़ने की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। इसके साथ ही उन विभिन्न कारकों पर गहराई से विचार करना आवश्यक हो गया है जिन्होंने इस पर्यावरणीय परिवर्तन को बढ़ावा देने में योगदान किया है।

ग्लोबल वार्मिंग:— ग्लोबल वार्मिंग की घटना, जो मुख्य रूप से पृथ्वी के वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4) और विभिन्न अन्य ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण होती है, जिसके परिणामस्वरूप कई व्यापक रूप से प्रलेखित परिणाम सामने आए हैं, जिनमें समुद्र का ऊंचा स्तर, हीटवेव की बढ़ती घटना और वर्षा के वितरण में परिवर्तन शामिल हैं। ग्लोबल वार्मिंग के विषय ने काफी समय से जलवायु विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है, जिसमें मानवजनित क्रियाओं, मुख्य रूप से ग्रीनहाउस गैसों की उत्सर्जन के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में पृथ्वी की औसत सतह के तापमान में प्रगतिशील वृद्धि हुई है। पृथ्वी की जलवायु और मानव गतिविधि के बीच जटिल संबंध वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं और समाज के लिए बहुत रुचि का विषय रहा है। कई दशकों के दौरान, जलवायु परिवर्तन से संबंधित संवाद ज्यादातर ग्लोबल वार्मिंग की भयावह अवधारणा के इर्द-गिर्द केंद्रित रहे हैं, जो वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ने वाली मानवीय गतिविधियों का एक निर्विवाद परिणाम है। फिर भी, जैसे-जैसे मानवता इक्कीसवीं सदी के अज्ञात क्षेत्रों से गुजर रही है, नई-नई गंभीर घटनाएँ सामने आई हैं, जो हमारी समझ व जागरूकता पर अपना प्रभाव डाल रही है, जिसे ग्लोबल बॉयलिंग का युग कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह घटना जलवायु पैटर्न में होने वाले अधिक तीव्र दर के प्रमाण के रूप में कार्य करती हैं, जो क्रमिक वार्मिंग की पारंपरिक समझ से परे हैं। ग्लोबल वार्मिंग का मुद्दा एक प्रमुख चिंता का विषय बना हुआ है, और यह अब एक आसन्न और जरूरी खतरे के साथ है एक ऐसा भविष्य है। जो अभूतपूर्व और तीव्र गर्मी की घटनाओं से विहित है।

ग्लोबल वार्मिंग से ग्लोबल बॉयलिंग में बदलाव एक ऐसे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें पृथ्वी न केवल औसत तापमान में वृद्धि का अनुभव करती है, बल्कि हीटवेव की बढ़ती घटना और भी गंभीर हो जाती है, जो हमारे पारिस्थितिकी तंत्र, समाज और अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ पेश करती हैं। समकालीन अवधि में, तापमान के रिकॉर्ड लगातार टूट रहे हैं, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि और पृथ्वी की जलवायु प्रणाली के अंदर संचालित विभिन्न प्रक्रियाएँ, दोनों ही इस आसन्न घटना के जटिल ढांचे को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन संस्थान के अनुसार औसत ग्लोबल वायु तापमान 1979 से 2000 तक $16.25^\circ C$ से बढ़कर 25 जुलाई 2023 को $17.14^\circ C$ हो गया है। 2023 की चिलचिलाती गर्मी एक कठोर अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है। वर्ष 2023 का जुलाई अब तक का सबसे गर्म महीना बन गया, जिसने तापमान के रिकॉर्ड तोड़ दिए और विनाशकारी जंगल की आग को बढ़ावा दिया। यह घटना, समुद्र के बढ़ते स्तर, पिघलते ग्लेशियरों और अनियमित मौसम पैटर्न के साथ, हमारे ग्रह के भविष्य की एक गंभीर तस्वीर पेश करती है।

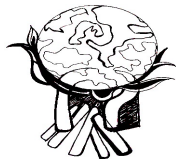
ग्लोबल बॉयलिंग क्रमिक वार्मिंग से परे एक बदलाव को दर्शाता है। यह रिकॉर्ड तोड़ने वाली हीटवेव, तीव्र मौसम की घटनाओं और पर्यावरणीय व्यवधान को तेज करने वाली दुनिया को दर्शाता है। जबकि पृथ्वी का औसत तापमान उबलने के स्तर पर (100 डिग्री सेल्सियस पर) नहीं हो सकता है, परंतु स्थिति की तात्कालिकता अधिक प्रभावशाली शब्द की मांग करती है। ग्लोबल बॉयलिंग सिर्फ तापमान के बारे में नहीं है अपितु यह हमारे ग्रह पर होने वाले प्रभावों के बारे में है। हालांकि स्थिति भयावह है, फिर भी उम्मीद है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में बदलाव करके, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करके और साधारणीय प्रथाओं को लागू करने जैसे उपाय अपनाकर हम इसे सुरक्षित स्तर पर ला सकते हैं। वर्तमान में अनियंत्रित जलवायु परिवर्तन का परिणाम ग्लोबल बॉयलिंग के रूप में हमें इस प्रकार प्रभावित कर रहा है:—

1. **चरम मौसम की घटनाएँ:**— ग्लोबल बॉयलिंग मौसम के पैटर्न को अस्त-व्यस्त कर देता है। गर्मी की लहरें अधिक बार और गंभीर हो जाती हैं, जिससे तापमान मानव सहनशीलता से परे हो जाता है। हमने हाल के वर्षों में पहले ही रिकॉर्ड तोड़ गर्मी देखी है, जिससे जंगल में आग, सूखा और बुनियादी ढाँचे की विफलताएँ हुई हैं। इसके विपरीत, बाढ़ जैसी अत्यधिक वर्षा की घटनाएँ अधिक आम हो जाती हैं, जिससे आबादी विस्थापित होती है और कृषि बाधित होती है।
2. **स्वास्थ्य जोखिम:**— मानव शरीर में तापमान को नियंत्रित करने की सीमित क्षमता होती है। बढ़ती गर्मी की लहरें हार्टस्ट्रोक, निर्जलीकरण, हृदय और श्वसन संबंधी समस्याओं को बढ़ाती हैं। बढ़ता तापमान रोग फैलाने वाले जीवाणु, विषाणु और रोगाणु के लिए आदर्श प्रजनन स्थल भी बन सकता है, जिससे मलेरिया और डेंगू बुखार जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।
3. **खाद्य सुरक्षा:**— कृषि पूर्वानुमानित मौसम पैटर्न पर अत्यधिक निर्भर हैं। सूखे और बाढ़ से फसल की पैदावार बाधित होती है, जिससे खाद्यान्न की कमी और कीमतों में बढ़ोतरी होती है। बढ़ते तापमान से फसलों की पोषण गुणवत्ता भी प्रभावित होती है, जिससे ग्लोबल खाद्य सुरक्षा को खतरा होता है।
4. **पानी की कमी:**— ग्लोबल बॉयलिंग से वाष्पीकरण दर तेज हो जाती है, जिससे परिदृश्य शुष्क हो जाते हैं। और जल संसाधन समाप्त हो जाते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण बढ़ती माँग के साथ यह पानी की कमी पैदा करता है। पानी की कमी न केवल पीने के पानी को प्रभावित करती है बल्कि स्वच्छता प्रणालियों और औद्योगिक प्रक्रियाओं को भी बाधित करती है।
5. **सामाजिक व्यवधान:**— चरम मौसम, खाद्य असुरक्षा और पानी की कमी के संयुक्त प्रभाव बड़े पैमाने पर विस्थापन और सामाजिक अशांति को ट्रिगर कर सकते हैं। घटते संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा संघर्षों को जन्म दे सकती है, जबकि चरम मौसम की घटनाएँ बुनियादी ढाँचे को तबाह कर सकती हैं और अर्थव्यवस्थाओं को बाधित कर सकती हैं।
6. **मानसिक स्वास्थ्य:**— ग्लोबल बॉयलिंग के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को कम करके नहीं आँका जाना चाहिए। पर्यावरण विनाश, विस्थापन और अनिश्चित भविष्य को देखना चिंता, अवसाद और पर्यावरण शोक का कारण बन सकता है।
7. **विस्थापन:**— यह देखा गया है कि समुद्र का बढ़ता स्तर और चरम मौसम की घटनाएँ लोगों को अपने घरों से बाहर निकलने के लिए मजबूर करेंगी, जिससे शरणार्थी संकट पैदा होगा।
8. **अर्थव्यवस्था:**— कृषि में व्यवधान उत्पन्न करने के साथ ही साथ चरम तापमान से बुनियादी ढाँचे को नुकसान होता है। इससे भोजन और पानी की लागत में भी वृद्धि हो जाती है, जिससे अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ जाता है।
9. **समुद्री जीवन पर असर:**— ग्लोबल बॉयलिंग के कारण समुद्री जीवन को नुकसान पहुँचाने के साथ ही साथ खाद्य शृंखला भी बाधित हुई है, समुद्र का जल स्तर लगातार बढ़ता जा रहा है, जिससे तटवर्ती क्षेत्रों के जलमग्न होने का खतरा मंडरा रहा है।

ग्लोबल बॉयलिंग एक जटिल मुद्दा है, लेकिन यह असंभव नहीं है। हमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में निवेश करने और अनुकूलन रणनीतियों को विकसित करने के लिए वैश्विक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। हम ग्लोबल बॉयलिंग के सबसे बुरे प्रभावों को कम कर सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और हमारे ग्रह के लिए एक साधारणीय भविष्य की ओर तेजी से बदलाव का आग्रह किया जाना अपेक्षित है। यद्यपि पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण भविष्य कठिन लग सकता है परंतु यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि हम जो भी कार्रवाई करते हैं, व्यक्तिगत विकल्पों से लेकर बड़े पैमाने पर नीतिगत बदलावों तक, मानवता के लिए अधिक टिकाऊ भविष्य को आकार देने में योगदान देता है। हमें अग्रलिखित पहलुओं पर कार्य करने की आवश्यकता है –

- 1. तेजी से उत्सर्जन में कमी:**— यह किसी भी समाधान की आधारशिला है। हमें जीवाश्म ईंधन से दूर और सौर, पवन और भूतापीय ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर तेजी से संक्रमण की आवश्यकता है। संस्कारों और उद्योगों को इन प्रौद्योगिकियों में भारी निवेश करना चाहिए और उनके अपनाने को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- 2. ऊर्जा दक्षता:**— हमारी समग्र ऊर्जा खपत को कम करने से जीवाश्म ईंधन की मांग कम हो जाती है। इसे बेहतर बिल्डिंग कोड, ऊर्जा-कुशल उपकरणों और स्मार्ट शहरी नियोजन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो चलने योग्य समुदायों और टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देता है।
- 3. प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना:**— वन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें टिकाऊ वानिकी प्रथाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए। वनों की कटाई को रोकना चाहिए और पुनर्नवनीकरण प्रयासों में निवेश करना चाहिए इसी तरह, आर्द्रभूमि की रक्षा और पुनर्स्थापना बाढ़ और तटीय कटाव को कम करने में मदद कर सकती है।
- 4. व्यक्तिगत जिम्मेदारी:**— यद्यपि बड़े पैमाने पर समाधान महत्वपूर्ण हैं, व्यक्तिगत कार्रवाई भी मायने रखती है। संधारणीय परिवहन विकल्पों, ऊर्जा के प्रति जागरूक जीवन और सोच-समझकर उपभोग के माध्यम से अपने कार्बन पदचिह्न को कम करना सामूहिक रूप से एक महत्वपूर्ण अंतर ला सकता है।
- 5. वैश्विक सहयोग:**— जलवायु परिवर्तन एक सीमाहीन संकट है। प्रभावी समाधानों के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। विकसित देशों को विकासशील देशों को स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन करने में सहायता करनी चाहिए और उन्हें बदलती जलवायु के अनुकूल होने में मदद करनी चाहिए।
- 6. व्यक्तिगत आदतों में परिवर्तन:**— कम ऊर्जा का उपयोग करके, कम माँस का सेवन करके और अपने दैनिक जीवन में साधारणीय प्रथाओं को अपनाकर अपने कार्बन पदचिह्न को कम करके हम वैश्विक तपन को कम करने में योगदान दे सकते हैं।
- 7. जलवायु अनुकूलन में निवेश करें:**— ऐसे बुनियादी ढाँचे का विकास करें जो चरम मौसम की घटनाओं का सामना कर सकें और समुदायों को बढ़ते समुद्र के स्तर के अनुकूल होने में मदद करें।

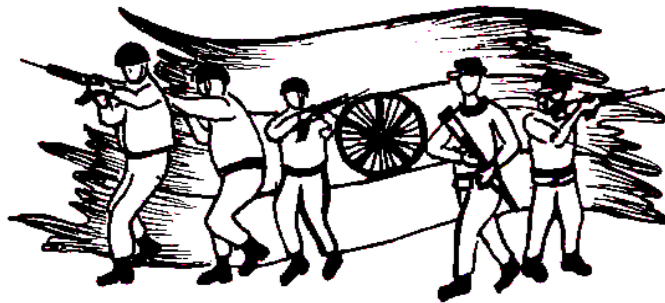
ग्लोबल बॉयलिंग एक चेतावनी है, जिसका सामना तत्काल कार्रवाई, नवाचार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का आह्वान कर के किया जा सकता है। इन सुझावों को अपनाकर और एक साधारणीय भविष्य को प्राथमिकता देकर, हम अभी भी जलवायु परिवर्तन के सबसे बुरे प्रभावों को कम कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ ग्रह सुनिश्चित कर सकते हैं। हम पारिस्थितिक तंत्र, मानव समुदायों पर संभावित प्रभावों की व्यापक जांच में लगे हुए हैं, और इन चुनौतियों को कम करने और उनके अनुकूल होने के उद्देश्य से सक्रिय उपायों की अनिवार्य आवश्यकता है।



प्रो. अनु रस्तोगी
(समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष)

आर्मी

बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों अपना फर्ज निभाना
दुश्मन की गोली से, तुम ना घबराना।
सीने पर खाकर गोली को, देश की लाज बचाना
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों, अपना फर्ज निभाना।
खेल-खेल में जीत न जाँ शत्रु, देश को इनसे बचाना।
भारत को है स्वर्ग बनाना, सब एक साथ हाथ मिलाना।
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों, अपना फर्ज निभाना।।
दुश्मन की ललकार से, तुम मत घबराना
अपने बढ़ते कदमों को, सदा सबके साथ बढ़ाना
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों, अपना फर्ज निभाना।
दुश्मन के कदमों को पीछे हटा कर राखी की लाज बचाना
वंदे मातरम् के नारे को गर्व से ऊँचा उठाना
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों अपना फर्ज निभाना।।
रख लाज बहन की राखी की, अपने कदमों को आगे बढ़ाना
दुश्मन के सीने को चीरकर, अपने देश का गर्व बढ़ाना
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों अपना फर्ज निभाना।।
फर्ज को अपना कर्म समझकर, विश्व में नाम ऊँचा उठाना
दुश्मन के सीने पर गोली वंदे मातरम् कहके चलाना
बॉर्डर पर बैठे मेरे भाइयों अपना फर्ज निभाना।।



टीना

कुछ प्रश्न ?

जिंदगी की भाग दौड़ में

भूले जा रहे हैं

कि क्यों आए

हम

बनकर मनुष्य इस धरा पर,

क्यों ना बने कोई

जानवर, पक्षी, फूल, पेड़

जब बने हैं मनुष्य

तब

क्यों नहीं कर पा रहे

आचरण,

सच्चे मनुष्य सा

गीता में बताये

कान्हा के उपदेश सा,

मर्यादापुरुषोत्तम राम सा,

क्यों नहीं जाग्रत होती

हमारी अन्तरआत्मा

क्यों नहीं पालन करते

अपने सद्कर्तव्यों का

क्यों नहीं उठ पा रहे

अपने में 'के मायाजाल से

क्यों नहीं छोड़ा जा रहा

अपना अहंकार,

क्यों नहीं है हमारे भीतर

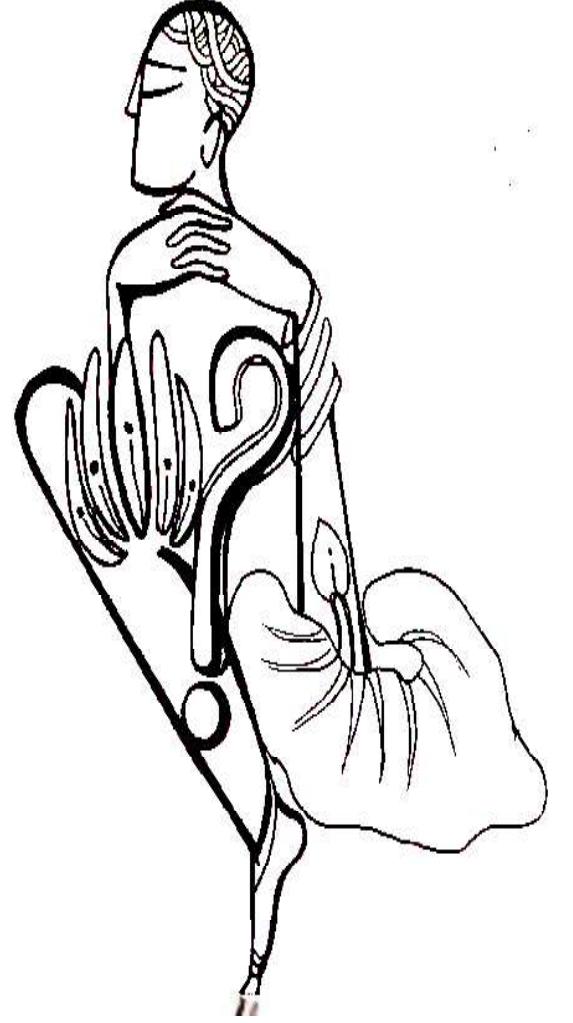
समानुभूति

क्यों नहीं उतार पा रहे

अनेक आवरण

जिन्होंने ढक ली है

हमारी अन्तरआत्मा ।



डॉ. पूनम लता सिंह

सहायक आचार्य

(चित्रकला विभाग)

उम्मीद

किस विषय पर लेख लिखा जाए, मन में विचारों की प्रतिक्रिया शुरू हुई। मैंने उसी समय सोचना शुरू किया। सोचते सोचते दो दिन निकल गए। मगर कोई अच्छा सा शीर्षक नहीं मिल रहा था। जिस पर मैं लेख लिख सकूँ। फिर एकाएक मेरे दिमाग में 'उम्मीद' शब्द आया। क्योंकि हर इंसान को किसी न किसी से उम्मीद रहती है और इसी उम्मीद के सहारे वह आगे बढ़ता रहता है। इसका न कोई रंग है न आकार है न रूप है फिर भी इसमें इतनी शक्ति है पत्थर को भी पिघला सके। आज इसी उम्मीद के सहारे हमारे वैज्ञानिकों ने चांद पर कदम रखा कि क्या पता यहां भी जीवन संभव हो, इसी के सहारे एक राही अपनी मंजिल की ओर बढ़ता रहता है कि कभी न कभी तो उसको उसकी मंजिल मिलेगी उसके सपने साकार होंगे आदि इन सब बातों का आधार है उम्मीद।

एक उम्मीद है तुम्हारे आने की
एक ये बसंत है की रुकता ही नहीं।

उम्मीद आशा, इच्छा, उत्कंठा, ख्वाहिश जो कि मानव जीवन का हिस्सा है। कहा जाता है कि The world stands on hope (उम्मीद पर दुनिया कायम है) इस बात को नकारा नहीं जा सकता। मगर इस बात को सार्वभौमिक सत्य सिद्ध भी नहीं किया जा सकता किन्तु कहा जा सकता है कि उम्मीद हमें जीना सिखाती है। सही बात है, मगर हद से ज्यादा उम्मीद हमें गर्त की ओर ले जाती है तो उम्मीद ऐसी रखो की टूटने पर संभला जा सके, ऐसी नहीं की उसके साथ अपने आप को संभाल ही ना सको। क्योंकि जिस उम्मीद की वजह से हम सुकून की तलाश कर रहे वही आगे चलकर हमारे लिए दुखों का कारण बनती है। उम्मीद रखनी है तो अपने आप से रखो दूसरों से नहीं, जितनी अपने आप से रखोगे, उतना ही आपका जीवन सरल और सुखमय होगा और दूसरों से रखी गई उम्मीद आपको अंदर से खोखला कर देगी और खोखली चीज अस्तित्वविहीन हो जाती है।

टूटा है दिल, टूटी है उम्मीदें, सांसे बाकी है।
एक रात गुजर गई, एक रात और बाकी है।।

कहा जाता है कि उसने मेरी उम्मीद तोड़ दी या फिर उससे ऐसी उम्मीद नहीं थी। उसने आपकी उम्मीद क्यों तोड़ी और आपकी उम्मीद पर खरा क्यों नहीं उतरा उसका कारण यही है कि हमने जो उससे उम्मीद लगाई थी क्या पता उसको वह वातावरण न मिला हो, क्या पता उस समय परिस्थितियों उसके विपरीत हो, क्या पता उसका स्वास्थ्य खराब हो गया हो, क्या पता उसकी सोच आपकी उम्मीद से परे हो। मगर हम इन बातों से किनारा करके बस यही सोचते हैं कि वह मेरी उम्मीद पर खरा नहीं उतरा या उसने मेरी उम्मीद तोड़ दी। दरअसल वह उम्मीद नहीं थी वह सिर्फ हमारी एक सोच थी जो हमारे विपरीत हो गई। जिस वजह से हमें परेशानी का सामना करना पड़ा। मगर हाँ हम उम्मीद अपने आप से कर सकते हैं दूसरों से उम्मीद नहीं करो। मगर उसके गुलाम मत बनो और अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि उम्मीद पर दुनिया कायम है कब तक, जब तक उम्मीद टूटे ना।

कुमार नवीन
शोधार्थी
(हिंदी विभाग)



मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव

किसी भी राष्ट्र और समाज के स्वरूप के निर्माण में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मीडिया का स्वरूप उसकी जन सामान्य से संवाद की क्षमता, जनता तक उसकी पहुँच पर निर्भर करता है। सोशल मीडिया वर्तमान में सबसे लोकप्रिय साधनों में से एक है। इसके माध्यम से हम कम से कम समय और लागत में, किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा दुनिया के किसी भी कोने में, अपने प्रियजनों से बात कर सकते हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे— ट्विटर, इन्स्टाग्राम, फेसबुक आदि हमें सामग्री साझा करने में सक्षम बनाते हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव होता है। लोगों के साथी, परिवार, समाज और सामाजिक संबंध उनके मानसिक स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव डालते हैं। सकारात्मक संबंध व्यक्ति को आत्मविश्वास और सुरक्षा प्रदान करते हैं जबकि नकारात्मक संबंध व्यक्ति को अवसाद, तनाव देते हैं। इसी प्रकार सोशल मीडिया भी एक दोधारी तलवार है — जिस तरह यह हमें दूसरों से जुड़े रहने में मदद कर सकता है उसी तरह यह डिप्रेशन (अवसाद), असंतोष तथा अकेलेपन की भावना भी पैदा कर सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। यह किसी भी अन्य बेवसाइट की तुलना में सबसे ज्यादा देखी जाने वाली बेवसाइट है जिसके परिणाम स्वरूप मानसिक रोगियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में युवाओं पर किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वालों में कभी-कभी उपयोगकर्ताओं की तुलना में अवसादग्रस्त होने की संभावना तीन गुना अधिक होती है। जब हम अपने मोबाइल को खोलते हैं तो आनन्द का अनुभव करते हैं यह आनन्द हमारे मतिष्क में रिलीज होने वाले हार्मोन 'डोपामाइन' के कारण आता है जिसे हैप्पी केमिकल या हार्मोन के रूप में भी जाना जाता है। हालांकि सोशल मीडिया पहली बार प्रयोग करने पर भी ध्यान भटकाने वाला हो सकता है यदि आप बार-बार लॉग-इन करना चाहते हैं तो यह लत में बदल सकता है।

यदि हम लोगों से आमने-सामने उपस्थित होकर बात न करके, सोशल मीडिया के ही माध्यम से बात करते हैं तो अकेलेपन व अवसाद जैसी मनोदशाओं से आसानी से ग्रसित हो सकते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से जब हम अपने दोस्तों, रिश्तेदारों व पारिवारिक सदस्यों को मौज मस्ती करते हुए देखते हैं तो हमें अहसास होता है कि हर कोई हमारी तुलना में जीवन का आनन्द ले रहा है और हम कुछ खो रहे हैं। तब हम चिंतित हो सकते हैं कि हमारा सामाजिक जीवन अन्य लोगों की तरह रोमांचक नहीं है। कुछ समय उपरांत यहीं चिंता, अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं में बदल सकती है।

सोशल मीडिया के माध्यम से लोग फिल्टर का इस्तेमाल करके छवियों में हेरफेर कर सकते हैं ये छेड़छाड़ की गई छवियों अवास्तविक शारीरिक छवि को बढ़ावा देती हैं जिससे हम अपने दिखने के बारे में असुरक्षित महसूस कर सकते हैं व इससे 'बॉडी डिस्मॉर्फिक डिस्ऑर्डर' जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

सोशल मीडिया हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभावों की तुलना में नकारात्मक प्रभाव अधिक डाल रहा है। सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से नींद की कमी हो सकती है जिससे एकाग्रता में कमी, ध्यान का भटकाव व्यक्तिगत संबंधों में कमी आ सकती है। यह साइबरबुलिंग को एक मंच प्रदान करता है जिसके कारण भावात्मक संकट उत्पन्न हो सकता है। सोशल मीडिया पर दूसरों के जीवन की हाइलाइट, रील आदि के लगातार संपर्क में रहने से अपर्याप्तता का अनुभव कर सकते हैं तथा इसके कारण हम अपनी रुचियों का नजरअंदाज करने लगते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को हम कुछ उपायों द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं यदि आप यह महसूस करें कि सोशल मीडिया आपके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है तो समय-समय पर इससे ब्रेक ले। यह आपको वास्तव में मानसिक शान्ति प्रदान कर सकता है। स्क्रीन पर बिताए गए समय को कम करने के लिए अन्य गतिविधियों में समय बिताए। असत्य खबरों और भ्रामक जानकारी से बचने के लिए सत्यापन की पुष्टि करें। सोशल मीडिया पर आप किसे फॉलो करते हैं और किस सामग्री का अत्यधिक उपयोग करते हैं, इसके बारे में जानकारी रखें। उन खातों को अनफॉलो करें जो नकारात्मक भावनाएँ या तनाव पैदा करते हैं। अपने समय को व्यक्तिगत बातचीत, शौक और अन्य गतिविधियों के साथ संतुलित करें जिससे आपको खुशी और संतुष्टि अनुभव मिलती हो। इस प्रकार अपने व्यवहार व कार्यों को नियंत्रित करके मानसिक रोगी होने से बचा जा सकता है।

प्रिया
शोधार्थी (हिंदी विभाग)

बड़प्पन

बड़प्पन एक मानवीय गुण है जिसका तात्पर्य है बड़ा एवं श्रेष्ठ होना। बड़ा होना कोई सामान्य बात नहीं है यह एक असाधारण बात है क्योंकि इसके होने का मतलब होता है कि अपनी सभी कमियों एवं कमजोरी को दूढ़ते हुए समाज में श्रेष्ठता का परिचय देना।

बड़प्पन बड़ा दिखने में नहीं बल्कि बड़ा होने से है बड़प्पन पाने के लिए आजकल निरापद रास्ता दूढ़ा जा रहा है। गरीबों में कंबल वितरित करते हुए फोटो खिंचवाना, सार्वजनिक स्थानों पर झाड़ू लेकर कमरे के सामने रहना, दान देकर उसका प्रचार करना आदि अनेक हथकंडे हैं, जिनके आधार पर समाज में यह दर्शाया जाता है कि वह कितने बड़े हैं मेरी दृष्टि में यह बड़प्पन का सही तरीका नहीं है।

बड़प्पन एक छायादार एवं फलदार वृक्ष के समान है जिसके सानिध्य में आने पर व्यक्ति को पोषण के साथ-साथ शीतलता का अनुभव होता है। इससे आंतरिक खुशी होती है— देने वालों को भी, पाने वाले को भी। बड़प्पन खजूर जैसा वृक्ष नहीं है जो केवल देखने में तो बड़ा होता है पर जिसकी कोई छाया नहीं होती है। कबीर जी ने ठीक ही कहा है—

“बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।

पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।”

मेरी दृष्टि में बड़े वही होते हैं जो जनकल्याण के लिए अपनी सर्वत्र बार देते हैं, त्याग देते हैं नगण्य सी गिलहरी ने भगवान राम के काम में अपना सारा पुरुषार्थ लुटा दिया। उससे जितना संभव था उससे भी कहीं अधिक बढ़ चढ़कर भागीदारी की भगवान राम ने उसके बड़प्पन को हृदय से स्वीकार किया, उसे देखकर उनकी आँखें नम हो गईं।

कहा जाता है कि गिलहरी के पीठ पर पड़े निशान भगवान राम के हाथों के निशान हैं इसलिए ध्यान देने योग्य है कि बड़े कार्य एवं श्रेष्ठ कार्य में भागीदारी को हम बड़प्पन का दर्जा देते हैं। फिर यह नहीं देखा जाता कि यह कौन कर रहा है, मनुष्य या पशु।

ठीक इसके विपरीत गलत कार्यों में साथ देना हमारे बड़प्पन को कमजोर करता है एवं हमारी प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है महाभारत के कुछ पात्र आपको याद होंगे, पराकर्मी कर्ण, द्रोण, अश्वथामा आदि को इतिहास ने कभी ऊंची नजरों से नहीं देखा जानते हैं क्यों ? क्योंकि उन्होंने अधर्म का साथ दिया।

दूसरी ओर स्वतंत्रता के लिए मर मिटने वाले भगत सिंह, आजाद राजगुरु आदि को उनके कद एवं उम्र से भी बड़ा माना गया। अनजान युवक देश के लिए कुर्बानी देकर इतने बड़े हो गए कि आज उनके चरणों में मस्तक नवाया जाता है, सही मायने में ये ही बड़े हैं, सर्वोपरि हैं।

इसलिए इंसान की इंसानियत उसके बड़े होने में है बड़प्पन में है। नीचता, क्षुद्रता, लाभ हानि का गुणा-भाग, घृष्टता हमें बड़ा नहीं अपितु छोटा बनाती हैं। ऐसा काम करने वाले कितने ही बड़े क्यों ना हो सदैव बने रहते हैं। भगवान विष्णु से बलि ने छल किया, तीन पग भूमि मांगने के कारण उन्हें वामन कहा जाता है। दूसरी ओर एकलव्य का भी बड़प्पन था कि द्रोणाचार्य के दुत्कारने के बावजूद उसने उनकी मिट्टी की प्रतिमा में श्रद्धा का प्राण भरा और उससे वह सब कुछ सीख गया जिसकी काट शायद अर्जुन जैसे महान धनुर्धारी के पास भी नहीं थी। अपने अंगूठा काटकर गुरु दक्षिणा देने में जरा भी संकोच नहीं किया। बड़प्पन एकलव्य में था ना कि द्रोणाचार्य में।

इसलिए बड़प्पन केवल वही प्राप्त कर सकता है जो सचमुच में बड़ा होता है जिसके जीवन में आडंबर एवं प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं होता यदि वास्तव में बड़ा होना चाहते हैं तो दिल को बड़ा कीजिए उसे दिल में सभी को साथ लेकर चलने की अलग भावना होनी चाहिए। यही बड़प्पन की कसौटी है कि हम दूसरों की पीड़ा को कितना अपना मानकर दूर करने का प्रयास करते हैं। सरल एवं बड़ा बनने के लिए नीचे पंक्तियों को याद रखें और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।



“जिंदगी का सफर कुछ यूँ आसान कर लिया।
कुछ से माफी मांग ली, कुछ को माफ कर दिया।।

प्रो. नीना बत्रा
इंचार्ज (अर्थशास्त्र विभाग)

नाद ब्रह्म

भारतीय विचारधारा के अनुसार भगवान ब्रह्मा ने सामवेद से संगीत सृष्टि की है। पृथ्वी से पहले सारा प्रपंच आकाश रूप में स्थित था और इस आकाश में केवल नाद ही व्याप्त था। आकाश से पंचभूतों का उद्भव हुआ। तत्पश्चात उन्हीं से सभी जीव तथा देव आदि उत्पन्न हुए। ऐसा माना जाता है कि दुनिया की समस्त वस्तुओं का आधार केवल नाद ही है। संगीत मनुष्य की संवेदनाओं, भावनाओं व विचारों को अभिव्यक्त करने का नादमय साधन है। विभिन्न भावों को अभिव्यक्त करने वाली ये रंजक ध्वनिया ही संगीत के स्वरों की जननी है। ये विशेष ध्वनियाँ ही संगीत में प्रयुक्त होकर स्वरों का रूप धारण करती है तथा स्वर संगीत का मूलाधार है।

वागेव विश्वा भूवनानि जने वाचइत।

स सर्वमयश्तम वच्च मर्त्यमिति श्रुतिः ॥

अर्थात् वाणी से ही यह सारा विश्व उत्पन्न हुआ है। इस समस्त भुवन ने वाणी से ही जन्म पाया है। इस अमर और मर्त्य संसार की जननी वाणी ही है। इसलिए इस संसार को नाद या शब्द का परिणाम कहा जाता है। वेद ज्ञाता इस बात को जानते हैं कि यह जगत शब्द या नाद का ही परिणाम है। जीव ब्रह्मा अपनी अभिव्यक्ति के लिए अपने अनुभव और अपने विचार शक्ति को व्यक्त करने के लिए नाद का दो प्रकार से प्रयोग करता है— एक वर्णरूप में तथा दूसरा स्वरूप। पं० शारंगदेव ने भी संगीत रत्नाकर में नाद रूपी ब्रह्मा के स्वरूप का वर्णन किया है। इस सारे संसार में आलौकिक संगीत का प्रवाह संचरण करता रहता है। इसको अनाहत या अनहद नाद से जाना जाता है। ओंकार की ध्वनि यानी प्रणव भी इसी दिव्य संगीत को कहा गया है। इसलिए शास्त्रों में स्थान—स्थान पर प्रणव की महिमा को बताया गया है। श्रीमद्भागवत गीता के अनुसार “प्रणव सर्ववेशु” अर्थात् सभी जगह प्रणव का निवास है।

चौतन्यं सर्वभूतानां विवृत्तं जगदात्मना।

नादब्रह्म तदानन्द मद्वितीय मुपास्महे ॥

अर्थात् सब प्राणियों के चैतन्य, निराकार आनन्दरूप, अद्वितीय उस नाद रूपी ब्रह्म की उपासना करते हैं। ब्रह्मा विष्णु तथा महेश तीनों नाद ब्रह्म के रूप हैं।

अतः ये नाद की उपासना के द्वारा उपासित होते हैं। योग शिखोपनिषद् के अनुसार— जिसका अनुभव पाकर योगी जिसे चिन्त कहकर वर्णित करते हैं, जो सर्व सिद्धियों का कारण है जिन्हें जानने मात्र से ही अन्य बंधनों से मुक्ति मिल जाती है, वह अक्षर या परम नाद ‘शब्द ब्रह्म’ कहलाता है। मूलाधार में स्थित स्वयं आधारित जो शक्ति बिंदु रूप में विद्यमान है। उस शक्ति से नाद की उत्पत्ति इस प्रकार होती है जिस प्रकार बीच में से अंकुर की। तान्वादि स्थान में प्राणवायु का संघटन होने से आकार से साकार तक के वर्ण उत्पन्न होते हैं। इन वर्णों या अक्षरों से पद और पदों से वाक्य बनते हैं। मंत्र, वेद, शास्त्र, पुराण तथा काव्य इत्यादि सब कुछ वाक्यात्मक है। सप्त स्वर तथा गाथा इत्यादि सभी नाद से ही उत्पन्न होते हैं। सब प्राणियों की गुहा में स्थित बागेश्वरी देवी प्राणाग्नि से प्रेरित होकर वर्ण, पद, वाक्य को प्रकट करती हैं। जो योगी इस वैश्वरी को अपनी आत्मा में देख लेता है वह सरस्वती की प्रसाद से वाक्सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। पं० ओंकारनाथ ठाकुर ने अपनी पुस्तक प्रणव भारती में मध्यमा (नाद अवस्था) को संगीत के लिए उपयोगी नाद अथवा संगीत का आधार माना है। ‘योग शिखोपनिषद्’ में भी परा से लेकर पश्यंति तक का वर्णन नाद के व्युत्पत्ति क्रम में बताया है। जिस स्थान पर सुशम्ना नाड़ी के साथ इडा तथा पिंगला नाड़ी मिलती है, उस स्थान को ब्रह्म ग्रंथि कहते हैं। इसी स्थान से वायु तथा नाद की उत्पत्ति होती है। ऋषियों तथा मुनियों से उसे निर्गुण ब्रह्म का संबंध रूप कहाँ है। ब्रह्म की अनुभूति प्रणव की साधना से अथवा नाथ की उपासना से ही सिद्ध होती है। “शब्द गुणआकाश” इस वचन से यही सिद्ध होता है कि शब्द नाद आकाश का गुण होने से आकाश के सामान संपूर्ण जगत में व्याप्त है।



डॉ. स्वाति शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
(संगीत विभाग)

चुनाव लोकतंत्र का आधार

चुनाव लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा लोग अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों को चुनते हैं।

चुनाव को लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी या लोकतंत्र का मुख्य आधार माना जाता है। चुनाव निष्पक्ष हो इसके लिए एक संस्था बनाई जाती है जिसे 'चुनाव आयोग' कहा जाता है। किसी भी देश के स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान वहाँ होने वाले निष्पक्ष चुनाव से होती है।

चुनाव में विभिन्न राजनीतिक दलों के उम्मीदवार भाग लेकर मतदाताओं का विश्वास और समर्थन जीतने के लिए एक दूसरे के खिलाफ जनता में मतभेद पैदा करते हैं। चुनाव में प्रत्येक मतदाता को अपनी पसंद के किसी भी उम्मीदवार को स्वतंत्र रूप से वोट देने का अधिकार है। चुनाव देश के नागरिक को यह शक्ति देता है कि वह अपने नेता को चुन सके तथा आवश्यकता पड़ने पर सत्ता परिवर्तन भी कर सके।

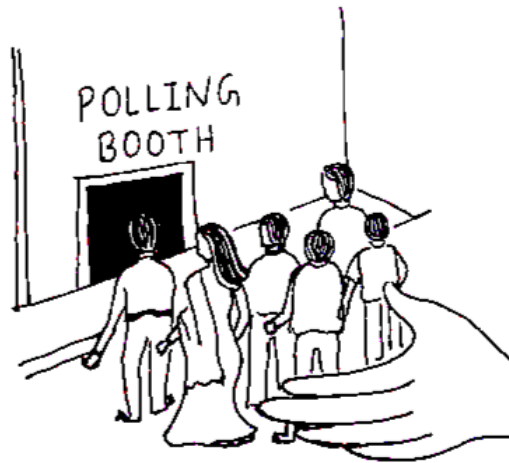
देश में समय-समय पर चुनाव राजनेताओं में भय पैदा करता है कि यदि वह जनता का दमन या शोषण करेंगे तो चुनाव के समय जनता अपनी वोटों की ताकत द्वारा उन्हें सत्ता से बाहर कर सकती है।

चुनाव सरकार और उसके नागरिकों के बीच सार्वजनिक भागीदारी जागरूकता और विश्वास को बढ़ावा देते हैं। चुनाव किसी राष्ट्र की नियति को आकार देने उसके नेतृत्व में निर्धारित करने और नीतियों और शासन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

देशभक्त नागरिक की सही पहचान।

उंगली पर हो वोट की स्याही का निशान।।

गुलशफा त्यागी
(एम.ए., राजनीति विज्ञान)



राष्ट्र भाषा हिंदी के विकास में दूरदर्शन का योगदान

दूरदर्शन ने साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक चेतना का विकास किया है। दूरदर्शन सामाजिक सरोकार का सबसे बड़ा लोक प्रसारक केंद्र है। 'सत्यम शिवम् सुंदरम्' की लोक अवधारणा से जुड़ा हुआ दूरदर्शन राष्ट्रभाषा हिंदी और हिंदी साहित्य से जुड़ा हुआ एक बहत्तरीन मंच कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कोई भी भाषा हो या साहित्य वह सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत होता है। प्रत्येक भाषा श्रव्य और पठन-पाठन से ही अपना प्रभाव छोड़ पाती है। भाषा का निरंतर प्रयोग ही उसकी सफलता का गहरा राज होता है। भाषा के नित्य नए-नए प्रयोग भाषा को समृद्ध बनाते हैं भाषा के विकास में देखना सुनना-समझना ही उसका विकास विश्लेषित करता है। कोई भी भाषा कार्यक्रम हो वह किसी दृश्य और श्रव्य माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है तो उसकी व्याप्ति असीम और अद्वितीय हो जाती है। दूरदर्शन राष्ट्रभाषा के विकास में बस यही अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

दूरदर्शन एक लोक सेवा प्रसारक होने के नाते राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार जमकर कर रहा है। स्वतन्त्रता के बाद जब टेलीविजन भारत में आया तो संपूर्ण भारत में इसकी स्थापना नहीं हुई थी साथ ही टेलीविजन के महंगा होने के कारण प्रत्येक घर में उपलब्ध नहीं था, जिसके कारण प्रसारित हिंदी चैनल संपूर्ण भारत तक पहुंच नहीं पाते थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कंपनियों की होड ने टेलीविजन को अत्यंत सस्ता कर दिया, जिससे प्रत्येक घर में यह आज उपलब्ध है। दूरदर्शन तथा सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों के प्रसार-प्रचार न केवल भारत बल्कि विश्व स्तरीय होने से हिंदी कार्यक्रम अत्यंत विख्यात हो रहे हैं।

दूरदर्शन पर प्रसारित समाचारों, मनोरंजन के विभिन्न कार्यक्रमों धारावाहिकों, विज्ञापनों में प्रयुक्त हिंदी का वर्चस्व स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

टेलीविजन द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा हिंदी होने से अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी अपने उत्पादों को राष्ट्र भाषा हिंदी के माध्यम तक उपभोक्ताओं- तक पहुंचा रही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ न केवल विज्ञापन बल्कि अपने उत्पादों की लोकप्रियता, उत्पादों के पक्ष व विपक्ष के विचारों को जानने तथा अन्य उत्पादों की तुलनात्मक प्रतियोगिता की होड़ के लिए सर्वेक्षण आदि विभिन्न कार्य हिंदी में ही करवा रही है क्योंकि उन्हें लगता है, अपने उत्पादों को घर-घर पहुँचाने में हिंदी सबसे अच्छा मार्ग है।

दूरदर्शन के सम्बंध में विभिन्न विद्वानों का मंतव्य-विवेचन इस प्रकार मिलता है-

श्रीमति इंदिरा गाँधी ने कहा- "हम दूरदर्शन का विस्तार न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में वरन् विकास के लिए शिक्षा के साधन के रूप में करना चाहते हैं।" अन्य बातों के साथ-साथ उन्होंने यह भी कहा था- यह पद्धति लोकतंत्र के लिए सहायक सिद्ध होगी। ग्रामों में आधुनिकीकरण में उसका योग निर्णायक हो सकता है। किसानों के लिए देखना ही विश्वास करता है। साहित्यकार कमलेश्वर दूरदर्शन के विषय में कहते हैं- "दूरदर्शन सिनेमा नहीं है। दूरदर्शन अखबार भी नहीं है। यह रंगमंच या लोककलाओं का प्रदर्शन मंच भी नहीं है। यह एक कल्चरल फैक्टरी है।" जनसंचार का यह सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है। रेडियो से केवल आवाज सुनी जा सकती है, परंतु दूरदर्शन से आवाज के साथ घटनाओं के चित्रों का हूबहू आनंद लिया जा सकता है।

दूरदर्शन: उद्भव व विकास

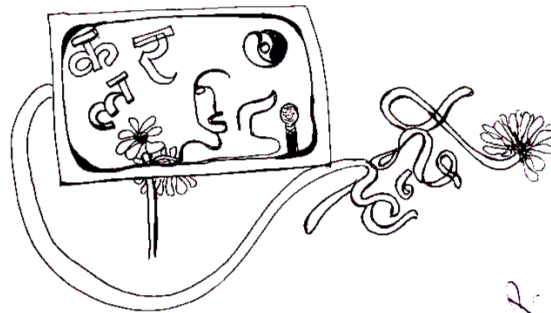
दूर तक तस्वीरों को प्रसारित करने की युक्ति 1890 ई. में ही ज्ञात हो चुकी थीं और 1930 ई. के अंत में टेलीविजन एक घरेलू शब्द बन चुका था। जबकि संसार का पहला नियमित प्रसारण सार्वजनिक स्तर पर 1936 ई. में हुआ।

भारत में टेलीविजन 15 सितंबर 1959 ई० को भारत में प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद द्वारा दिल्ली में प्रायोगिक टेलीविजन के प्रसारण का उद्घाटन किया गया। जिसे दूरदर्शन का नाम दिया गया। 15 अगस्त, 1965 को भारत वर्ष में दूरदर्शन से प्रथम समाचार बुलेटिन का प्रसारण हुआ। 18 अप्रैल 1966 को आकाशवाणी और दूरदर्शन के क्रियाकलापों को गति देने के लिए चंदा समिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। 1976 को आकाशवाणी से पृथक होकर दूरदर्शन को स्वतंत्र प्रसारण के रूप में गति मिली एवं विकास हुआ इसी समय दूरदर्शन महानिदेशालय बना। 15 अगस्त 1982 का दिन दूरदर्शन के इतिहास का स्वर्णिम दिन बन गया। इसी दिन से भारत के श्याम, श्वेत दूरदर्शन को रंगीन रूप मिला। दूरदर्शन एवं हिंदी कार्यक्रमों की भाषा –

टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों की भाषा में काव्यात्मकता दिखाई देती है और विज्ञापन की भाषा व्यक्ति के मन मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है और ग्राहक उसी पर चल पड़ता है मानो वह विज्ञापन वाली वस्तु कल तक बाजार से गायब हो जाएगी या फिर उसे नहीं मिलेगी।

दूरदर्शन ने विभिन्न साहित्यिक कृतियों पर आधारित धारावाहिकों और टेलीफिल्मों का प्रसारण किया। जिससे समाज को एक नई दिशा मिली। हमारी साहित्यिक कृतियां ही समाज का दर्पण होती है इस दर्पण के माध्यम से हम अपने समाज में सामाजिक चेतना की एक तस्वीर देख सकते हैं। दूरदर्शन के रामायण, महाभारत जैसे धारावाहिकों की लोकप्रियता का कारण भी यही था। लोगो ने इसे दिल से आत्मसात किया था। फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आंचल' आंचलिक वातावरण को दर्शाता है। दूरदर्शन के इस धारावाहिक के माध्यम से लोकभाषा, ग्रामीण जीवन, संस्कृति को करीब से देखा गया।

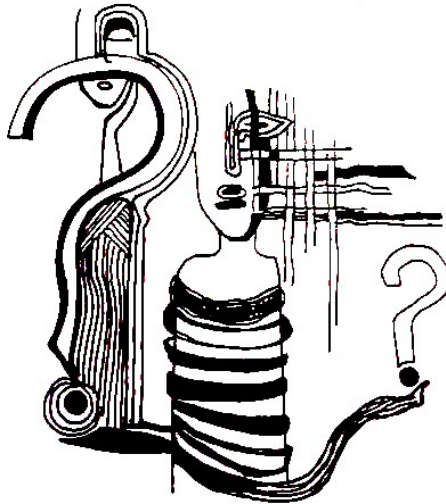
दूरदर्शन के विषय में गौरवशाली बात यह है कि इसने प्रायोगिक से विश्वस्तरीय प्रसारण यात्रा में अपनी अहम भूमिका निभाई है। आज भारतीय दूरदर्शन विश्व के अग्रणी टेलीविजन संस्थानों में से एक है दूरदर्शन ने नई-नई आधुनिक तकनीकों को अपनाकर तकनीकी गुणवत्ता से अपने आपको समृद्ध बनाया है। लोक सेवा प्रसारण की भूमिका में भारतीय दूरदर्शन से भारत देश की सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता के साथ-साथ सूचना और मनोरंजन प्रदान करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। संचार क्रान्ति के इस युग में भारतीय दूरदर्शन उपग्रह और इंटरनेट की जबरदस्त मदद लेकर विश्वभर में अग्रणी है।



डॉ. सुजाता चावला
अंशकालिक प्रवक्ता
(हिन्दी विभाग)

क्या मैं वहीं हूँ

न जाने क्यूँ लोग मुझे
नैतिक कर्तव्यों की
रोहिणी कहने लगे हैं...
ऐसा मानों जैसे न जाने
कितने ही लोग मुझे
कैद करने की चाह रखने लगे हैं...
न जाने कैसे लोग मुझे
पारदर्शी बनावट का पट
समझने लगे हैं...
संभवतः मैं कोई कल्पित कथा हूँ,
मेरे लोचन में जो जैसे आया है,
जैसे सम्भव है, वह कहीं और, नहीं है,
तथाकथित "मनुष्य"
क्या मैं वहीं हूँ ?



श्रुति मिश्रा
(बी.ए. तृतीय वर्ष)

भारतीय चित्रपट संगीत

भारतीय संगीत न केवल हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि है वरन् वह संगीत विश्व के इन सांगीतिक संस्कृतियों व कला संस्कृतियों की पोशक है, जिसने अपनी संवेदनाओं और मनोभावों को विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया।

भारतीय संगीत बहुत व्यापक विषय है जिसने कई सांगीतिक शैलियों को जन्म दिया और इसी आधार पर 'भारतीय संगीत' सभी संगीतों का आधारभूत स्तंभ है। भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार की विधाओं का निर्माण किया गया है जैसे—

1. शास्त्रीय संगीत
2. उप शास्त्रीय संगीत (ठुमरी, चैती— कजरी दादरा आदि)
3. लोक संगीत
4. सुगम संगीत (गीत, गजल, भजन)

भारतीय संगीत में सुगम संगीत विधा अत्यन्त प्रचलित विधा है। क्योंकि यह जन सामान्य को जोड़ने में अधिक सहायक है। सुगम संगीत में फिल्मी संगीत इसकी सबसे प्रचलित विधा है जिसने संपूर्ण विश्व पर अपना एकाधिकार किया है फिल्मी संगीत, भारतीय संगीत का अत्यंत प्रचलित स्वरूप है यदि ऐसा कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

भारतीय चित्रपटीय संगीत उस कालखण्ड से आरंभ हुआ जब चित्रपट के नायक एवं नायिका स्वयं ही अपने गीत गाते और अभिनय करते। कला के प्रति ऐसे निष्ठावान कलाकारों के आधार पर फिल्मी संगीत दुनिया की नींव रखी गई। ऐसे कला के प्रति समर्पित कलाकारों द्वारा ही यह श्रृंखला आगे की ओर अग्रसर हुई, इस श्रृंखला में लता मंगेशकर भी ऐसी ही कलाकार है जिन्होंने अपने प्रारंभिक दिनों में अभिनय और गायन साथ किया। पूर्व काल में ऐसे कलाकारों का चयन होता था जिन्हें अभिनय, नृत्य, संगीत तीनों में महारथ हो क्योंकि वह काल फिल्मी दृष्टि से उतना अनुकूल नहीं था। परंतु उसी समय एक नवीन फिल्मी दुनिया की नींव रखी गई। जिसमें मनोरंज के साथ अच्छे संगीत को भी लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसके फलस्वरूप एक काल आया पार्श्व गायन का। इसमें अभिनय एक कलाकार करते थे तथा गायन दूसरे कलाकार जिससे अत्यंत सुंदर आवाज हमारे समक्ष आई और फिल्मी दुनिया में संगीत मात्रा का व्यास और भी विस्तृत होता गया। जिससे अनेकों कलाकारों ने अपने जीवन का योगदान इस दुनिया को समृद्ध बनाने में किया।

जिस प्रकार एक चित्रपट को बनाने के लिए कहानीकार निर्देशक, संवाद—लेखक, नायक—नायिका आदि का होना आवश्यक है उसी प्रकार संगीत निर्मित करते समय भी गीतकार, का संगीतकार का होना आवश्यक है।

हिंदी फिल्म संगीत में प्रथम फिल्म 'आलमआरा' सन् 1931 में रिकॉर्ड हुई। इसके बाद सिलसिला चलता गया। पहले गीतों की रिकॉर्डिंग बड़े ग्रामोफोन पर सभी संगीत कलाकारों को साथ बिठाकर की जाती थी। आज के दशक में यह बदल चुका है और डिजिटल रिकॉर्डिंग का जमाना है। तकनीकी की अधिकता से काम में भी आसानी हुयी हैं।

इस सांगीतिक यात्रा में अनेक कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया और फिल्मी दुनिया में अपना स्थान

बनाया। 60 से 70 के दशक में संगीतकार नौशाद, ओ०पी नय्यर, मदन मोहन, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, एस० डी० वर्मन, रविंद्र जैन आदि ने अपनी अलग पहचान बनाई। इनमें से प्रत्येक के संगीत की अपनी अपनी विशेषता रही। 80 के बाद जतिन ललित, आदेश श्रीवास्तव आदि ने तथा वर्तमान में ए० आर० रहमान, विशाल—शेखर, सलीम—सुलेमान, शंकर—एहसान—लॉय आदि ऐसे प्रमुख संगीतकार हैं। जिन्होंने अपने संगीत से पूर्ण विश्व में ख्याति अर्जित की।

इसी प्रकार गायक गायिकाएं भी प्रत्येक दशक में नवीन आए और उन्होंने भी अपना स्थान बनाया। मोहम्मद रफी, मन्ना डे, किशोर कुमार, मुकेश, सुरेश वाडेकर, उदित—नारायण, कुमार सानू, सोनू निगम, शान आदि ने अपनी सुरीली आवाज से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वर्तमान में अरीजीत सिंह, राहतफतेह अली खान आदि गायकों का जमाना है।

इसी श्रृंखला में गायिकाओं में लता मंगेशकर, आशा भोंसले, सुमन कल्याणपुर, कविता कृष्णमूर्ति, साधना सरगम, श्रेया घोशाल, सुनिधि चौहान, रेखा भारद्वाज आदि गायिकाओं ने फिल्मी संगीत को समृद्ध बनाया।

फिल्मी संगीत यात्रा के कई दशक बीत चुके हैं फिर भी वर्तमान में भी यह लोगों के दिलों पर छाया हुआ है, संगीत की दुनिया में इसने अपना वर्चस्व कायम रखा है, प्रत्येक दशक की अपनी पहचान, अपनी एक महक, अपने सुर, अपना एक विस्तार तथा अपना एक इतिहास होता है।

रुकैया
शोधार्थी
(संगीत विभाग)



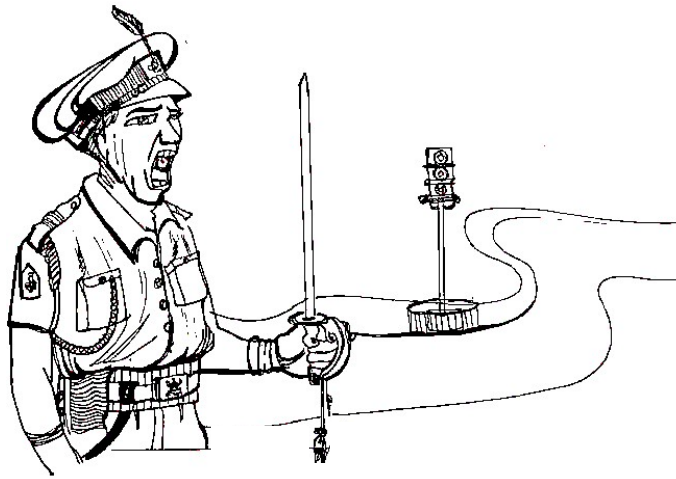
NCC कैडेट्स का यातायात नियन्त्रण में योगदान

कैडेट अर्पिता वर्मा के विचार से एक एन.सी.सी कैडेट्स किस प्रकार यातायात नियन्त्रण में योगदान दे सकता है—

1. एक एन. सी. सी कैडेट रैलियों द्वारा यातायात के नियमों को बता सकता है।
2. अगर एक एन.सी.सी कैडेट अपने किसी कार्य से जा रहा है व उसे कोई यातायात के नियमों का पालन न करता दिख जाये तो वह उसे समझा सकता है। ऐसा कोई साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता।
3. एन.सी.सी कैडेट नुककड नाटकों द्वारा यातायात के नियम समझा सकता है। चार्ट, बैनर आदि द्वारा लिखकर समझा सकता है।
4. रेड लाइट होने पर वाहन रोक दें तथा नियम पालन अनुसार ही वाहन चलाये।
5. वाहन को तेज रफ्तार से न चलाये।
6. वाहन को सही दिशा निर्देश पर चलायें।

एन.सी.सी कैडेट्स अगर नियमों का पालन करें तो अपने आस – पास का यातायात का कुछ हद तक नियन्त्रण कर सकता है। एन. सी. सी कैडेट्स देश के समझदार प्रबुद्ध, कुशल, सक्षम एवं प्रतिभा सम्पन्न नागरिक कहलायेंगे।

अर्पिता वर्मा



क्रोध आने पर सोचे

एक पति अपनी गुस्सैल पत्नी से तंग आकर उसे कीलो से भरा एक थैला देता है और कहता है “तुम्हे जितनी बार भी गुस्सा आए, तुम थैले से एक कील निकालकर पार्क में ठोक देना।”

पत्नी को अगले दिन जैसे ही क्रोध आया उसने एक कील पार्क की दीवार में ठोक दी। यह प्रक्रिया वह लगातार करती रही। धीरे – धीरे उसको समझ में आने लगा कि कील ठोकने की व्यर्थ मेहनत करने से अच्छा तो अपने क्रोध पर नियंत्रण कर ले और क्रमशः कील ठोकने की उसकी संख्या कम होती गई।

एक दिन ऐसा भी आया कि पत्नी ने दिन में एक भी कील नहीं ठोकी।

उसने खुशी-खुशी यह बात अपने पति को बताई। उसके पति बहुत प्रसन्न हुए और कहा, “जिस दिन, तुम्हें लगे कि तुम एक बार भी क्रोधित नहीं हुई, ठोकी हुई कीलो में से एक कील निकाल लेना।”

पत्नी ऐसा ही करने लगी। एक दिन ऐसा आया कि पार्क में एक भी कील नहीं बची। उसने खुशी-खुशी यह बात अपने पति को बताई। पति पत्नी को पार्क में लेकर गया और कीलों के छेद दिखाते हुए पूछा, “क्या तुम ये छेद भर सकती हो?”

पत्नी ने कहा “नहीं जी”

पति ने उसको कंधे पर हाथ रखते हुए कहा— अब समझी, क्रोध में तुम्हारे द्वारा कहे गए कठोर शब्द, दूसरो के दिल में ऐसे छेद देते हैं जिनकी भरपाई भविष्य में तुम कभी नहीं कर सकती हो।

जब भी आपको क्रोध आये तो पहले सोचिए कि कहीं आप भी किसी के दिल में कील तो नहीं ठोक रहे हैं?

डॉ. शिवानी त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(बी.एड. विभाग)



जिन्दगी की दौड़ में

जिन्दगी की दौड़ में तुम जीना ना भूल जाना,
तू बढ़ आगे, लेकिन अपनों को पीछे ना छोड़ जाना,
पल-पल हर-पल बढ़ता चल बिना रुके,
उस सफर में तुम धैर्य का संग ना छोड़ जाना,
जिन्दगी की दौड़ में तुम जीना ना भूल जाना।
मुस्कुराते चेहरे से संघर्षों और दुखों को झेल जाना,
कभी गिर टूट जाना, तो जीवन के उन कठिन क्षणों को याद कर आगे बढ़ जाना,
अपनी सफलता का जश्न तू अपनों के संग मनाना,
जिन्दगी की दौड़ में, तुम जीना न भूल जाना।।

कु. गरिमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(चित्रकला विभाग)



कोई तो और है

हर बार पाल लेती हूँ जिद कुछ पाने की,
कहाँ से आता है ये मुझमें,
ये कौन है, जो मुझे कहीं और ले जा रहा है,
हर बार चल देती हूँ लेकर अनजाना पता,
सच कहूँ तो नहीं मालूम,
मुझमें, कोई तो और है, मुझसे अलग,
जिसे मालूम है मेरे बारे में मुझसे ज्यादा,
कि, मैं बनी हूँ किसके लिए,
मुझे रुकना नहीं,
मुझे थमना नहीं
बस बहते हुए मधुर संगीत के साथ चलते जाना है।
बस चलते जाना है।

हिना यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
(चित्रकला विभाग)



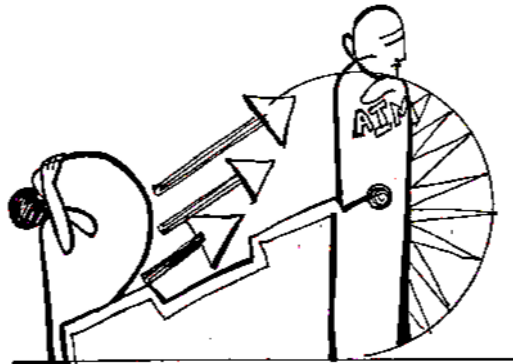
असफलता एक चुनौती

अंग्रेजी में कहावत है “Practice makes you Proficient” (अभ्यास आपको दक्ष बनाता है) “You keep trying you will definitely Succeed” (आप निरन्तर कोशिश करो अवश्य सफल होंगे) किसी भी कार्य में सफलता हासिल करने के लिये निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है। जन्म से हम सब समान होते हैं लेकिन भविष्य में कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, कोई वकील और कोई वैज्ञानिक बनता है। जिसकी बचपन में जैसे रुचि एवं सोच थी उसने वैसा ही अभ्यास किया और वह बन गया। अगर जीवन में सफलता हासिल करनी है तो यह मायने नहीं रखता कि आप कौन हैं, कहाँ है या आपके पास क्या साधन हैं? मायने रखती है तो बस आपकी दृढ़ इच्छा शक्ति यह जिसके पास जितनी होगी वह उतना ही अथक प्रयास करेगा। परिणाम परिश्रम का फल है। परिणाम यह सिद्ध करता है कि किसी व्यक्ति ने कितना परिश्रम किया। अगर कोई सफल वैज्ञानिक है तो इसका मतलब यह नहीं है कि उसने एक ही बार में कोई आविष्कार किया है उसके सफल आविष्कार के पीछे अनगिनत असफल प्रयास छिपे होते हैं। जीतते वहीं हैं जो हर असफलता के बाद फिर से प्रयास में जुट जाते हैं।

इस संदर्भ में कविवर श्री हरिवंश राय बच्चन जी की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

“असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय-जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।”

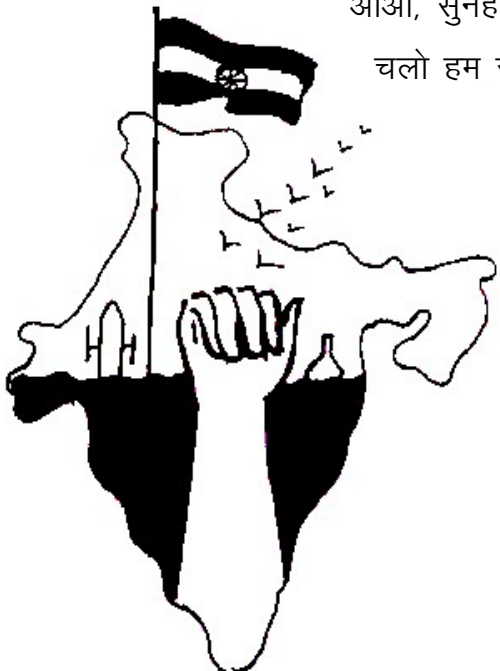
इस मंत्र का मैंने कठिन समय में हमेशा अनुसरण किया। मेरे सामने भी कई विपरीत परिस्थितियाँ बनी, लेकिन इसके अनुसरण से हमेशा आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिली। इसलिए जब भी लगे कि आपके सामने चुनौतियाँ आ रही हैं तो इस मंत्र का स्मरण करना। आपके अन्दर चुनौतियों से लड़ने की ताकत आएगी और आत्मविश्वास बढ़ेगा।



अंजली गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
(इतिहास विभाग)

आत्मनिर्भर भारत

आओ, सुनहरे भविष्य की तरफ हम अपना कदम बढ़ाते हैं,
चलो हम सब मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाते हैं,
आत्मनिर्भरता की ज्योति को हम सब हर घर घर जलाते हैं,
आत्मनिर्भरता की रोशनी से भारत की चमकाते हैं,
आओ, सुनहरे भविष्य की तरफ हम अपना कदम बढ़ाते हैं,
मोदी जी ने दिखाया जो सपना उसको सच कर जाते हैं,
भारतवासियों के हुनर को दुनिया को दिखाते हैं,
भारत के भविष्य को अपने हाथों से सजाते हैं,
आओ, सुनहरे भविष्य की तरफ हम अपना कदम बढ़ाते हैं,
बहुत हुए औरों पर निर्भर अब आत्मनिर्भर बन जाते हैं,
स्वदेशी है सबसे अच्छा अब हम सबको दिखाते हैं,
'सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा।
एक बार फिर सबको दिखाते हैं।
आओ, सुनहरे भविष्य की तरफ हम अपना कदम बढ़ाते हैं,
धरती, नभ, आकाश, पाताल में सब मे स्वदेशी का परचम लहराते हैं,
भारत के कण-कण में स्वदेशी की खुशबू लहराते हैं,
भारत के हर एक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन जाते हैं,
आओ, सुनहरे भविष्य की तरफ हम अपना कदम बढ़ाते हैं,
चलो हम सब मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाते हैं।



रानी

(बी.ए. प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर)

आलू बुखारा के अनगिनत फायदे

आलू बुखारा को अंग्रेजी में प्लम कहते हैं तथा इसका वैज्ञानिक नाम "प्रूनस डोमेस्टिका एल हैं। यह रौसेस वनस्पति परिवार से सम्बन्धित हैं और इसमें प्लम के पेड़ की लगभग 40 प्रजातियाँ शामिल हैं। यह एक छोटा, झाड़ीदार पर्णपाती पेड़ है और यह लगभग 6 से 15 मीटर लंबा होता है। इसकी पैदावार उष्णकटिबंधीय (ट्रोपिकल) और समशीतोष्ण क्षेत्रों (टेम्परेट रीजन) में काफी अच्छी मात्रा में पाया है। इसकी अधिकतर पैदावार भारत के उत्तराखंड, हिमांचल प्रदेश, कश्मीर एवं पंजाब के क्षेत्रों होती हैं।

आलू बुखारा बहुत ही रोचक फल होता है इसके साथ ही इसमें पौष्टिक तत्वों का भंडार पाया जाता है जैसे – कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटैशियम, ताँबा तथा लोहा का अच्छा स्रोत पाया जाता है। यह न केवल स्वादिष्ट मौसमी फल है बल्कि यह बहुत अधिक उपयोगी भी है। अपने कई गुणों के कारण कई बीमारियों को मैनेज करने में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

आलू-बुखारा के फायदें

- आलू बुखारा कब्ज और पाचन सम्बन्धी समस्याओं जैसे पेट फूलना, अपच, ब्लोटिंग और सीने में जलन से राहत दिलाने में मदद कर सकता है।
- आलू बुखारा के सेवन से गुर्दे व लीवर पर काम कर शरीर से निकलने वाले अपशिष्ट तत्वों की मात्रा बढ़कर शरीर को स्वस्थ तथा सुन्दर बनाता है।
- पोटैशियम की अच्छी मात्रा होने के कारण इसके सेवन से हार्ट अटैक का खतरा कम हो सकता है।
- आलू- बुखारा एक प्रकार का एंटी-कैंसर एंजेंट है जो कैंसर की कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है।
- इममें बेंजोईक-एसिड पाये जाने के कारण यह सीधे तौर पर स्नायु मण्डल को प्रभावित करता है।
- मधुमेह के खतरे से बचाने के लिए भी आलू- बुखारा का प्रयोग किया जाता है इनके नियमित सेवन से शरीर में शुगर की मात्रा में वृद्धि नहीं होती है अगर शुगर के मरीज खाये तो वो शुगर के स्तर को नियंत्रित कर सकते हैं।
- आलू-बुखारा कोलेस्ट्रॉल के नियन्त्रण में भी अपनी सकारात्मक भूमिका निभाता है क्योंकि इसमें पाये जाना वाला फाइबर घुलनशील होता है जो शरीर के बढ़ते हुए कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है।
- आलू- बुखारा में बीटा कैरोटिन की अच्छी मात्रा होने के कारण इसके सेवन से आँखों की दृष्टि बढ़ती है।
- आलू- बुखारा में क्षार का अनुपात सर्वाधिक होने के कारण इसका प्रयोग अकेले करना सर्वथा उचित है।
- यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

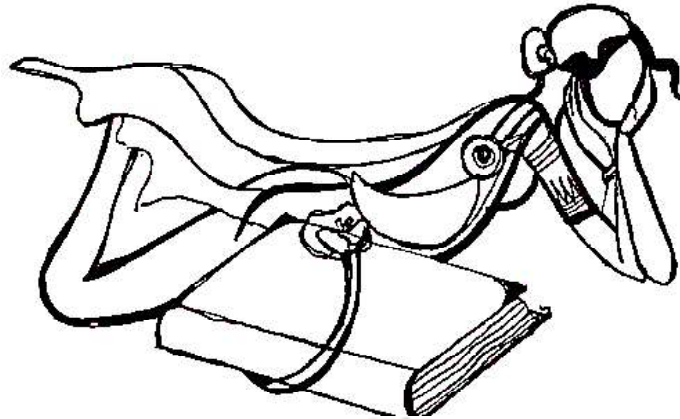


श्रीमती ममता कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
(गृह विज्ञान विभाग)

स्त्री शिक्षा

स्त्री और शिक्षा एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्रियाँ और शिक्षा दोनों ही देश व समाज के विकास के लिए आवश्यक हैं। समाज के साथ-साथ स्त्रियों के विकास के लिए भी शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। स्त्रियाँ संस्थागत शिक्षा के शिक्षण की कभी मोहजात नहीं रहीं। मात्र पारम्परिक एवं नैतिक शिक्षा के सहारे महिलाएं अपना सर्वांगीण विकास करती आई हैं। परंतु वर्तमान समय में संस्थागत शिक्षा व्यवस्था ही महिलाओं को पूर्णता प्रदान करती है। सभ्य समाज में सभी के लिए शिक्षा का महत्व है परन्तु समाज में स्त्रियों की शिक्षा ही अच्छे समाज की निर्माण प्रक्रिया भी पूर्ण करती हैं। वैदिक काल से ही भारत में स्त्रियों की शिक्षा पर जोर था। वैदिक इतिहास अनगिनत विदुशी महिलाओं के उदाहरणों से भरा पड़ा है परन्तु जैसे-जैसे समय बढ़ा स्त्रियों की शिक्षा का महत्व कम होने लगा। रुढ़िवादी दृष्टिकोण के कारण पिछले कई सदियों से स्त्रियों को संस्थागत शिक्षा प्रणाली से दूर रखा गया। वर्तमान समय में गरीबी के कारण भी लड़कियों को संस्थागत शिक्षा से दूर रखा गया। पुनर्जागरण के दौर में भारत में महिलाओं की शिक्षा को नेय स्तर से महत्व दिया जाने लगा। कोलकाता विश्वविद्यालय, महिलाओं की शिक्षा के प्रबन्धन को स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय बना। भारत भी स्वतंत्रता के बाद सन् 1947 ई० में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग बनाया गया। इस आयोग ने महिलाओं की शिक्षा में गुणवत्ता सुधार की सिफारिश की।

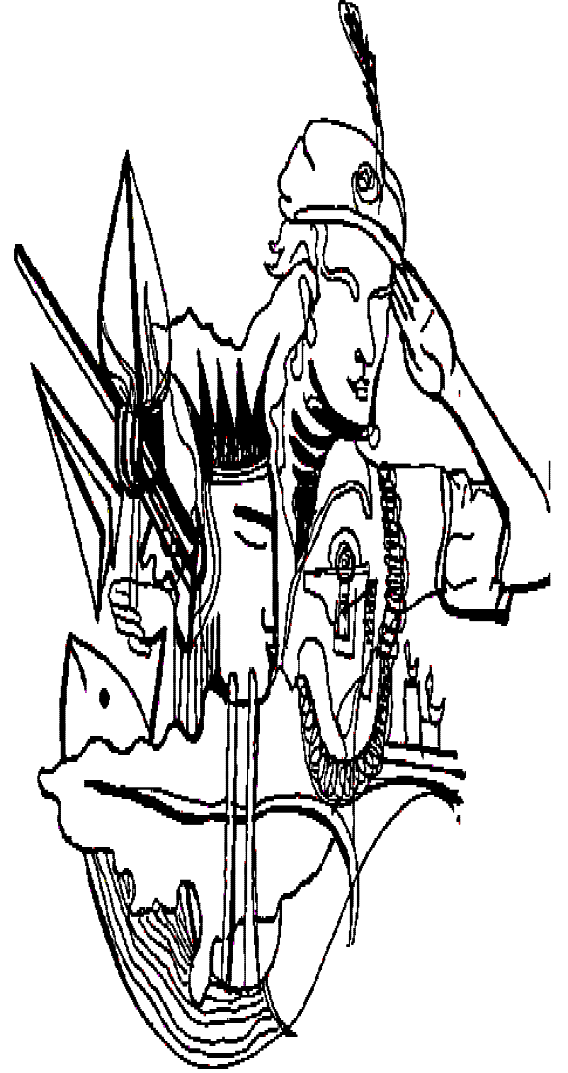
शिक्षा ही महिलाओं के सभी अधिकारों को सुरक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। स्वामी विवेकानंद जी का कहना था कि "राष्ट्र, समाज, प्रशासन तथा परिवार के क्रिया-कलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किये जा सकते, जब एक स्त्रियों को शिक्षा न मिले।" शिक्षा ही एक महिला उसके साथी और परिवार के स्वास्थ्य और स्वास्थ्य जागरूकता के स्तर को बढ़ाती है। शिक्षा ही महिलाओं की उनकी ' नागरिक भागीदारी भी दरों में सुधार करती है। महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा और पुरुषों पर, उनकी आर्थिक निर्भरता को खत्म करने में स्त्री शिक्षा का योगदान सबसे अधिक रहा है। महिलाएं 'लैंगिक समानता' के महत्व को भी जान रही हैं। खेल, व्यापार, राजनीति, सरकारी, समाजिक सेवा क्षेत्रों में महिलाओं ने अपना कार्य व भागादारी को सिद्ध किया है। शिक्षा मात्र समानता या भागादारी को ही नहीं बढ़ाती बल्कि महिलाओं में आत्मविश्वास और भावनात्मक संवेदना को भी मजबूत करती हैं। विकासशील देशों में महिलाओं की शिक्षा से 'जनसंख्या वृद्धि में तेजी से कमी आ रही हैं। विकास के हर पथ पर महिलाएँ दिन प्रतिदिन अग्रसर होती जा रही हैं और यह विकास यात्रा कदापि रुकने वाली नहीं है।



ज्योति दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजनीति विज्ञान विभाग)

भारत की बेटी

मैं हूँ भारत की बेटी, मुझे देश मेरा प्यारा है।
मिट्टी है यहाँ शहीदों की, यह देश जग में न्यारा है।
जोशीला है हर शख्स यहाँ, संस्कारों से भी भरा हुआ।
जरूरत है सही दिशा देने की, देश पर सबने सब कुछ वारा है।
जगाओ प्रेम व शांति की अलख, वृद्ध, युवा, बालक बने स्वरूप,
दुश्मन से बचाने की खातिर, भारत माँ ने अपना बेटा वारा है।
मैं क्या करूँ सरकार करें, निकलो इस माया दौर से।
मिट्टी है मेरी, देश है मेरा, तभी फहराता तिरंगा हमारा है।
दिशायुक्त समयबद्ध हो हर नागरिक, यह दायित्व हमारा है।
देश पर न्यौछावर सैनिक जैसा, हर नागरिक हमारा है,
'मैं हूँ भारतीय' का भाव, हर जाति-धर्म में जगाना है।
खाया जहाँ का अन्न हमने, उसका कर्ज चुकाना है।
मत सोचो मैं क्या हूँ, ये सोचो क्या कर सकता हूँ?
लेता सांस जब इस धरा पर, तो यह भारत देश हमारा है।
दिये जो वस्त्र इस भारत ने उससे तन अपना ढकते हो।
फिर क्यों भेजते विदेश युवा को, जब भारत सिरमौर हमारा है।
जो बीत गया उसे भूल जाओ, सबक लो आगे बढ़ो,
अब हो भारत विश्व मुकुट, बना संकल्प हमारा है।
सबका साथ-सबका विकास, सबको भोजन सबका सम्मान,
उत्तम न्याय-उत्तम पर्यावरण, करना यह दायित्व हमारा है।
संयम-नियम सामूहिकता में रहो, रूढ़िवादिता से दूर स्वतंत्र रहो,
आत्मनिर्भर स्वाभिमान युक्त हो, देखता भविष्य हमारा है।
जगायें देशभक्ति व समर्पण का भाव, यह दायित्व हमारा है।
रहें सदैव स्वतंत्र देशवासी, 'अंजु' यह कर्तव्य हमारा है।
करो सैल्यूट वर्दीधारी को, दो सम्मान कर्मशील प्राणी को,
ईमानदार व सत्यवादी हो, शिक्षा देने का अधिकार हमारा है।
सुनाओ कहानी देशप्रेमियों की, नित्य-नियम से पीढ़ियों को,
रहा भारत जग से न्यारा, देखने का सौभाग्य हमारा है।



प्रो. अंजुला राजवंशी
एसोसिएट प्रोफेसर
एन.सी.सी. ऑफिसर
(समाजशास्त्र विभाग)

संगीत के क्षेत्र में शोध की संभावनाएं

प्रत्येक विषय अपने आप में व्यापक है, परन्तु संगीत के क्षेत्र में शोध की व्यापक संभावनाएं हैं, क्योंकि संगीत का प्रचार—प्रसार अधिकतर सुनकर या सुनाकर ही हुआ है। अधिकतर संगीत के विस्मित कर देने वाले गुणों से लोग अज्ञान है और इसे सिर्फ आनन्द का क्षेत्र समझते रहें हैं।

मानव प्राचीनकाल से ही एक जिज्ञासु प्राणी रहा है। क्या, कैसे तथा क्यों, जैसे प्रश्नों की जिज्ञासा, तथ्यों की गहराईयों में उतरकर प्रश्नों के समाधान की अभिव्यक्ति उसका जन्मजात स्वभाव रहा है।

‘शोध’ शब्द संस्कृत की शुद्ध धातु से बना है, शोध अथवा रिसर्च का अभिप्राय है किसी विषय या वस्तु की संभावनाओं तथा असंभावनाओं की आद्योपांत जानकारी करने के पश्चात् उस विषय को शुद्ध या प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करना।

शोध एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो वर्षों के चिंतन, मनन, तथा अनुभव का निर्णयात्मक परिणाम एवं एक नवीन ज्ञान की प्राप्ति है। प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति की खोज ने मध्यकालीन सभ्यता संस्कृति के विकास को आगे बढ़ाया एवं मध्यकालीन सभ्यता तथा संस्कृति की बुनियाद पर आधुनिक सभ्यता तथा संस्कृति के द्वार खोलें। विविध ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई से प्राप्त तथ्य, प्राचीन शिलालेख तथा ऐतिहासिक दस्तावेज इतिहासकारों की वर्षों की खोज तथा अनुसंधान का परिणाम है।

वर्तमान में हम देखते हैं कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है यही कारण है कि शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य का प्रारंभ स्नातकोत्तर उपाधि के पश्चात् ही किया जाता है। इससे न केवल नवीन ज्ञान की प्राप्ति की संभावनायें प्रबल होती हैं बल्कि उच्च कक्षाओं में अध्यापन कार्य हेतु पी.एच.डी. उपाधि का भी बड़ा महत्व है।

शोध कार्य के प्रारम्भ से सर्वप्रथम शोधार्थी को यह ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है कि शोध का विशय नवीन तथा मौलिक हो, उसका प्रतिपादन पहले से ही किसी अन्य के द्वारा न किया गया हो। “सिद्धः साधने कुतः प्रयासः” अर्थात् जो पहले से सिद्ध किया जा चुका हो उसे क्या सिद्ध करना।

शोध कार्य के दो प्रमुख उद्देश्य हैं:— (1) नये तथ्यों की खोज करना (2) स्थापित तथ्यों का नवीन निर्वाचन, स्पष्टीकरण तथा नया अर्थ प्रतिस्थापित करना। किसी भी शोधार्थी के लिये विषय व शोध प्रक्रिया सम्बन्धी ज्ञान, विविध अध्ययन विधियों तथा यंत्रों का ज्ञान, व्यक्ति—विशेष, समय—स्थान आदि विभिन्न तथ्यों की जानकारी होना आवश्यक है।

संगीत स्वयं में अत्यंत व्यापक, प्रयोगधर्मी एवं सर्वाधिक अमूर्त कला है। वर्तमान समय में यह हमारी उच्च शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। छात्रों को इनके विभिन्न पक्षों का समुचित ज्ञान कराने के लिये इस विषय से सम्बन्धित अनेक दिशाओं पर अनुसंधान किया जाता रहा है तथा अभी भी अनेक ऐसे विषय हैं जिन पर शोधकार्य होना आवश्यक है। भारतीय संगीत व सैद्धांतिक तथा प्रयोगात्मक दोनों ही परम्परायें मिलती हैं।

परम्पराएं प्रयोगमयी कला होने के कारण इसके स्वरूप में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। सर्वाधिक अमूर्त कला होने के कारण इसके स्वरूप को सुरक्षित रखने में भी कठिनाइयां उत्पन्न होती रही हैं। सैद्धांतिक पक्ष पर शोध करना उतना कठिन नहीं है जितना की प्रयोगात्मक पक्ष पर, क्योंकि प्रयोगात्मक स्वरूप को सुरक्षित रखने के साधन लगभग सत्तर—अस्सी वर्ष पूर्व ही विकसित हुए जिनका श्रेय भारत में स्वरलिपि पद्धति की स्थापना करने वाले ‘पं० विष्णु नारायण भातखंडे तथा विष्णु दिगंबर पलुस्कर’ को जाता है। संगीत किसी विशेष समाज का प्रतिनिधित्व करने वाली कला नहीं है यह कला तो विविध मानवीय भावों को मूर्त रूप प्रदान करती है। शोधकार्य आरंभ करने से पूर्व विविध विश्वविद्यालयों द्वारा अनुमोदित तथा स्वीकृत शोध विषयों का भी सावधानी पूर्वक अध्ययन कर लेना चाहिये। पूर्व में किये जा चुके तथा वर्तमान में किये जा रहें शोधकार्यों का विश्लेषण कर उसमें नये क्षेत्रों की संभावनाओं का पता लगाना आवश्यक है जिससे नित नवीन विषयों पर शोध किया जा सके।

संगीत में शोध के लिए अध्ययन की व्यापकता, चिंतन की गहनता तथा रागात्मक सर्जनात्मकता की अपेक्षा रहती है। समाज की परिवर्तनशील परिस्थितियों में संगीत का महत्व एवं उपयोगिता भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव, तथा विविध देशों पर भारतीय संगीत का प्रभाव आदि अनेक विषय हैं जिन पर अनुसंधान किया जा सकता है। जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि संगीत में शोधकार्य के दो प्रमुख क्षेत्र हैं— प्रयोगात्मक तथा सैद्धान्तिक। दोनों ही क्षेत्रों में शोध कार्य सम्बन्धी आपार संभावनायें हैं—

प्रयोगात्मक पक्ष— राग, ताल, तथा नृत्य से सम्बन्धित अनेक प्रयोगात्मक विषयों पर किया जाता रहा है तथा इन विषयों के अनेक समानांतर विषय भी हैं जिन पर शोधकार्य किया जा सकता है उदाहरणार्थ रागों के अन्तर्गत बंदिशों का प्राचीन तथा आधुनिक स्वरूप, अप्रचलित रागों की बंदिशों का विवरण, विविध रागों में रस सौन्दर्य, मल्हार, कान्हड़ा, सारंग आदि रागों के विविध प्रकारों का अध्ययन, विविध घरानों की गायन—वादन शैलियां राग तथा विविध ऋतुएं, रागों का समयचक्र, एक थाट के अन्तर्गत आने वाले विविध रागों का संकलन, संगीत चिकित्सा के अन्तर्गत संगीत द्वारा विविध रोगों का निवारण आदि। ताल के क्षेत्र में लयकारी व ताल प्रचलित तालों का तुलनात्मक अध्ययन, शास्त्रों में वर्णित विविध तालें तथा प्रयोग में उनकी संभावनायें आदि क्षेत्र हैं। नृत्य के अन्तर्गत विविध नृत्य कलाओं की विशेषताएं, उनके प्रचार—प्रसार, विविध भावों की अभिव्यक्ति आदि अनेक क्षेत्र हैं जिन पर शोधकार्य किया जा सकता है तथा किया जा रहा है।

सैद्धान्तिक पक्ष— संगीत का सैद्धान्तिक पक्ष भी शोधकार्य हेतु अत्यंत विस्तृत है— संगीत विषयक प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन, उनका आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन, श्रुतियों पर स्वरों की स्थापना के विभिन्न मतांतर, विविध ग्राम से उत्पन्न मूर्छनाओं द्वारा रागनिर्माण की प्रक्रिया, संगीत तथा रस, सौन्दर्य, सौन्दर्य की भारतीय तथा पाश्चात्य विचारधारा, विविधकालों में संगीत का स्वरूप, लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत, संगीत का अन्य विषयों जैसे मनोविज्ञान, इतिहास आदि से सम्बन्ध, रागों के विकास का वैज्ञानिक विश्लेषण, मानव जीवन में संगीत, स्वरलिपि पद्धति का महत्व, विविध प्रांतों का लोक संगीत, विविध संगीतज्ञों का भारतीय संगीत को योगदान आदि अन्य अनेक क्षेत्र हैं। विविध प्रकार के वाद्य, उनकी उत्पत्ति तथा प्रचार—प्रसार भी शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण विषय हो सकते हैं।

इनके अतिरिक्त संगीत में विविध प्रचार—प्रसार माध्यमों तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग, संगीत शिक्षण में कम्प्यूटर प्रयोग का महत्व तथा सार्थक उपयोग आदि में भी शोध की विविध सम्भावनाएं हैं। हम देखते हैं कि संगीत विषयक सम्मेलन, विचार गोष्ठियां सेमिनार आदि, शोध कर रहें छात्रों के लिये विशेष स्थान रखती हैं। जरूरत है विविध विश्वविद्यालयों के बीच और अधिक संगीत सम्मेलनों, विचार गोष्ठियों, निबंध संकलनों के आदान—प्रदान की पारस्परिक व्यवस्था हो जिससे अधिकाधिक रूप में शोधार्थियों को विविध विद्वानों के संगीत प्रदर्शन तथा उनके संगीत सम्बन्धी विचारों को सुनने का अवसर प्राप्त होगा।

अस्तु संगीत एक बहुमुखी विषय है। अन्य विषयों की भाँति संगीत में भी मात्र शोधपरक, उच्चानुशील अनुसंधान केन्द्र खोले जा सकते हैं। निरंतर शोध में लगे रहने वाले संगीत विद्वानों के लिये भी ये केन्द्र बहुत ही उपयोगी होंगे, शोधार्थियों के लिये उपयोगी होंगे तथा संगीत से सम्बन्धित अन्य विषयों के विद्वानों तथा विद्यार्थियों के लिए भी कार्य करने का एक विस्तृत तथा उपयोगी साधन होंगे।

डॉ. किरन शर्मा
प्रवक्ता (संगीत विभाग)



तो हर्ज क्या है ?

एक दुकान बदलकर जिन्दगी बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

सोच बदलकर शख्सियत बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

जमीन से जमीर तक, जिंदगी से मौत तक,

कतरा-कतरा तक बिकता है दुनिया के बाजार में

खुद के सामान से पहचान बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

अगर बात करने से बात बन जाए,

हम सबके साथ आने से हालात बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

एक अंधे की आँख बनी, गूंगे की मैं आवाज बनी,

अनपढ़ का मैं ज्ञान बनी, बनी मान मैं पढ़े लिखों का,

जनसाधारण का अवसर बनी, कुछ करने से मेरे तेरे हम सबके,

ये देश बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

ये अनुभव है कुछ मेरे, चंद पंक्तियों में बिखरें हैं,

तलाश है ये खुद से मिलने की,

कमियों-खामियों से ऊपर उठकर कुछ विशेष बन जाने की,

संघर्ष कर कुछ सालों का, हैसियत बदल जाए तो हर्ज क्या है ?

क्या टूटकर बिखर जाना अच्छा है, या बिखरे हुए का जुड़ जाना

ये सवाल तेरे मेरे हम सबके समझ आ जाए,

फसाद दुनिया के सारे दूर हो जाए तो हर्ज क्या है ?

एक दुकान बदलकर जिन्दगी बदल जाए तो हर्ज क्या है ?



वंशिका शर्मा
(बी.ए. द्वितीय वर्ष)

एन० सी० सी० शिविर

हाँ याद है मुझे

वो पहला कैंप

जब रात भर जागकर घर की यादों में रोया करते थे,

हाँ याद है मुझे

वे दूसरा कैंप

जब कैम्प जाने के लिए बैचैन हुआ करते थे,

जब कैम्प खत्म हो जाता तो एक दूसरे के गले लगकर खूब रोया करते थे।

हाँ याद है मुझे...

वो सुबह की पी० टी परेड,

जब उस्ताद पूरे ग्राउन्ड में दौड़ाया करते थे.

जब थककर हम बैठ जाते तो उस्ताद हमें मकरा कहकर बुलाया करते थे।

हाँ याद है मुझे

वो दोपहर की क्लास

जब एन० सी० सी० स्टाफ लेक्चर दिया करते थे,

हम तो बहुत शातिर थे साहब, उसी क्लास में एक नींद बना लिया करते थे।

हाँ याद है मुझे...

वो रोल कॉल परेड

जब शाम को एस० एम० साहब ऑल ओके की रिपोर्ट लिया करते थे।

हाँ याद है मुझे

वो सिक रिपोर्ट,

जब बिना किसी बीमारी के बीमार हो जाया करते थे,

जब सारे कैडेट रूम से चले जाते, तब हम अकेले फोन में गाने सुना करते थे।

निक्की

एन० सी० सी० जीवन



जो मंजिलों पर पहुँचे हैं, अरे हम हैं वही,
सितारों से भी आगे, अरे हम हैं वही,
हम ही में ऐसी बात है, जो सब में नहीं,
हम वीर है भारत माँ के, हम रुकते नहीं,
हम रुकते नहीं, हम रुकते नहीं,
हम रुकते नहीं, हम रुकते नहीं,

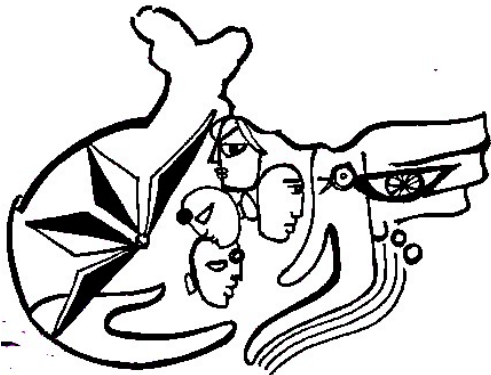
हम एन०सी०सी०, एन०सी०सी० है हम, हम एन०सी०सी०, एन०सी०सी० है हम।
हम एन०सी०सी०, एन०सी०सी० है हम, हम एन०सी०सी०, एन०सी०सी० है हम।

खुशी

स्वर्ग से सुन्दर

भारतवर्ष की शान बनो।
एकता का गान बनो।
सम्मान की पहचान बनो।
शक्ति का गुणगान बनो।
एकजुट होकर रक्षा करना ही एक मात्र मंत्र हो,
स्वर्ग से सुन्दर हमारा गणतंत्र हो ॥

अनिता भारद्वाज
(बी.एड. प्रथम वर्ष)



लघु सरिता

मैं उद्गम से निकली थी
श्वेत धारा सी,
सागर से मिलने चली थी,
पर डगर इतनी आसान कहाँ थी।
झरना बनकर गिरी थी,
मेरे कलरव से वादियाँ गूँज उठी थीं,
पर ये क्या आगे राह में चट्टानें खड़ी थीं,
उनसे संघर्ष ही मेरी नियति थी।
मैं चट्टानों पथरीली राहों से गुजर रही थी,
ये शोर कैसा था, मैं समझ ना पायी थी,
उन चट्टानों को चीरती, जब मैदानों में आ पहुँची,
तब ही 'स्वयं' को पहचान पायी थी।
मैं 'लघु सरिता' नहीं, मैं वेग थी, अद्भुत शक्ति पुंज थी,
बहती ही नहीं, मैंने तो बहाने की सामर्थ्य पायी थी,
बाहें फैलाये, अथाह सागर की प्रतीक्षा जान पायी थी,
और मैं, शान्त नीरव सी. सागर में जा समायी थी।

डॉ. मंजू सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
(जन्तु विज्ञान विभाग)



ज्यादा क्रोध मत करो

क्रोध एक स्वाभाविक मानवीय भावना है, लेकिन जब यह अत्यधिक हो जाता है, तो यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। क्रोध का प्रबंधन करना और इसे नियंत्रित करना अति आवश्यक है ताकि यह हमारी जिंदगी और संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव न डाले।

क्रोध के नकारात्मक प्रभाव

- स्वास्थ्य समस्याएं:**— अत्यधिक क्रोध से उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, और ब्रेन स्ट्रोक जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। यह हमारे इम्यून सिस्टम (प्रतिरक्षा प्रणाली) को भी कमजोर करता है, जिससे अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।
- मानसिक तनाव:**— लगातार क्रोध में रहने से मानसिक तनाव और अवसाद की संभावना बढ़ जाती है। इससे व्यक्ति की मनोस्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है, और वह चिंताग्रस्त और निराशाजनक महसूस कर सकता है।
- संबंधों पर प्रभाव:**— गुस्से में बोले गए शब्द या किए गए कार्य हमारे रिश्तों को खराब कर सकते हैं। यह हमारे परिवार, दोस्तों, और सहकर्मियों के साथ हमारे संबंधों में खटास पैदा कर सकता है।

क्रोध प्रबंधन के तरीके

- गहरी सांस लें:**— जब भी आपको क्रोध आए, गहरी सांस लेने की कोशिश करें। यह आपकी नसों को शांत करता है और आपको स्थिति को बेहतर तरीके से समझने में मदद करता है।
- विचार बदलें:**— अपने नकारात्मक विचारों को पहचानें और उन्हें सकारात्मक विचारों में बदलने की कोशिश करें। यह आपकी मानसिक स्थिति को सुधारने में मदद करता है।
- व्यायाम करें:**— नियमित व्यायाम करने से तनाव कम होता है और मूड बेहतर होता है। यह क्रोध को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।
- समय लें:**— अगर किसी स्थिति में आपको गुस्सा आ रहा है, तो कुछ समय के लिए उस स्थिति से दूर हो जाएं। यह आपको अधिक सकारात्मक और स्वस्थ दिशा में ले जाएगा और आपको मही निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

क्रोध को सामान्य स्तर पर बनाए रखना

- स्वास्थ्य संबंधी प्रयोजनों को निर्धारित करें:**— अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, जैसे— नियमित आहार, व्यायाम, और निद्रा। ये सभी क्रोध प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- सही संबंध बनाए रखें:**— अच्छे संबंध और समर्थन का होना क्रोध को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। यह आपको आत्मविश्वास और सहानुभूति प्रदान करता है।
- सकारात्मक गतिविधियों में भाग लें:**— अपने समय को क्रिएटिव या रिक्रिएटिव गतिविधियों में निवेश करें, जैसे— चित्रकला, संगीत, योग, या गार्डनिंग आदि। इन गतिविधियों से मन को शांति मिलती है और क्रोध कम होता है।
- सामाजिक सहयोग लें:**— अगर क्रोध को नियंत्रित करने में कठिनाई हो रही है, तो परिवारजनों, मित्रों, या रिश्तेदारों की सहायता लेना विचारनीय है।

इन तरीकों का अनुसरण करके आप अपने क्रोध को संभाल सकते हैं और एक सकारात्मक जीवन जी सकते हैं।

डा. शीतल पाण्डे

असिस्टेंट प्रोफेसर

(रसायन विभाग)

मुसलमान लड़की

मेरे सामने एक लड़की खड़ी थी, आँखें लाल, काजल बिखरी पड़ी थी।
वो मौन थी न जाने कौन थी, लाल चूड़ा और जुल्फे बिखरी पड़ी थी।

लगता था वो इश्क की मारी, सब से हारी, घर से लापता
लब खामोश, धड़कनों में रवानी, वो बेसुध—सी लाश खड़ी थी।

और मेरे पूछने पर खुद को मुस्लमान बताया उसने
लगता था उसकी आँख किसी हिंदू लड़के से लड़ी थी।

धर्म—ईमान जात—पात ऊँच—नीच सब कुछ टुकरा कर

वो बनकर मुंतजिर, किसी के इंतजार में खड़ी थी।

हुआ यूँ कि इंतजार करते—करते बीत गया दिन सारा

और अगले दिन उसकी तस्वीर अखबार में छपी थी।

भरे चौक पर लड़का लड़की को जिंदा जलाकर मार डाला

उस दिन मजहब और धर्म के आगे इंसानियत भी मरी थी।



कुमार नवीन
शोधार्थी
(हिंदी विभाग)

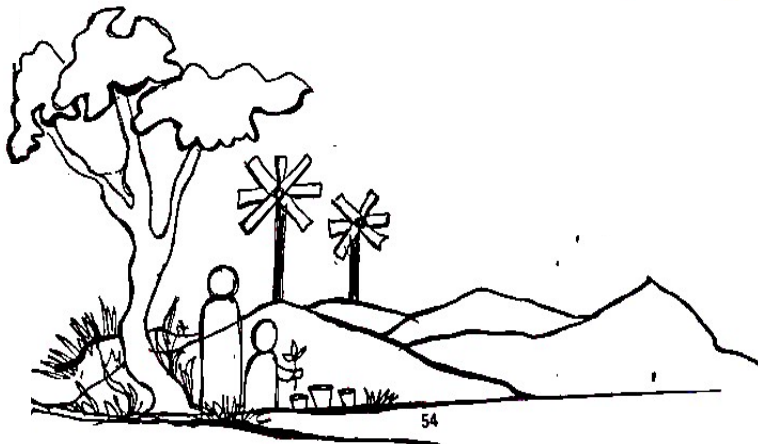
थोड़ा सा प्रयास और स्वस्थ पर्यावरण

हम सभी जानते हैं कि एक स्वस्थ पर्यावरण का होना हमारे लिए कितना आवश्यक है। कितनी सारी गतिविधियाँ और प्रोग्राम्स, स्कूल और कॉलेज स्तर पर पर्यावरण की जागरूकता के लिए कराए जाते हैं। लेकिन कुछ तो ऐसा है जो अपने स्तर पर हर कोई पर्यावरण के लिए योगदान कर सकता है फिर चाहे वह गृहिणी हो, कामकाजी व्यक्ति हो, छात्र-छात्राएं हो या कोई और।

उदाहरण के लिए—

- घर में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों को लगाना चाहिए। जिससे न केवल घर और घर के आसपास का वातावरण शुद्ध होगा बल्कि उस स्थान पर जैव विविधता में भी वृद्धि होगी।
- पौधों में जैविक खाद का इस्तेमाल करना ताकि उपज और मिट्टी दोनों की गुणवत्ता बनी रहे।
- बिजली बचाना तथा सौर ऊर्जा जैसे प्रदूषण मुक्त विकल्पों का उपयोग करना। थोड़ी दूर चलने के लिए पैदल या साइकिल का उपयोग करना।
- पानी का जरूरत के अनुसार ही उपयोग करना।
- प्लास्टिक का उपयोग कम करना। आसानी से गलने वाली चीजों का इस्तेमाल करना।
- चीजों की जरूरत से ज्यादा खरीदारी न करना अर्थात् अधिक उपभोक्तावादी ना होना। क्योंकि अधिक उपभोक्तावादी होने से धरती पर विभिन्न प्रकार के उत्पादों की मात्रा बढ़ती जाती है।
- घर के कचरे को सावधानीपूर्वक अलग-अलग करना, जैसे— गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग करना। सब्जियों और फलों के छिलके जानवरों को खिलाने के लिए या फिर जैविक खाद बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। कागज, काँच, लोहा, प्लास्टिक आदि इकट्ठा करके कबाड़ी को दे जिससे इस सामान को सही जगह पहुंचाया जा सकता है।

इस तरह छोटे-छोटे प्रयासों से हम पर्यावरण को बेहतर बनाने में योगदान कर सकते हैं।



डॉ. शैलजा
असिस्टेंट प्रोफेसर
(अर्थशास्त्र विभाग)

राष्ट्रभाषा हिंदी बाधाएँ, चुनौतियाँ और समाधान

संविधान की दृष्टि से हमारे देश की राजभाषा हिंदी हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी अपने दायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक कर रही थी। विश्व के सभी देशों में वहाँ की राजभाषा को ही राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त है तो भारत में राज भाषा को संवैधानिक स्तर पर राष्ट्रभाषा घोषित न किया जाना सर्वथा गंभीर प्रश्न है।

आज हिंदी प्रगति के पथ पर अग्रसर है किंतु उसका प्रगति पथ निरापद नहीं है। हम सब भारतीयों का कर्तव्य है कि हम हिंदी के समक्ष उपस्थित बाधाओं और चुनौतियों को ठीक से पहचान कर उनका निराकरण करें। हिंदी के विरुद्ध प्रचार आज एक बड़ी चुनौती है हिंदी बोलना हिंदी में लिखना पढ़ना कठिन कार्य हैं। हिंदी भारत की सम्पर्क भाषा नहीं है, हिंदी समृद्ध भाषी नहीं है, हिंदी ज्ञान की भाषा नहीं है।

हम अपने युवाओं को हिंदी अपनाने और उस पर गर्व करने के लिए प्रेरित करने के स्थान पर हम उन्हें अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में भेज कर हिंदी से दूर कर रहे हैं।

रहीम जी के अनुसार—

“काज कुछ और है, काज सरे कुछ और ।

रहिमन भंवरी के भय परे, नदी सिरावत मौर।।”

हिंदी के विरुद्ध एक बड़ी भ्रांति यह भी है कि हिंदी ज्ञान की भाषा नहीं है, हिंदी भाषी विद्वान भी इस भ्रांति के शिकार है।

श्रीमद्भागवतगीता के तृतीय अध्याय में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं —

यद्यदाचरित, श्रेष्ठस्तस्तदेवेतरो जनः।

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनवर्तते ।।

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो—जो आचरण करते हैं अन्य पुरुष भी उसी के अनुसार व्यवहार करते हैं लोग जनसाधारण भी उसी का अनुसरण करते हैं।

अंग्रेजी की 'फूट डालो राज करो' की नीति ने हिंदी को निर्बल बनाने का प्रयास किया है परंतु संविधान की आठवीं अनुसूची में हिंदी को सफल बनाया गया है अर्थात् हिंदी को संविधान में स्थान दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिंदी की ये बाधाएँ और चुनौतियाँ अत्यंत गंभीर हैं, किंतु इसका समाधान असाध्य नहीं है। विश्वपटल पर हिंदी के बढ़ते कदम इस तथ्य के साक्षी हैं।



राशि शर्मा
अंशकालीक प्रवक्ता
(हिंदी विभाग)

कुछ दोस्त

कुछ दोस्त हवा की तरह होते हैं,
दिखाई न दें लेकिन एहसास साथ होता है।
कुछ दोस्त हाथ पकड़ कर रखते हैं कि हम खो न जाये,
कुछ हाथ छोड़ देते इसलिये, कि हम खुद को ढूँढना सीख जायें।
कुछ दोस्त हर वक्त साथ देते हैं,
कुछ साथ छोड़ देते कि हम हालातों से लड़कर जीतना सीख जायें।
कुछ दोस्त खामोश रहते हैं, उस वक्त हमें सुनने के लिये,
कुछ बेसब्र हो जाते है, हमारे प्रति न्याय करने के लिये।
कुछ की नजरों में अभी जरूरत है, खुद को बदलने की,
कुछ कहते तुम ऐसे ही ठीक हो क्या जरूरत है, किसी और की तरह बनने की।
कुछ कहते हैं, सहना बेहद गलत है,
कुछ कहते है, प्रतिक्रिया की क्या जरूरत है।
कुछ कहते है, सबक सिखाना जरूरी है,
कुछ कहते सब बेकार है, तुम सीख लो बस इतना ही काफी है।
कुछ दोस्त वृक्ष की तरह होते है,
जो धरातल से जुड़े रहने का सबब देते हैं।
कुछ सागर की लहरों की तरह जीने का मर्म सीखा जाता है।

लक्ष्मी

असिस्टेंट प्रोफेसर
(राजनीति विज्ञान विभाग)



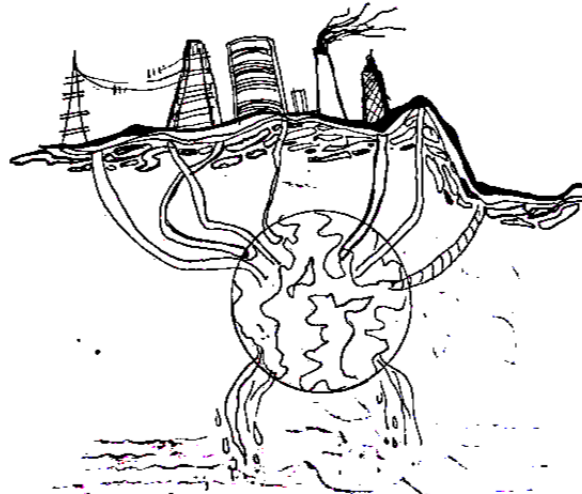
ग्लोबल वार्मिंग

Global Warming

‘ग्लोबल वार्मिंग’ आज के परिवेश में एक गंभीर समस्या बनकर उभरी हैं। जिसका परिणाम हितकारी नहीं हैं। अतः आवश्यकता है कि हम इसको सही तरह से समझकर अपने आस-पास के पर्यावरण को सुरक्षित रखकर इस समस्या से बचे। सामान्यतः ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी के वातावरण के समग्र तापमान में हो रही वृद्धि को संदर्भित करता है। विभिन्न गतिविधियाँ हो रही हैं, जो धीरे-धीरे तापमान बढ़ा रही हैं। ग्लोबल वार्मिंग ग्लेशियरी को तेजी से पिघला रहा है। यह हमारी पृथ्वी के साथ-साथ ही इंसानों के लिए भी बेहद हानिकारक है।

अतः आवश्यकता कि हम इस समस्या को पहचानें एवं इसके निवारण हेतु कोई कदम उठाए। इसके लिए आवश्यक है ग्लोबल वार्मिंग का कारण जानने की। ज्वालामुखी विस्फोट, ऑटोमोबाइल और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से ग्लोबल वार्मिंग का खतरा बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा अतिरिक्त खनन, एवं वनों की कटाई इसका एक मुख्य कारण माना गया है। अतः इसके निवारण हेतु आवश्यक है कि हम वृक्षारोपण करें। वनों की कटाई पर रोक लगानी चाहिए। एवं वन संपदा को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। हम अपने वातावरण को साफ-सुथरा एवं हरा-भरा रखें। ज्यादा प्लास्टिक का उपयोग न करें। रिसाईकल व्यवस्था पर ध्यान दें। यह कार्य करके हम ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या से बच सकते हैं।

प्राची
(एम.ए., राजनीति विज्ञान विभाग)



कला संकाय की विविध गतिविधियाँ



कला संकाय की विविध गतिविधियाँ



विज्ञान संकाय की विविध गतिविधियाँ



विज्ञान संकाय की गतिविधियाँ



वाणिज्य विभाग की विविध गतिविधियाँ



शिक्षा विभाग की विविध गतिविधियाँ



शारीरिक शिक्षा एवं क्रीडा विभाग की विविध गतिविधियाँ



National sports Day.



CCS university I/C basketball championship



Bronze Medal in CCS university I/c Athletic championship



International Yoga Day



CCS university I/U North Zone basketball championship.



ARHAM DHYAN YOG FIT INDIA WEEK 2021 IS ORGANISED BY RACHINIA COLLEGE OF EDUCATION

एन० सी० सी० की उपलब्धियाँ



एन0 एस0 एस0 एवं रेंजर्स की उपलब्धियाँ





महाविद्यालय में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज कराने वाली छात्रायें

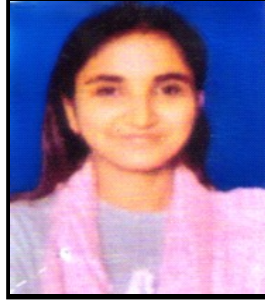


महाविद्यालय में सत्र 2023-24 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रायें



Bharvi Arora

B.Voc Yogic Science - Sem – VI
Highest Marks 79%



Shradha Chaudhary

English Dept.- M.A I year,
Highest Marks 71.87%



Tanu Kashmi

Hindi Dept.- M.A IV Sem
Highest Marks 78.50%



Anshul Yadav

Chemistry Dept.- M.Sc
Highest Marks 77.4%



Rashi Chauhan

Geography Dept.- M.A
Highest Marks 86.95%
Second Rank In University



Ragini Singh

History Dept.- M.A I year
Highest Marks 79.50%



Farozan Yunus

History Dept.- M.A II year
Highest Marks 75.33%



Mahak

Music Dept.- M.A II year
Highest Marks 87.50%
Third Rank in University



Lokesh

Music Dept.- M.A II year
Highest Marks 88.30%
Second Rank in University



Shivani Sandhu

Home Science Dept.- M.A II Sem
Highest Marks 79%



Isha Verma

Sociology Dept.- M.A
Highest Marks 71.66%



Ms. Srishti

Drawing & Painting Dept.- M.A
II Highest Marks 90.90%



Prerna
B.Ed. II year
Highest Marks 82.57%
(First Position)



Srishti Tyagi
B.Ed. II year
Highest Marks 82.14%
(Second Position)



Vidushi Chauhan
Political Science Dept.- M.A
Highest Marks 81%



Pragya Chaudhary
Zoology Dept.
Highest Marks 83.45%



Manisha Yadav
Biology Dept.- B.Sc
Highest Marks 77.50%



Deviya
Sanskrit Dept. - M.A I year
Highest Marks 80%



Amrita
Sanskrit Dept. - M.A II year
Highest Marks 82.4%



Shifa Abrar
Botany Dept.- M.Sc
Highest Marks 82%



Shivani Khusvah
Home Science Dept.- M.A
Highest Marks 93.9%



Ritu
Home Science Dept.- B.A
Highest Marks 95.65%



Rupal Rana
Economics Dept.- M.A II Sem
Highest Marks 75.13%

महाविद्यालय के गर्व - हमारी छात्रायें

NCC Achievers (2023-24)

@ National Level

**(OTA) Officers Training
Academy, Chennai- 2023**



UO Prachi Balian

**(SSB) Service Selection
Board - 2023**



SUO Keerti Thakur

(EBSB) Ek Bharat Shreshtha Bharat II (Jhansi)- 2023



Cadet Riya



Sgt. Prachi Tyagi

(SNIC) Special National Integration Camp, Delhi - 2024



Sgt. Ishika Chaudhary



Cpl. Khushi

MH Attachment Camp - 2023



Cadet Riya



Cdt. Nikki



Cdt. Shivani



Cdt. Shagun Singh



Cpl. Annu



L/Cpl. Khushi Singh



Cpl. Preeti Vashistha



Cdt. Dolly Upadhyay



Cdt. Stuti Jain

@ State Level

IGC - 2023



Sgt. Ishika Chaudhary



**Sgt. Reenu Kapasia
Delhi Police - 2023**

महाविद्यालय के विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ



महाविद्यालय के विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ





संस्कृत
विभाग

सम्पादकीयः



कर्म बिना न जीवनम् । कर्म एव जीवनम् । मानवजीवनं हि वस्तुतः कर्मप्रधानं वर्तते । मानवजीवनं हि पुरुषार्थसाधनं वर्तते । पुरुषैरर्थ्यन्ते याच्यन्ते प्रार्थयन्ते ये ते पुरुषार्थाः अतएव पुरुषार्था एव मानवजीवनस्य लक्ष्यभूताः । धर्मार्थकाममोक्षाश्चत्वारः पुरुषार्थाः सन्ति । एतेषां सर्वेषां पुरुषार्थानां प्राप्तेः साधनानि कर्माण्येव भवन्ति । कर्म बिना पुरुषार्थानां प्राप्तिरसंभाविनी अत एव स्वजीवनस्य साफल्यहेतोः कर्मात्यावश्यकम्, कर्मणा परित्यागेन मानवा निजपुरुषार्थप्राप्तौ समर्था न भवन्ति । प्रकृतिरपि मानवान् कर्मकरणाय प्रेरयति अत एव सर्वे प्राणिनः कर्मपरायणाः स्युः ।

भगवता श्रीकृष्णेन गीतायामुक्तम् –

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।

कार्यते ह्यावशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥

संसारोऽयमेकं महत् कर्मक्षेत्रमस्ति तद्यथा स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः । कर्मभिः मानवः प्रभुपूजनं विधाय वास्तविकां सिद्धिं संलभते । स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।

कर्मकरणं नाम जीवनस्यानिवार्यो धर्मः । प्रवाहो नद्याः स्वाभाविक कर्मास्ति, दाहो वह्नेः कर्म, गमनं वायोः कर्म एवमेव मानवजीवनस्यापि धर्मः कर्मकरणमेव । कर्म विहाय तु जीवनस्य जीवनत्वमेव न । अकर्मण्यस्य पुरुषस्य शरीरयात्राऽप्यसंभाविनीत्याह भगवान् श्रीकृष्णः –

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।

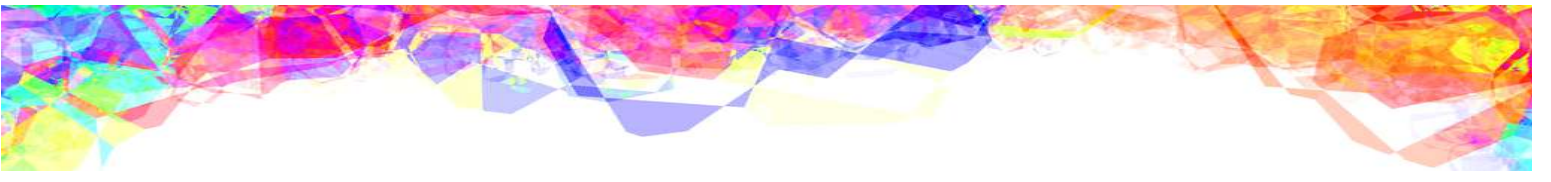
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ॥

अस्माद्विपरीतं अतएव –

चरन् वै मधुं विन्दति चरन् स्वादुमदुम्बरम् ।

सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन् ॥

प्रो० पूनम लखनपाल
(संस्कृतविभागस्य)



संस्कृत विभागः

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्ययेतोऽस्ते न कर्म लिप्यते नरः ॥

ईशावास्योपनिषद्-2

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय ।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

श्रीमद्भगवद्गीता-2 47-48



मङ्गलम्

अहं नमामि मातरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।
स्वयं पठामि सर्वदा
प्रियं वदामि सर्वदा ।
हितं करोमि सर्वदा
शुभं करोमि सर्वदा ।
विभुं नमामि सादरम्
गुरुं नमामि सादरम् ।
चलामि नीति सत्पथे
हरामि मातृभूव्यथाम् ।
दधामि साधुताव्रतम्
सृजामि कीर्तिसत्कथाम् ।
प्रभुं नमामि सादरम्
अहं नमामि मातरम् ॥
(पञ्चचामर छन्दसि)

अलका
(एम.ए. द्वितीय वर्षस्य)





वन्दना



विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव

यद् भद्रं तन्नः आसुव ॥

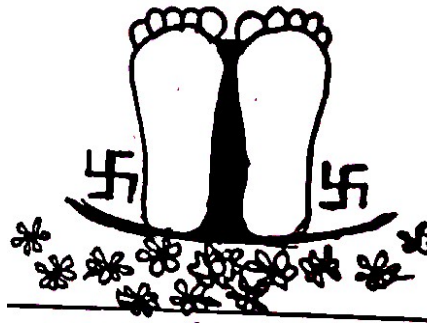
ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ॥
सह नावतु, सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ॥
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥

मनीषा सिंह
(एम.ए. प्रथमवर्षस्य)

पादमी भक्तिः

कष्टं हरतीह मानवानां तुष्टः प्रसीदति कीर्त्तनेन देवः ।
लक्ष्मीपतिरत्र यः प्रमोदैर्भक्त्या प्रभुं नमतीह तं च विष्णुम् ॥1॥ ।
नत्वा स्वगुरुं मुदैव गोष्ठ्यां पादमी च तां कथितां नु भव्यभक्तिम् ।
भक्त्या निजशोधपत्ररूपां ध्यानैर्नुतां खलु वक्ति पूनमेयम् ॥2॥ ।
काष्ठं खलु पावकः स्वतापैर्भस्मीकरोति यथा तथा हि विष्णुः ।
भक्त्या स्मरणेन कीर्त्तनेन ध्यानेन नो हरतीह पापजालम् ॥3॥ ।
यज्ञैरिह कर्मभिस्तपोभिर्ध्यानैस्तथा न जपैर्व्रतैश्च तीर्थैः ।
अन्तःकरणं भवेत् सुशुद्धं ध्यातो यथा कुरुते हि विष्णुभक्तिः ॥4॥ ।
भक्तिः श्रुतिगोचरी न यावत् भ्रान्तः सदा भ्रमतीह मृत्युचक्रे ।
जीवो बहुदेहधारणार्थं नित्यं च जीवति कष्टभावनाभिः ॥5॥ ।
भावैर्विविधैर्विभाति भक्तिः कायेन सा वचसा तथा मनोभिः ।
भातीह सुधेव विष्णुभक्तिर्जीवाय सा खलु मोक्षदायिनी च ॥6॥ ।
भक्तिस्त्रिविधाऽत्र लौकिकीयं याध्यात्मिकी च सुवैदिकी च तद्वत् ।
अन्या शुभमानसीह मन्त्रैः या वाचिकी नु च कायिकी च भक्तिः ॥7॥ ।
भक्तिर्भुवि सात्त्विकी तथेयं या राजसी कथिता च तामसी च ।
पादमी बहुचर्चिता हि भक्तिर्वर्गेषु सा सकला त्रिधा विभक्ता ॥8॥ ।
या वा श्रवणादिभिर्विभिन्ना ख्याताऽन्यथाऽन्यपुराणजा प्रसिद्धा ।
पादमी नवधा स्वरूपभिन्ना सा ह्याप्यते नु कथं स्वयं निगूढा ॥9॥ ।
भवतैः कथिता सदा कनिष्ठा या मध्यमाऽथ मुदोत्तमा हि भक्तिः ।
सेयं ननु सेव्यभावमाप्ता पादमी प्रसिद्धतरा विभाति लोके ॥10॥ ।

प्रो. पूनम लखनपाल



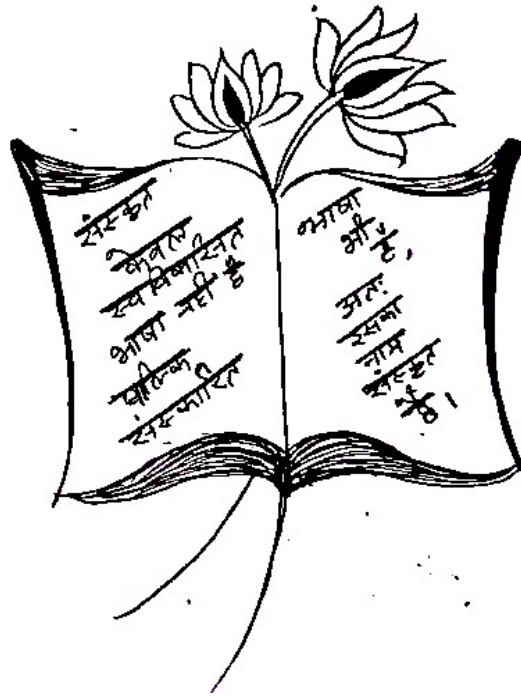
संस्कृत भाषायाः महत्त्वं

व्याकरणसम्बन्धिदोषरहिता व्यवस्थितक्रिया कारकसमन्विता या भाषा सा संस्कृतभाषा कथ्यते । सम्प्रति अस्माकं देशे अनेकाः भाषाः प्रचलिताः सन्ति । यथा हिन्दी – बंगाली – मराठी – गुजराती – उड़िया – असमी प्रभृतयः । सर्वासां भाषाणां जननी संस्कृतभाषा एव अस्ति । संस्कृतभाषया एव एतासां भाषाणाम् उत्पत्तिः । अस्माकं भारतीयानां समस्तं साहित्यमपि संस्कृतभाषायामेव वर्तते । अस्माकं सर्वप्राचीनग्रन्थाश्चत्वारो वेदाः उपवेदाः, वेदाङ्गानि, दर्शनशास्त्राणि, धर्मशास्त्रम्, अर्थशास्त्रम्, कामशास्त्रम्, पुराणानि, उपपुराणानि, काव्यं नाटकं चेत्यादि समग्रमपि विशालम् ज्ञानविज्ञानवैभवं संस्कृतभाषायामेव निबद्धं वर्तते ।

भारतस्य सम्पूर्ण इतिहासः संस्कृतभाषायामेव निबद्धो वर्तते । देवासुराणाम् आख्यानं, अवताराणां कथाः महापुरुषाणां चरित्राणि, राजनैतिकानां वृत्तान्ताः वंशोपवंशानां विस्तृतं वर्णनं भारतीयानां विदेशेषु गमनं स्वसंस्कृतेः प्रचारश्चेति, सर्वमपि भारतीयमितिवृत्तं संस्कृतस्यैव रामायणमहाभारतपुराणप्रभृतिषु ग्रन्थेषु समुल्लिखितं वर्तते ।

अनुराधा

(बी.ए. प्रथमवर्षस्य)



गीतामृतम्

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः ॥
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः ॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टौ येन केनचित्
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥



निधि पाण्डेया
(एम.ए. द्वितीयसत्रस्य)

महामना मदनमोहन मालवीयः

महामनस्विनः मदनमोहनमालवीयस्य जन्म प्रयागे प्रतिष्ठितपरिवारेऽभवत् । अस्य पिता पण्डितब्रजनाथ मालवीयः संस्कृतस्य सम्मान्यः विद्वान् आसीत् । अयं प्रयाग एव संस्कृतपाठशालायाम् राजकीयविद्यालये म्योरसेण्ट्रलमहाविद्यालये च शिक्षां प्राप्य अत्रैव राजकीयविद्यालये अध्यापनम् आरब्धवान् । युवकः मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्णभाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत् । अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाक पदवीं प्राप्य देशस्य सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः । तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामुत्तीर्य प्रयागस्थे उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत् । विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदारव्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशानां च सम्मानभाजनमभवत् ।

महापुरुषाः लौकिकप्रलोभनेषु बुद्धाः नियतलक्ष्यान् कदापि भ्रश्यन्ति । देशसेवानुरक्तोऽयं युवा उच्चन्यायालयस्य परिधौ स्थातुं नाशक्नोत् । पण्डितमोतीलालनेहरूलालालाजपतरायप्रभृतिभिः अन्यैः राष्ट्रनायकैः सह सोऽपि देशस्य स्वतन्त्रतासंग्रामेऽवतीर्णः । देहल्यां त्रयोविंशतितमे कांग्रेस्याधिवेशनेऽयम् अध्यक्षपदमलङ्कृतवान् । 'रोलट एक्ट' इत्याख्यजत् विरोधेऽस्य ओजस्विभाषणं श्रुत्वा आङ्ग्लशासकाः भीताः जाताः । बहुवारं कारागारे निक्षिप्तोऽपि अयं वीरः देशसेवाव्रतं नात्यजत् ।

हिन्दीसंस्कृताङ्ग्लभाषासु अस्य समान अधिकारः आसीत् । हिन्दीहिन्दुहिन्दुस्थानानामुत्थानाय अयं निरन्तरं प्रयत्नमकरोत् ।

शिक्षयैव देशे समाजे च नवीनः प्रकाशः उदेति अतः श्रीमालवीयः वाराणस्यां काशीविश्वविद्यालयस्य संस्थापनमकरोत् । अस्य निर्माणाय अयं जनान् धनम् अयाचत् जनाश्च महत्यस्मिन् ज्ञानयज्ञे प्रभूतं धनमस्मै प्रायच्छन्, तेन निर्मितोऽयं विशालः विश्वविद्यालयः भारतीयानां दानशीलतायाः श्रीमालवीयस्य यशसः च प्रतिमूर्तिरिव विभाति । साधारणस्थितोऽपि कोऽपि जनः महतोत्साहेन मनस्वितया पौरुषेण च असाधारणमपि कार्यं कर्तुंक्षमः इत्युद्दर्शयत् मनीषिमूर्धन्यः मालवीयः । एतदर्थमेव जनास्तं महामना इत्युपाधिना अभिधातुमारब्धवन्तः ।

महामना विद्वान् वक्ता धार्मिको नेता, पटुः पत्रकारश्चासीत् । परमस्य सर्वोच्चगुणः जनसेवैव आसीत् । यत्र कुत्रापि अयं जनान् दुःखितान् पीड्यमानांश्चापश्यत् तत्रैव सः शीघ्रमेव उपस्थितः सर्वविधं साहाय्यं च अकरोत् । प्राणिसेवा अस्य स्वभाव एवासीत् ।

अद्यास्माकं मध्येऽनुपस्थितोऽपि महामना मालवीयः स्वयशसोऽमूर्तरूपेण प्रकाशं वितरन् अन्धे तमसि निमग्नान् स्वस्वभावेन जनान् सन्मार्गं दर्शयन् स्थाने स्थाने, जने जने उपस्थित एव ।

जयन्ति ते महाभागा जनसेवापरायणाः ।

जरामृत्युभयं नास्ति येषां कीर्तितनोः क्वचित् ।।



तरंग
(बी.ए. प्रथमवर्षस्य)

आधुनिकयुगे संस्कृतस्योपयोगिता

सूचनां प्राप्तुं जन्मत एव मानवस्य स्वभाव अस्ति एतदेव कारणं यत् अद्य अस्माकं पुरतः एतावन्तः आविष्काराः अभवन् । यत् अस्माकं जीवनं अतीव सुलभतया गच्छति, परन्तु कस्यापि कार्यस्य कृते सर्वाधिकमहत्त्वपूर्णं वस्तु भाषा एव भवति ।

वयं भाषां विना अस्माभिः कृतं किमपि कार्यं अन्येभ्यो वक्तुं न शक्नुमः । अद्य विश्वे षट्सहस्रनवशतम् प्रयुक्ताः सन्ति । परन्तु एतेषां भाषाणां का जननी इति भवता कदापि चिन्तितम् वा? नहि । अद्य अहं भवदभ्यो विश्वस्य प्राचीनतमभाषायाः, तस्याः वैज्ञानिकतायाः महत्त्वं च विषये किञ्चित् सूचनाम् दातुम् प्रयासं करोमि ।

संस्कृतं भारतस्य शास्त्रीयभाषा अस्ति । सा देववाणी सुरभारती च इत्यपि कथ्यते । अस्याः अक्षराणि ऋषिभिः गहनाध्ययनान्तरं लोकेन प्राप्तानि । एतदेव न केवलम् देशस्य अपितु विश्वस्य प्रगतौ सभ्यतायां च संस्कृतभाषायाः महत्त्वपूर्णं योगदानम् अस्ति ।

भारते सहस्राणि वर्षपूर्वं संस्कृतं भाष्यते स्म । पाणिनिः पञ्चशतानि वर्षपूर्वं व्याकरणपुस्तकं संस्कृते लिखितवान् । अस्य नाम अष्टाध्यायी अस्ति । संस्कृतविदां मते सौरकुटुम्बस्य शिरस्वरूपसूर्यस्य एकतः नवकिरणाः निर्गच्छन्ति, ते च चतुर्भ्यः पार्श्वेभ्यः पृथक् पृथक् निर्गच्छन्ति । एवं प्रकारेण षट्त्रिंशत् किरणाः आसन् । एतेषां षट्त्रिंशत् किरणानाम् उपरि संस्कृते षट्त्रिंशत् स्वराः कृताः ।

नासावैज्ञानिकानां मते यदा ते अन्तिक्षयात्रिकाणां कृते सन्देशं प्रेषयन्ति स्म तदा तेषां वाक्यानि विपर्ययानि भवन्ति स्म । अस्मात् कारणात् प्रयुक्तस्य संदेशस्य अर्थं परिवर्तते । सः बहवः भाषाः प्रयुक्तवान् किन्तु प्रत्येके समये एतादृशी समस्या आगता । अन्ते सः संस्कृतेन सन्देशं प्रेषितवान् यत संस्कृतवाक्यानि विपर्यस्तेऽपि अर्थं न परिवर्तयन्ति ।

अधुना चन्द्रयानतृतीय इत्यस्य सफलतायाः इसरो प्रमुखः एस सोमनाथः महोदय इति दावान् अकरोत् यत् विज्ञानस्य सिद्धान्ताः वेदभ्य एव आगताः ।

अरबीभाषा कण्ठेन, आङ्ग्लभाषा अधरेण एव भाष्यते इति कथ्यते परन्तु संस्कृतभाषायां वर्णमाला स्वरध्वनिनाधारेण — क वर्ग— चवर्ग—ट वर्ग, त वर्ग—पवर्ग, ऊष्म, अन्तस्थ— वर्गे विभक्ताः सन्ति ।

नासासंस्थायाः प्रतिवेदनानुसारं अमेरिकादेशः एतादृशाः पषठ — सप्तम पीढीयाः सुपरकम्प्युटर इत्येतत् सज्जीकरोति, ये संस्कृताधारिताः भवन्ति । शोधसङ्गठनम् नासा इत्येन 1987 तमे वर्षे संस्कृत एव सङ्गणकानां कृते उत्तमभाषा इति घोषिता आसीत्, तस्मात् कारणात् अद्यतनयां संस्थायां संस्कृते निरन्तरं संशोधनं क्रियते ।

यूनेस्को इत्येन मानवतायाः अमूर्तकविरासतां सूचीयां संस्कृतवैदिकजपं योजयितुं अपि निर्णयः कृतः अस्ति । संस्कृतभाषायां वैदिकजपस्य मनुष्यस्य मनसि, शरीरे, आत्मनि च गहन प्रभावो भवति इति यूनेस्को संस्थया स्वीकृतम् अस्ति ।

दिव्या

(एम.ए. द्वितीयवर्षस्य)

महाकविः कालिदासः

कविकुलगुरुं कालिदासं अस्मिन्युगे को न जानाति । विद्वद्भिः विश्वस्य साहित्यकारेषु अस्य गणना कृता । बहवः विद्वांसः उज्जयिन्यामेव अस्य जन्मभूमिं मन्यन्ते । अनेनैव हेतुना तस्य कृतिषु उज्जयिन्याः वर्णनं संजातम् । उक्तम् च विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु कालिदासः एकः । कथ्यते—कालिदासः महामूर्खः आसीत् । राज्ञः शारदानन्दस्य विद्योत्तमा नाम्नी एका विदुषी कन्या आसीत् । स्वविद्यया अतिदर्पशीला आसीत् । सा प्रतिज्ञावती यत् शास्त्रार्थं यः मां पराजेष्यति तेन सह विवाहं करिष्यामीति । तां प्रतिज्ञां श्रुत्वा बहवः विद्वांसः आगच्छन् तया सह शास्त्रार्थं सर्वे पराजिता अभवन् । ईर्ष्यावशात् ते राजकन्यायाः विवाहं महामूर्खेण सह सम्पादयितुं व्यचारयन् । ते मूर्खस्य अन्वेषणार्थं निर्गताः । सहसा कस्यचिद् वृक्षस्य शाखायां स्थित्वा तां शाखां कर्तयन्तम् एकं मूर्खम् अपश्यन् । तस्मात् वृक्षात् अधः अवतीर्य ते अवदन् तं भो पुरुष । वयं परमसुन्दर्या राजकन्यायाः सह तव विवाहं कर्तुमिच्छामः स्वगुरुरूपेण तव परिचयं दास्यामः परम् त्वं किमपि न वक्ष्यसि । तं मूर्खं नीत्वा विद्वांसा । राजकन्यायाः समीपम् आगतवन्तः अवदन् च । अस्माकं गुरुः शास्त्रार्थम् आगतः किन्तु अधुना मौनव्रती अस्ति । अतएव हस्ताभ्यां संकेतमात्रमेव दास्यति । वयं तान् संकेतान् ज्ञात्वा वाण्या उत्तरं दास्यामः । शास्त्रार्थः प्रारब्धः । विद्योत्तमा मौनेन संकेतेन गूढं प्रश्नं पृच्छति । कालिदासः मौनेन संकेतेन उत्तरं ददाति । विद्योत्तमा एकां अंगुलीं दर्शयति अर्थात् ब्रह्म एक इति । परन्तु कालिदासो विचारयति यत् सा मम एकं नेत्रं विदारणविषये कथयति । सः क्रोधेन अङ्गुलीद्वयं प्रदर्शयति अहं तव नेत्रद्वयं भङ्क्ष्यामि । विद्योत्तमा पंचांगुल्यः दर्शयति अर्थात् सृष्टौ पंचतत्त्वानि सन्ति । कालिदासो विचारयति यत् सा कपोले प्रहर्तुम् इच्छति । सः क्रोधेन मुष्टिकां प्रदर्शयति अर्थात् अहं मुष्टिकाप्रहारं करिष्यामि । पण्डितैः संकेतानां या व्याख्या कृता तया विद्योत्तमा अतीव प्रभाविता अभवत् । सः कालिदासेन सह विवाहं कर्तुं तत्परा अभवत् ।

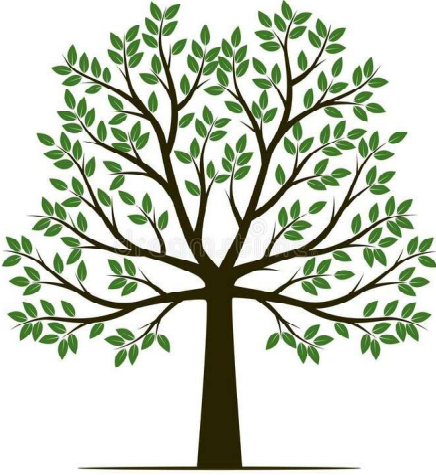
तानिया

(एम.ए. प्रथमवर्षस्य)



जयतु वृक्षं जयतु वृक्षम्

श्रूयताम् सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम् तथा वृक्षारोपणम् ।
वृक्षस्यास्ति सुन्दरम् याति मूलं बहुदूरम्
मूलेऽपि अन्नम् तस्य काष्ठं कठिनम्
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम् ।
पर्णेषु भवति हरितद्रव्यम्
अतो हि अस्ति रे पर्णं हरितम् ।
पुष्पम् सुन्दरम्, अतीव मोहकम्
पुष्पम् तस्य भवति रे देवपूजार्थम् ।
फलम् रसमयं, तस्य फलं स्वादपूर्णम्
फलम् हि अस्ति रे खगस्य अन्नम्
जलवातप्रकाशैः निर्माति अन्नम्
तेन हि अन्नेन वर्धते नित्यम्
वृक्षस्य दृश्यताम् सर्वम् हि कार्यम्
जीवनं तस्यास्ति परोपकारार्थम् ।
वृक्षे हि कुर्वन्ति विहगाः नीडम्
केचित् तु कुर्वन्ति काष्ठे हि छिद्रम्
आतपे तिष्ठति वर्षानुवर्षम्
अन्येषां करोति छायाप्रदानम्
वृक्षो नैव अस्ति रे स्वकीयं फलम्
सर्वम् हि अंगम् तस्य लोकहितार्थम्
जनाः न स्मरन्ति तस्य उपकारम्
बहुधा कुर्वन्ति वृक्षच्छेदनम् ॥
मास्तु रे मास्तु ईदृशं पापम्
यथाशक्ति क्रियताम् वृक्षारोपणम् ॥
नैव रे नैवास्तु वृक्षकर्तनम्
सर्वे हि कुर्वन्तु तत्संवर्धनम् ॥
यथाशक्ति क्रियताम् वृक्षारोपणम् ॥



तानिया

(एम.ए. प्रथमसत्रस्य)

भारतीयसन्तगीतिः

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्
मृदुं गाय गीतिं ललितनीतिलीनाम् ।
मधुरमंजरीपिंजरीभूतमालाः
वसन्ते लसन्तीह सरसा रसालाः
कलापाः ललितकोकिलाकाकलीनाम् ॥1॥ निनादय.....
वहति मन्दमन्दं सनीरे समीरे
कलिन्दात्मजायास्सवानीरतीरे
नतां पतिमालोक्य मधुमाधवीनाम् ॥2॥ निनादय.....
ललितपल्लवे पादपे पुष्पपुंजे
मलयमारुतोच्चुम्बिते मंजुकुंजे,
स्वनन्तीन्ततिम्प्रेक्ष्य मलिनामलानाम् ॥3॥ निनादय.....
लतानां नितान्तं सुमं शान्तिशीलम्
चलेदुच्छलेत्कान्तसलिलं सलीलम्
तवाकर्ण्य वीणामदीनां नदीनाम् ॥4॥ निनादय.....

शिवाँगी चपराना
(बी.ए. तृतीय सत्रस्य)



विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

जडजङ्गमात्मकेऽस्मिन् विविधप्रपंचात्मके जगति जायमानानां जनिमतां मध्ये मनुष्य एव श्रेष्ठ इति निर्विवादम् । जनिं लब्ध्वा प्रायः सर्वे जीवाः सहजं स्वकर्म कुर्वन्तः जीवनं यापयन्ति मृतिं चाप्नुवन्ति किन्तु मनुष्यः दृश्यमानस्यास्य जगतो बाह्याभ्यन्तरिकं रहस्यं ज्ञातुं सर्वदा चेष्टते । न केवलं स्वाभाविकयैव रीत्या जीवत्यपितु स्वात्मना नानाविधोपायान् विचिन्त्य जीवनं प्रकृतिप्रसूतेभ्योऽन्येभ्यः प्राणिभ्यो विशिष्टतरं विधातुं प्रयतेत । सर्वेषामेव जागतिकवस्तूनां स्वसूक्ष्मदृष्ट्यालोचने, तेषां स्वानुकूलत्वम् प्रतिकूलत्वं च निश्चीय व्यवहरणे पुनर्यथाकालं सर्वान् प्रत्यौदासीन्यमुरसि निधाय जीवन्मुक्तिमार्गं प्रत्यनुगमने मनुष्ये विद्यमानं यत् तत्त्वं कारणत्वमेति तन्नो विद्यातिरिक्तमन्यत् किमपि, अपि तु विद्यैव ।

विद्याशब्दो विद् वेदे ज्ञाने चेति ज्ञानार्थकविद्धातोर्निष्पद्यते । वस्तुतः कस्यापि विषयस्य सम्यग्ज्ञानमेव विद्या । विद्येयं लौकिकी अलौकिकी चेत्युभयात्मिका । तत्र भौतिकविषयविषयकं ज्ञानं यथा भवति सा लौकिकी विद्या, यथा – व्याकरणम्, साहित्यम्, विज्ञानम्, अर्थशास्त्रम्, समाजशास्त्रम्, संगीतम्, राजनीतिशास्त्रादि । यथा च विद्या जीवस्य, प्रकृतेः, ब्रह्मणः, आत्मनश्च ज्ञानं साधकानां मनीषिणां हृदि समुत्पद्यते सा लौकिकी ब्रह्मविद्या उपनिषद्विद्या, अध्यात्मविद्या वेति पदवाच्या भवति । धर्माधर्मयोः, सदसतोः तत्त्वातत्त्वयोश्च ज्ञानं विना विद्यया कथमपि नास्ति सम्भवम् । न हि भौतिकस्यैव नाना सुखस्यापितु पारलौकिकस्यापि स्वात्मानन्दस्य दात्री विद्यैवास्ति । 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिरिति' 'विद्ययामृतमश्नुते' इति वेदेषूक्तमेव । एतादृशीं विद्यामभ्युपगतानां विदुषां कवीनां मनीषिणां च तत्प्रशंसासम्बन्धे उक्तानि प्रशंसावचनानि यथा—

न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।

मानवप्राप्तव्येषु चतुर्षु पुरुषार्थेषु धनं सकलभौतिकसुखसाधनभूतत्वात् सर्वतोऽधिकं वैशिष्ट्यमावहति । धनं विना किमपि सुखावहं नास्ति लोके । यस्य धनमस्ति स एव समाजसर्वस्वभूतः । इदं धनं गोधनम्, गजधनम्, बलधनम्, यशोधनम् पुत्रधनम्, कलत्रमित्यादिभिः नानात्वं भजते । तत्र विद्याधनं सर्वधनेषु प्रधानं धनमस्ति । विद्या न चौर्येण चोर्यते, न राज्ञा स्ववशीक्रियते, भ्रात्रा न हि विभज्यते, स्वाधारकं भारान्वितं न करोति, तथा च धनसामान्यं व्ययात् क्षीयते किन्तु विद्या नित्यमभ्यासात् अध्यापनाद्वा प्रवर्धते । इदमेवास्ति कारणं यत् विद्वत्त्वं नृपत्वं च कदाचिदपि समत्वं न भेजते ।

उक्तं च—

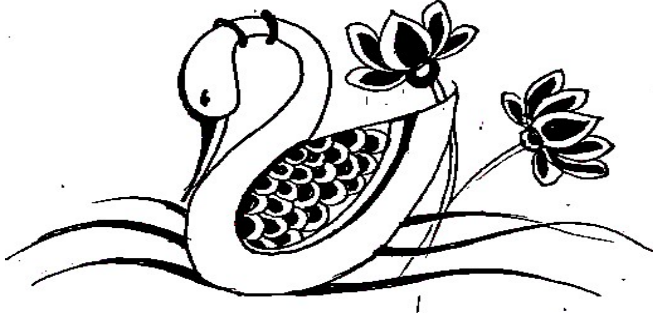
'विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।'

सर्वेषु देशेषु कालेषु, जनेषु च यस्य समर्चा भवति स तु विद्वानेव न हि कश्चिद् राजा यथा—व्यासः वाल्मीकिः कालिदासः तुलसीदासः शंकराचार्यः बाणश्चेत्यादयः ।

तनीषा रोहिला
(बी. ए. तृतीय सत्रस्य)

दूरदर्शनस्य लाभाः षष्ठाः च

अस्माकं जीवने दूरदर्शनस्य स्थानं अतिमहत्तरं भवति । सर्वेषु गृहेषु दूरदर्शनम् आवश्यकं घटकं भवति । यथा अन्नमोदकं च तथा जीवने अनिवार्यं घटकं दूरदर्शनम् । जनमध्ये सार्वत्रिकं नीतं किं वा संजातमिति तस्मिन् एव निमिषे जनेषु, दर्शनसाक्ष्यम् करोति दूरदर्शनम् । एका सुहृदिव अस्माकं समीपे स्थित्वा सर्वाणि वार्ता कथयति दूरदर्शनम् । दूरदर्शनस्य गुणाः दोषाः च सन्ति । दूरदर्शनम् वार्ताभिः बालान् वृद्धान् च विज्ञापयति । अमेरिकादेशे सनातम् कार्यमपि तस्मिन् क्षणे एव अस्माकं भारतदेशे वर्तमानकाले द्रष्टुम् शक्यते । आधुनिककाले यत्रकुत्रापि संजाता वार्ता क्षणेनैव भुवने दूरदर्शनद्वारा प्रसारयति । पुरातनकाले एवं नासीत् । दूरदर्शनस्य 'रियालिटी शो' द्वारा कलाकाराणां च सर्वप्रतिभां वधयितुं शक्यते । दूरदर्शनद्वारा गीतानि श्रोतुम् शक्यते । चलचित्रं दृष्टुम् शक्यते । महात्मानां जीवनचरित्रं तेषां महत्त्वं च दृष्टुम् शक्यते ।



कनिका

(बी.ए. द्वितीयसत्रस्य)

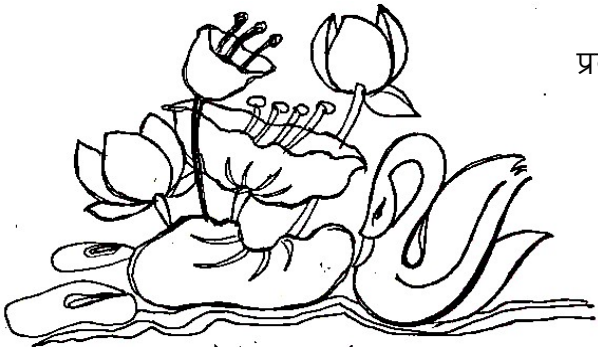
अद्भुतस्वप्नम्

राजीवस्य अद्भुतं स्वप्नम्
सिंहो वदति म्याऊँ—म्याऊँ
हस्ती धावति यथा चित्रकः
सर्पो वदति भौँ—भौँ भाऊँ
भल्लूकः दुर्बलः तथा यत् ।
यथा चमरपुच्छा संजातः ।
मूषकभीता धावति मार्जारी ।
शशकः धावति शृंगयुतः ॥



प्रदर्शनम्

आडम्बरेण मनुष्यस्य मनसः भावाः खादिताः ।
मातुः प्रेम प्रदर्शनेन खादितः आसीत् ।
छलेन बालानाम् निर्दोषतां खादिता ।
बालकाः बालकाः इव न दृश्यन्ते, ते बृहत् वचनानि वदन्ति
बाल्यकाले परिपक्वतां दशर्यन्
नवदम्पती सुखेन जीवतः
माता किट्टीपार्टीयां शिथिलतया डोलयति
दशरुप्यकाणां वस्तुनः मूल्यं शतम् रुप्यकाणि कथयन्ति
कथं बालाः एतन् मूर्खताम् न शिक्षेयुः?
पिता सर्वदा व्यस्तो भवति
बालकानां वचनं कः श्रोष्यति?
माता बालकान् नैतिककथां कथयितुं विस्मृतवती
फास्टफूडेन मातुः भोजनास्वादः भक्षितः
मातनिर्मितभोजनं न मिलति
माता होटेले, किटी, पार्टी, शॉपिंग मॉल इत्यत्र समयं दत्तवती ।
पिता अपि समयं दातुं विस्मृतवान्
तेन पानमसाला भोक्तुं गन्तव्यम् च ज्ञातव्यम् आसीत्
आडम्बरेण आत्मनो भावः नष्टः
आडम्बरेण सद्विचाराः नैतिकताः च खादिताः
आडम्बरः एतावत् प्रिय अभवत्
कोरोनाकारणात् गृहे एव भोजनपाकं कृत्वा व्हाट्सएप-फेसबुक-स्थितौ पोस्ट कर्तव्यम् आसीत्
विना प्रदर्शनं न भोजनं करणीयम्
आडम्बरस्य जगत् केवलं दुःखं ददाति
यदा अस्माकं स्वमातापितरौ प्रदर्शनमार्गं प्रदर्शयतः
ये लोके प्रदर्शनानुकूलतां न प्राप्नुवन्ति
ते संसारे अधुना वंचितो भवन्ति
सर्वं भावविहीनं शून्यम्
प्रदर्शनं भावलोकः खादितः



स्वीटी

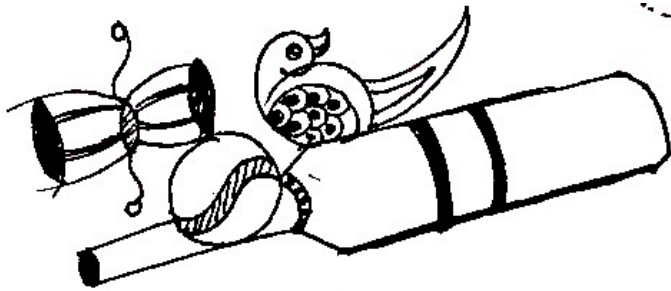
(एम.ए. द्वितीय वर्षस्य)

शिशुदृष्टिः

मातः कथयसि लिखति ग्रन्थान् पिता बहूनि परं तु मे ।
तेषु किमपि नावगतं भवति कथय किमिदमित्थं स्यात् ॥
सायं तुभ्यं यत्श्रावयति तदवगच्छसि किं वद मातः ।
कथयस्यद्भुतकथास्त्वमेव न रचयति पिता कुतः ॥
कच्चित्तयाम्बायाः तेन न कथाः श्रुता न सुविस्मृता नु ।
दानवपिशाचविद्याधरनृपपुत्रीणां सुमधुराः ॥
यदि विस्मरति स्नानं तदा त्वमाह्वयसि हि वारंवारम् ।
सोष्णाशनय तथापि विस्मरति लिखन्नेवास्ते च ॥
यदि प्रविशामि तस्यागारं क्रीडार्थं त्वं विगर्हसे ।
स्तोकरवमपि न सहसे वदसि पिता कार्यमग्न इति च ॥
विन्यति लेखं लेखं किं यदि लिखामि कखगघ तर्जसि माम् ।
पिता लिखति यदि तदा नु किमपि न वदसि कुतः कथय माम् ॥
यदि पत्रे एकस्मिन् रचये खेलकमुडुपं विगर्हसे त्वम् ।
जनके पत्रेषु लिखति तूष्णीं वर्तसे तु किमर्थम् ॥

प्रेरणा

(एम. ए. प्रथमसत्रस्य)



रसनिष्पत्तिः

आनन्दो हि काव्यस्य चरमप्रयोजनम् । अयमानन्द एव काव्यशास्त्रे रस इति नाम्ना अभिधीयते । रसशब्दस्य शाब्दिकोऽर्थो यत् रस्यते आस्वाद्यते इति रसः । अयं रस आनन्दात्मक आस्वाद्यरूप आस्वादरूपश्च । रसस्येतिहासः अतिप्राचीनः ।

तैत्तरीयोपनिषदि रसस्य निर्देशः प्राप्यते 'रसो वै सः' । परं रसस्य सैद्धान्तिकं विवेचनं भरतात् प्रारभते । आचार्येण भरतमुनिना रसस्य स्वरूपं आस्वाद्यमित्युक्तम् । यथा विविधेभ्यः व्यंजनेभ्यः संस्कृतमन्नं खादित्वा सहृदयापुरुषाः रसास्वादनं कुर्वन्ति तथैव सहृदयजना अभिनयेन व्यंजितं नाट्यरसानामास्वादं कुर्वन्ति । रसनिष्पत्तिः सम्बन्धे आचार्यभरतस्य मतं यत् विभावानुभावव्यभिचारिणा च संयोगेन रसस्य निष्पत्तिर्भवति—

“विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः”

काव्यप्रकाशकारेणाचार्यमम्मटेन नाट्यशास्त्रस्यैव मतमनुसृत्य रसस्वरूपम् इत्थमुक्तम् —

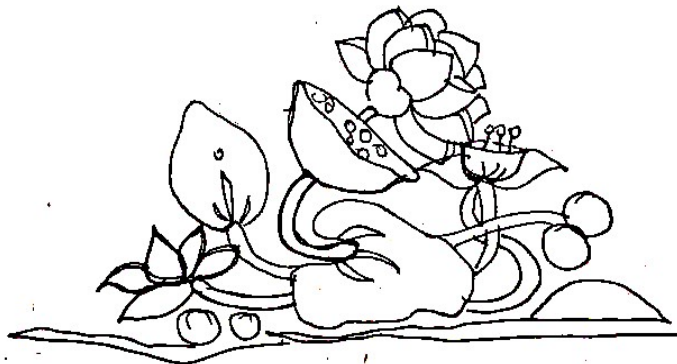
कारणान्यथ कार्याणिसहकारीणि यानि च ।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः ॥

साहित्यदर्पणकारेण विश्वनाथकविराजेनापि तथैव नाट्यशास्त्रस्यैव मतमनुसृत्य रसस्य स्वरूपं इत्थमभिव्यक्तम् —

‘विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा ।
रसतामेति रत्यादिस्थायीभावः सचेतसाम् ॥’

अत्रजलिः

(एम.ए. द्वितीय वर्षस्य)

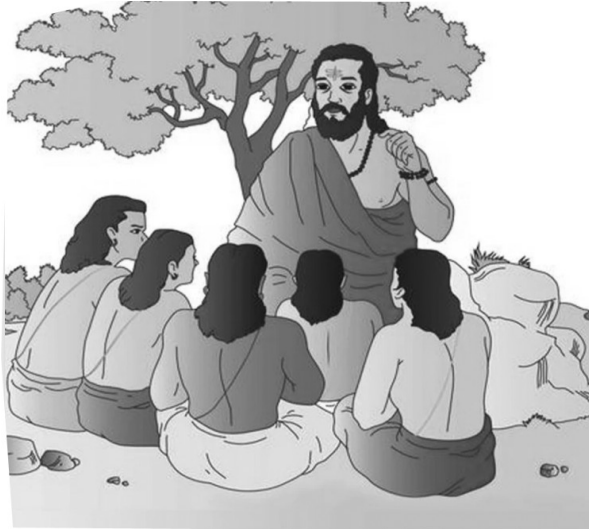


सुभाषितरत्नानि

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती ।
तस्या हि मधुरं काव्यं तस्मादपि सुभाषितम् ॥
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥
काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥
न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि
व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥
परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥
विद्या विवादाय धन मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय
खलस्य साधोः विपरीतमेतज्ज्ञानायदानाय च रक्षणाय ।
ऋषयो राक्षसीमाहुः वाचमुन्मत्तदृप्तयोः
स योनिः सर्ववैराणां सा हि लोकस्य निऋतिः ॥

गरिमा

(एम.ए. प्रथम वर्षस्य)



श्रीलालबहादुरशास्त्री

भारतस्य इतिहासे श्रीमतो लालबहादुरशास्त्रिणो नाम अमरतां लभते । श्रीलालबहादुरशास्त्री सन्निभाः जनाः यदा कदा एव जायन्ते । एवं विधानां जनानां यशःशरीरे जरामरणजं भयं नास्ति । श्रीलालबहादुरशास्त्री पण्डितजवाहरलालनेहरोः अनन्तरे देशस्य प्रधानमन्त्री अभूत् । अयं महानुभावः आकृत्या खर्वः सन्नपि सद्विचारराशिभिः हिमालयसदृशमासीत् । अयं निर्भीकः वीरः आसीत् “जयतु कृषाणोः जयतु भटः इति तस्य उद्घोष आसीत् । भारतीय जनताया अयं प्रेरयान् नेता आसीत् । यदा पाकिस्तानेन भारतेन सह युद्धं कृतं तदा अनेन तस्य समुचितम् उत्तरं दत्तम् आसीत् । चीनस्य संरम्भमयीं तर्जनीं निशम्य असौ धैर्यं न मुमोच अस्य देशभक्तिं स्मारं—स्मारं जनाः स्वमानसं पावयन्ति चारु परितोऽयं शान्तिप्रस्तावमवलम्ब्य रूसदेशम् अगच्छत् तत्र सः स्वर्गमगच्छत् । भारतभूमेः पुत्रोऽयं धन्यः धन्याश्च भारतीयाः ।

मुस्कान

(बी. ए. प्रथमसत्रस्य)

स्त्री शिक्षा

शिक्षा ज्ञानस्य मूलम् । शिक्षया जनाः कर्तव्याकर्तव्यविवेकं जानाति । शिक्षितैः जनैः समाजस्य शोभा भवति । अशिक्षिताः जनाः देशं राष्ट्रं समाजं वा दूषयन्ति । यथा पुरुषाणां तथैव स्त्रीणाम् अपि शिक्षा अनिवार्या । स्त्रीणां कृते शिक्षाया महती आवश्यकता अस्ति । ताः अग्रतो गत्वा मातरो भवन्ति सुशिक्षिता मातरः स्वशिश्नून् शिक्षितान् कुर्वन्ति ।

सुशिक्षिताः सन्ततिः परिवारस्य अन्यासां संस्थानां च कल्याणम् सम्पादयन्ति । स्त्रीशिक्षामधिकृत्य उच्यते — “कन्याऽप्येवं लालनीया शिक्षणीया । प्रयत्नतः” इति । शिक्षिता भार्यः स्वावलम्बीनो भवितुमर्हन्ति । तदैव ताः सम्मानं लब्धुंशक्नुवन्ति । आधुनिके युगे स्त्रीशिक्षाविषये प्रायशो समस्तमपि विश्वं जागरूकम् अस्ति । भारतेऽपि स्त्रियः शिक्षिताः भवन्ति । सर्वविधसमुन्नतिं प्राप्त्यै स्त्रीशिक्षायाः कदापि उपेक्षा नैव कार्याः ।



सोनी जैनर

(बी. ए. प्रथमसत्रस्य)

संस्कृतभाषा

अति प्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा अस्ति । संस्कृतावाङ्मय विश्ववाङ्मये स्वस्थ अद्वितीय स्थान अलङ्करोति । महर्षि पाणिनिरचिता "अष्टाध्यायी" जगतः सर्वासां भाषानां व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा वैयाकरणानां भाषाविदां भाषा विज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं वर्तते ।

भारतीय भाषासु बहुलत्वेन संस्कृत शब्दाः उपयुज्यन्ते । संस्कृतात् प्रायः सर्वा अपि भारतीय भाषाः उद्भूताः । तद्वदेव भारत यूरोपीयः भाषावर्गीयाः नैकाः भाषा संस्कृतप्रभावं संस्कृत शब्द प्राचुर्यं वा प्रदर्शयन्ति ।

संस्कृतभाषायाः सुरभारती, देववाणी, देववाक्, गीर्वाणवाणी, देवभाषा अमरभारती इत्यादीनि बहूनि नामानि प्रसिद्धानि सन्ति ।

संस्कृते एकस्य धातोः रूपाणि अर्थकालानुसारेण दशसु लकारेषु भवन्ति ।

काजल

(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)

माता

यया महिलया शिशु जन्यते पालनं लालनम् क्रियते सा महिला माता इति मन्यते । माता सदृशः पुल्लिङ्ग प्रतिवस्तु पिता । संस्कृतभाषायां जननी, जनयित्री, अम्बा, सावित्री, अम्बिका प्रसू, जनी, अल्ला, अक्का, अत्ता इत्यादिनि अनेकानि पदानि मातृशब्दस्य कृते पर्यायशब्दरूपेण उपयुज्यन्ते ।

शिशोः पालनविषये पित्रे तथा इतर बन्दु जनेभ्यः अपि दायित्वं वर्णितम् अस्ति एव परन्तु अम्बायै ज्येष्ठांशं विद्यते । माता इति पदम् स्पष्टीकर्तुं सुलभकार्यं नास्ति । न केवलं मानवता इतरेषु पशुषु अपि मातृत्वं सुस्पष्टं विद्यते । यथा शिशोः जीवनं अम्बया विना कठिनम् भवति तथा एव मृगाणां पक्षिणाम् अपि अम्बया विना जीवनं बहु कष्टपूर्णं भवति ।

पारुल

(बी. ए. द्वितीयसत्रस्य)



अनुशासनम्

अनुशासनशब्दः 'अनु' उपसर्गपूर्वकात् 'शास्' धातोः निष्पद्यते। आज्ञापालनाभ्यासाय च मानसः चरित्रस्य च विशेषतः प्रशिक्षणं भवति। अनुशासनपालकः नियमैः सह अनुकूलत्वे आत्मानं प्रशिक्षयति। सः आत्मानं निश्चितजीवनपद्धतौ अधीनं करोति। अनुशासनमेकः व्यापकशब्दोऽस्ति। अनुशासनं बाह्यात् आरोपितं न भवति अपितु स्वयं विकसेत्।

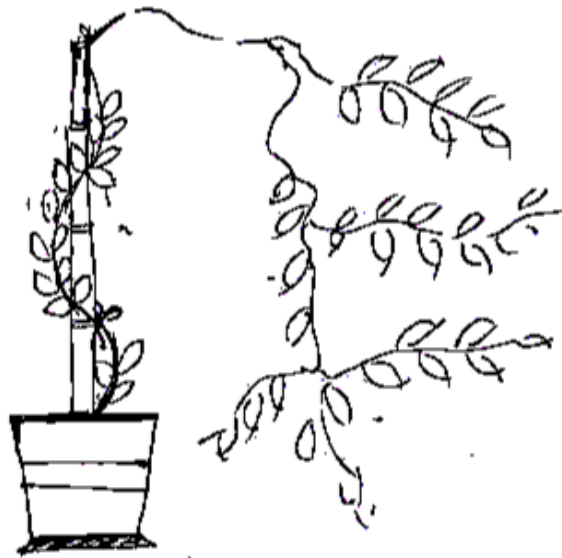
जीवनस्य प्रत्येकक्षेत्रे अनुशासनस्य महती आवश्यकता भवति। इदं सर्वेभ्यः आवश्यकं लाभदायकं च भवति। मानव एकः सामाजिकः प्राणी वर्तते, समाजस्य क्षेत्रं चातिव्यापकमस्ति। यदि जनाः अनुशासिताः सन्ति तर्हि देशः उन्नतिं करिष्यति समाजे च प्रत्येकं जनः प्रसन्नः समृद्धश्च भविष्यति। छात्राः शिक्षकाः पदाधिकारिणः श्रमिकाः सैनिकाः सर्वे प्रसन्नाः भवेयुः। तेषामात्महिताय, देशकल्याणाय च अनुशासनमपरिहार्यम्।

परिवारे सर्वप्रथमं मातापितरौ आत्मानुशासनं भवेताम्। यदि तौ जीवने अनुशासनं व्यवस्थापयतः तर्हि तयोः बालकाः नियन्त्रणे भविष्यन्ति। यदि परिवारः नियन्त्रितोऽस्ति, तर्हि उन्नतिः भविष्यति। विद्यालयेषु, महाविद्यालेषु विश्वविद्यालयेषु च वर्तमानशिक्षापद्धतौ अनुशासनमत्यावश्यकमस्ति। यतोहि छात्राः पृथक्जातीयाः भिन्न-भिन्नधर्मानुयायिनः पृथग्पृथग्परिवारेभ्यः समागताः भवन्ति। अनुशासनाभावे तेषु विविधाः समस्याः समुत्पद्यन्ते।

अनुशासनं विना सभ्यतायाः विकासो न संभवति। संस्कृतिः विज्ञानं, उद्योगश्च उन्नतिं न कुर्वन्ति। राष्ट्रियजीवने अनुशासनं वाञ्छितं भवति। यदि कोऽपि देशः अनुशासितो नास्ति तर्हि तस्मिन् शान्तेः व्यवस्थायाश्च वासो न भवति। अनुशासने महत्तमानि कार्याण्यपि सिध्यन्ति। अतः अस्माभिः जीवने अनुशासनस्य महती आवश्यकता च अवश्यमेव शिक्षितव्या।

मेघा त्यागी

(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)



विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम् ॥
सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेत् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

मात्रा समं नास्ति शरीरपोषणम् ।

चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ॥

भार्यासमं नास्ति शरीरतोषणम् ।

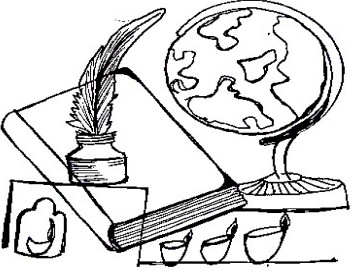
विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम् ॥

न चौर्यहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।

व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुका ॥



अंशु

(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)

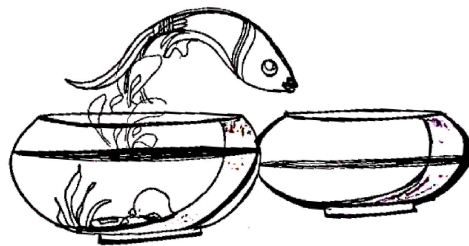
जलम्

जलम् एव जीवनम् इति उक्त्यनुसारम् अस्माकं जीवने जलस्य आवश्यकता वर्तते । जीवनाय जलम् आवश्यकं वर्तते । तृष्णायां सत्यां जलेन एव निवारणं भवति । पृथिव्याः जीवानां कृते आवश्यकं तत्त्वम् अस्ति । जलम् अस्माकं सौभाग्यम् अस्ति यत् पृथिवी जलीयः ग्रहो वर्तते । जलं सौरमण्डले दुर्लभं वर्तते । अन्यत्र कुत्रापि जलं नास्ति ।

पृथिव्यां जलं पर्याप्तम् अस्ति । अतः पृथिवी नीलग्रह इति उच्यते । जलस्य स्वरूपं निरंतरं परिवर्तते । अतः सूर्यस्य तापेन वाष्पस्वरूपं, शीतले सति सङ्घनीकरणे मेघस्वरूपं, वर्षा माध्यमेन जलस्वरूपं धरति । जलं महासागरेषु वायुमण्डले, पृथिव्यां च परिभ्रमति । जलस्य तत्परिभ्रमणं जलचक्रं कथ्यते ।

श्वेता

(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)



अपूर्वः अतिथिः

मध्याह्ने अहं वातायनं निकषा उपाविशम् । सहसा कश्चन् बालकः अस्माकं गृहस्य द्वारघण्टिकाम् अवादयत् । सः मादृशं आयुषः एव आसीत् । आवां परस्परं वार्तालापम् अकुर्वः ।

अतिथिः – किं त्वं दुःखी असि?

अहम् – आम् । अस्माकं जीवनं स्तम्भितोऽस्ति । वयं विद्यालयं न गच्छामः क्रीडाक्षेत्रे न क्रीडामः च । वयं सर्वे गृहे एव अवरुद्धाः ।

अतिथिः – किं एतस्य दुःखस्य कारणं जानासि?

अहम् – आम् । कोरोनाविषाणुजनितरोग एव । यद्यपि मानवः सर्वेषु जीवजन्तुषु श्रेष्ठ अस्ति, तथापि सः सर्वेषां जीवजन्तूनां कृते उपेक्षाभावं दर्शयति । सः अन्येषां पशुपक्षिणां हानिं करोति, वृक्षान् कर्तयति, पर्यावरणं दूषितं च करोति । अधुना अयं प्रकृतेः दण्ड एव अस्ति ।

अतिथिः – आम् । वर्तमानसमये मानवः स्वार्थान्धः करुणाहीनः च अस्ति । सः भौतिकसुखसाधनान् प्राप्तुम् अनाचारं करोति । परन्तु वास्तविकधनं तु स्वस्थदेहो वर्तते । यदा सर्वे स्वस्थाः भवन्ति तदैव सुखं भविष्यति ।

अहम् – सम्प्रति अस्माभिः किं कर्तव्यम्?

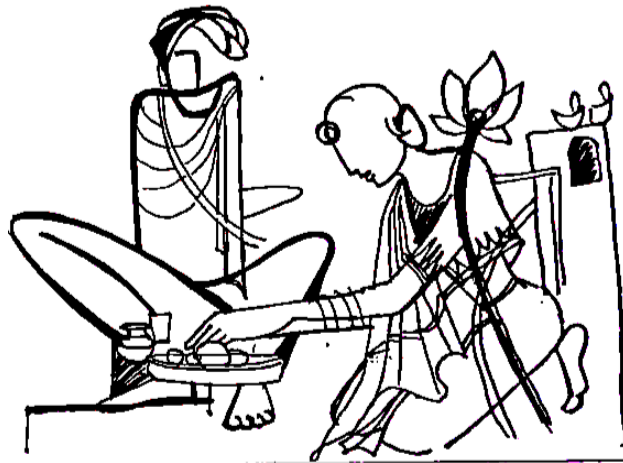
अतिथिः – अस्माभिः पर्यावरणसुरक्षायै प्रयासः करणीयः, वृक्षारोपणं जीवजन्तूनां संरक्षणं च करणीयः, तदैव उपनिषद्वाक्यम् अपि सार्थको भविष्यति ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

दीपांशी चौधरी

(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)



परिवर्तिनी काले नार्यः

सत्यमस्ति यत् वैदिककाले, स्मृतिकाले, रामायणमहाभारतादिकाले च नारीणां स्थितिः अतीव गौरवास्पदम् आसीत् । परं मध्यकाले तासां स्थितिः दयनीया अभवत् । ताः शिक्षां प्राप्तुं न समर्थाः, तासां विवाहमपि बाल्यावस्थायामेव अक्रियन्त, विवाहसमये यौतकम् (दहेज इति) अपि प्रचलितम् अभवत् । जनाः गर्भस्थशिशोः लिङ्गपरीक्षणं कारयित्वा कुक्षौ एव कन्यायाः वधं अकुर्वन् । अतः तासां अवस्था कारुण्यास्पदम् एव सम्वृत्ता ।

सैव स्थितिः प्रायः वर्तमानयुगेऽपि संलक्ष्यते । वास्तविकी स्थितिः साम्प्रतं वर्तते यत् महिलानां कृते उपेक्षाभावः हीनभावः अस्ति । ताः पुरुषाणां समानाः न मन्यन्ते । ता अपकृष्टाः एव मन्यन्ते ।

परं प्रगतिशीलविचारधारायाः समर्थकानां प्रयासेन साम्प्रतं स्त्रीशिक्षा प्रतिदिनं वर्धते । अधुना स्त्रियः आत्मनिर्भराः सन्ति । ताः शिक्षिताः नार्यः विज्ञानक्षेत्रे, व्यवस्थाक्षेत्रे, व्यापार—वाणिज्य—कार्येषु स्वीयां उत्कृष्टतां प्रदर्शयन्ति । परन्तु तासां सुरक्षायाः विषये अद्यापि विचारं करणीयमस्ति ।

अधुना प्रगतिशीलभारतेऽपि स्त्रियः रात्र्यान्धकारे कुत्रापि एकाकिनी गन्तुं समर्थाः न सन्ति । यद्यपि अस्माकं केन्द्रीयशासनः अस्यां दिशि अनेकानि कार्याणि अकरोत्, तथापि वर्तमानसमाजे नारीषु तादृशी जागृतिर्न संलक्ष्यते, यादृशी अपेक्ष्यते ।

यदि नार्यः सबलाः सुवीराः भविष्यन्ति तर्हि न केवलं तासामेव जीवनं सुखशान्तिसमन्वितं भविष्यति अपितु समाजहितं, राष्ट्रहितं, विश्वहितं च सम्भविष्यति ।

अत एव सत्यमिदम्—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रैताः न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥

जयश्री

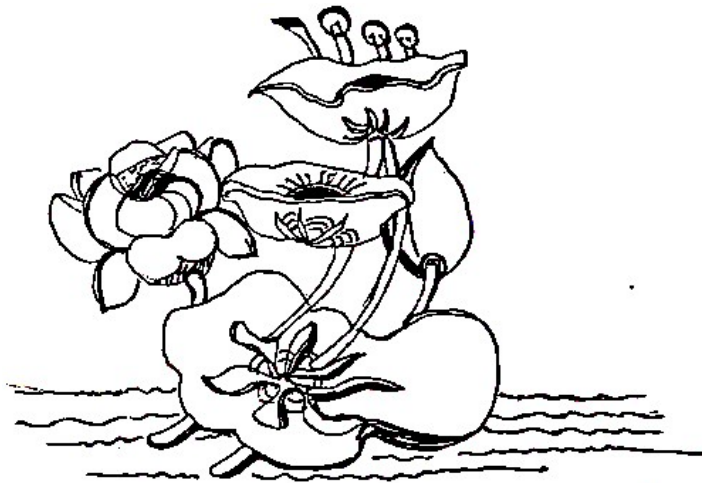
(बी. ए. तृतीयसत्रस्य)



हास्यालाप

1. सुधीर:— जानासि त्वं सर्वे जनाः मम
जनकस्य अग्रे शिरः नमन्ति ?
राहुलः— सुधीर ! किं तव पिता प्रधानमन्त्री अस्ति?
सुधीर:— नहि, नहि, मम पिता तु नापितः अस्ति ।
2. मोहनो विन्तकोशात् वेदन्ने बाहेरागच्छति
यदा दुग्धविक्रेता आन्दोलनं करोति तर्ही दुग्धं राजमार्गे क्षिपति ।
यदा पलान्डुविक्रेता आन्दोलनं करोति
तर्ही पलाण्डून् राजमार्गे क्षिपति ।
न जाने विन्तकोषजनाः कदा अवगच्छन्ति ।
3. पुत्रः हे पित! किम् अहम् ईश्वर इव दृश्ये वा ?
पिता— नैव परन्तु त्वम् एवं किमर्थं पृच्छसि पुत्र ?
पुत्र— यतोहि अहं यदि कुत्रापि गच्छामि चेत जनाः वदन्ति यत्
हे भगवन् पुनः आगतः ।

मनीशा सिंह
(एम. ए. द्वितीय वर्षस्य)





**English
Section**



Editorial



Expressing one's feelings through words is a beautiful art. Our college magazine, SAURABH, provides a unique opportunity for both faculty and students to share their thoughts, emotions, and creativity.

As Thomas Mann wisely said, "A writer is someone for whom writing is more difficult than it is for other people." Our magazine SAURABH is a testament to the effort and dedication each of you has poured into your writing.

Our magazine is not just a collection of articles and creative pieces ; it is a mirror reflecting the depth of your emotions and the richness of your ideas. Whether you are a student sharing your journey or a faculty member offering insights and wisdom, your contributions make this magazine a tapestry of our collective experiences.

We are committed to providing you with an avenue to express yourselves freely. Your stories, poems, essays, and reflections are not just words on a page but powerful expressions that inspire, motivate, and connect us all. Through your writings, we see the world from different perspectives and learn from each other's experiences.

Each edition of this magazine is testament to the talent and dedication within our college. It is your hard work and passion that make it special and engaging. We hope you read it with the same enthusiasm and pride with which it has been crafted.

Your contributions are the heart and soul of this publication, and we are deeply grateful for your participation. Together, let's continue to create a space where ideas flourish and voices are heard.

With best regards,

Prof. Mamta Upadhyay
(Department of English)

The Energetic Essence of Words

Words hold and innate power, and energy that transcends their mere definition. They are the building blocks of communication, shaping thoughts, emotions, and actions. From ancient sculptures to modern literature, the significance of words in influencing human experience is undeniable. In this essay we delve into the profound concept that words are energy.

At its Core, energy is the capacity to do work or effect change. Words, in their essence, possess this transformative potential. Consider the impact of a simple “ I love you” or “ you are capable” These words carry emotional resonance, capable of uplifting spirits, fostering confidence, and inspiring action. Conversely, negative words such as “I can’t” or you are worthless” can drain energy, instilling doubt and disarrangement.

The vibrational frequency of words is a key aspect of their energetic nature. Every word vibrates at a certain frequency, influencing the energy fields of both the speaker and the listener. Positive words resonate at higher frequencies, aligning with feeling of joy, love and gratitude. Conversely, negative words vibrate at lower frequencies, resonating with fear, anger, and sadness. This vibrational energy can impact not only individuals but also the collective consciousness of community and societies.

Moreover, words have the power to manifest reality. The concept of “ thoughts become things” highlights the role of language in shaping our experiences. When we speak affirmations or set intentions, we are essentially channelling energy into creating our desired reality. This phenomenon is evident in practices such as affirmations, mantras, and prayers, where words are used to manifest positive outcomes and align with universal energies.

Language itself is a dynamic force, evolving over time to reflect the cultural, social, and psychological landscapes of humanity. Words hold cultural significance, carrying the collective wisdom, beliefs, and values of societies. They can evoke nostalgia, provoke laughter, or stir controversy, depending on their contact and interpretation. The power of language to shape identity and perception is evident in the narrative construct about ourselves and other.

Furthermore, words are not limited to verbal communication. Nonverbal forms of expression, such as writing, art, and music, also harness the energetic essence of language. The written words have the power to transport readers to distant lands, evoke deep emotions, provoke introspection. Artistic expression, through imagery and symbolism, communicates messages that transcend linguistic barriers. Music, with its rhythm and melody, speaks to the soul in a language of its own, eliciting profound emotional responses.

In conclusion, the concept that words are energy underscores the profound influence of language on human consciousness and experience. From the spoken word to written text, from affirmations to artistic expression, words have the power to shape thoughts, emotions, and actions. By harnessing the energetic essence of words, we can cultivate positivity, inspire change, and manifest our highest potential. As stewards of language, let us wield our words with mindfulness, recognizing their transformative power to create a more vibrant and harmonious world.



Dr. Arti Sharma,
Assistant Professor
(Department of Education)



Lost in Landour

Hills are beckoning me to come again
They make me forget all the anguish and pain.

The fragrance of Blossom wafting through breeze
The icicles on the roof will make you freeze.

Idyllic walk through the woods of Deodars and Pine
Will ensure you that one day everything will be fine.

The sun pierces through the mist and splashes the Sky
I wish I had Wings to fly.

The aroma of delectable delicacies of landour are always on prowl
Luring visitors and dispelling their scowl.

The bells of Kellogg's Church will cast such a spell
All your fears and anxieties will quell.

Such is the pulchritude of this quaint little town
You will learn to smile and forget to frown.

This tiny town tucked in Himalayas has its own charm
Be it day or night it's always calm.

So, enthralling is the tranquillity of hills
They give you a perfect muse for your creativity and skills.

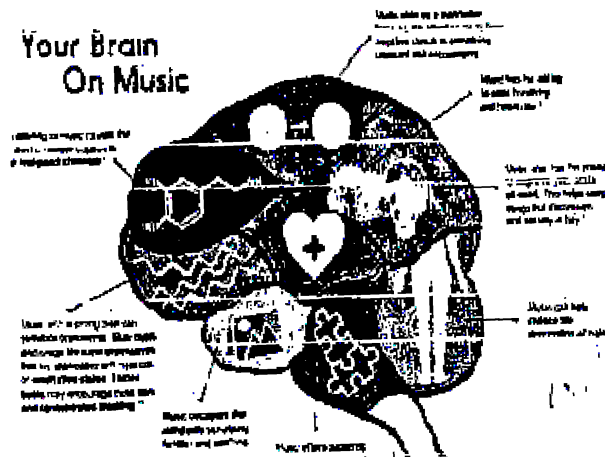
Will come here again and again
Be it autumn, spring or rain.

Ms. Chinky Upadhyaya
(Department of Psychology)



The Symphony of the Mind: Exploring the Intersection of Psychology and Music

Leo Tolstoy: "Music is the shorthand of emotions"




Music, a universal language that transcends cultural boundaries, has profound psychological effects on the human mind. From the soothing strains of a lullaby to the electrifying beats of a rock concert, music has the power to evoke a wide range of emotions and responses. Understanding the intricate relationship between psychology and music opens up a fascinating realm where art and science converge, shedding light on how melodies and rhythms can influence our thoughts, feelings, and behaviors.

Emotional Power of Music

One of the most significant psychological effects of music is its ability to evoke emotions. Music can trigger powerful emotional responses, often with immediate impact. Listening to a favorite song can bring about feelings of happiness and nostalgia, while a melancholic tune might evoke sadness or introspection. This emotional connection is due in part to music's ability to stimulate the brain's limbic system, which is involved in processing emotions.

Research has shown music can also influence our mood and mental state, Upbeat and fast-paced music can increase arousal and energy levels, making it an effective tool for motivation and exercise. Conversely, slow and soothing music can promote relaxation and stress reduction, making it useful in therapeutic settings.

Music and Cognitive: Function Beyond its emotional impact, music also has notable effects on cognitive function. Studies have demonstrated that music can enhance various cognitive abilities, including memory, attention, and problem-solving skills. The "Mozart effect," a term coined from a study suggesting that listening to Mozart's can temporarily enhance spatial-temporal reasoning, highlights the potential cognitive benefits of music. Although the extent of this effect is still debated, it underscores the intriguing possibility that music can influence cognitive performance.



Music education and training have been shown to foster cognitive development in children. Learning to play an instrument, for example, can enhance fine motor skills, improve auditory discrimination, and strengthen the brain's executive functions. These cognitive benefits extend beyond childhood, as engaging with music throughout life can help maintain cognitive health and potentially delay age-related cognitive decline.

Music Therapy: Healing Through Harmony

The therapeutic potential of music is a burgeoning field within psychology known as music therapy. Music therapists use music to address a variety of psychological, emotional, and physical issues. This form of therapy can be particularly beneficial for individuals with mental health disorders, such as depression, anxiety, and PTSD. Through techniques like guided imagery with music, rhythmic entrainment, and improvisational music-making, therapists help clients explore emotion, reduce stress, and improve overall well-being.

Music therapy is also effective in neurorehabilitation, helping individuals recover from brain injuries and strokes. Rhythmic auditory stimulation, a technique that uses rhythmic cues to improve motor function, has shown promise in aiding movement and coordination in stroke patients. Additionally, music therapy can support individuals with neurodevelopmental disorders, such as autism, by enhancing communication and social skills.

The Social Dimension of Music

Music's psychological impact extends beyond the individual to the social realm. Music is a powerful social connector, fostering a sense of community and belonging. Concerts, festivals, and communal singing events bring people together, creating shared experiences and strengthening social bonds. Group music-making, such as in choirs or bands, encourages collaboration, empathy, and teamwork.

Moreover, music can play a role in cultural identity and expression. It reflects and shapes cultural narratives, providing a means for individuals and communities to convey their values, history, and aspirations. This cultural aspect of music underscores its importance not only as an art form but also as a vital component of human society.

Conclusion

The interplay between psychology and music reveals the profound ways in which melodies and rhythms can influence the human mind. From evoking emotions and enhancing cognitive function to facilitating therapy and fostering social connections, music's impact on psychology is vast and multifaceted. As research continues to uncover the depths of this relationship, it becomes increasingly clear that music is not just an art, but a powerful tool for understanding and improving the human experience. Whether you're a musician, a music lover, or simply someone curious about the human mind, exploring the psychological dimensions of music offers a rich and rewarding journey into the symphony of the mind.



Prof. Kumkum Pareek
(Department of Psychology)
Ms. Apoorva
Guest Faculty, (Dept of B. Voc)

Second Sight

Sometimes, you need the ocean light,

And colours you have never seen before painted

through an evening sky.

Sometimes, you need your God to be a simple invitation

Not a telling word of wisdom.

Sometimes, you need only the first shyness

that comes from being shown things for beyond your understanding.

So that you can fly and become free by being still and by being still here.

And then there are times you need to be brought to ground my touch and touch alone.

To know those arms around you and to make your home in the world. Just by being wanted.

To see those eyes looking back at you, as eyes should see you at last,

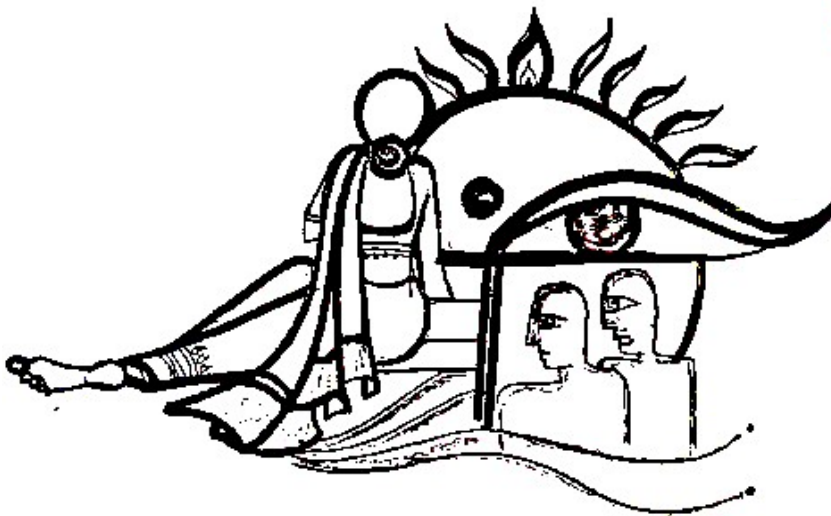
Seeing you, as you always wanted to be seen,

Seeing you as you yourself had always wanted to see the world.

Pinki

Research Scholar

(Department of English)





Silent Messages by Plants

Flowers are the most beautiful creation in the world, be it holding a flower of any kind. It brings us joy. All flowers and plants have a particular message that is important for life. A few of these flowers have been analysed with their interpretive significance.

Sunflower (*Helianthus Annus*) always faces towards the sun. There are two faces of life, one is light and another is dark. We should always face towards the light.

Lotus (*Nelumbo Nucifera*) grows in a muddy pond. You can succeed in the most unfavorable condition if you have the spirit to do something.

Rose (*Rosa Rugosa*) is always with spine or thorns. There is no gain without pain.

Ghee Ganwar (*Aloe-vera*) is beautiful but it is a valuable medicine for pain, cold and extra glow to the skin. Your true beauty is your ability and your capacity, not your physical identity.

Cotton Plant (*Gossypium Tomentosum*) leaves are always in the North-south direction. If you rotate this plant in any direction, the leaves will be in the same direction again. You should focus on your goals whatever the condition.

Rosery Pea (*Abrus Pricatorious*) fruits are accurate equal to each other in weight, that's why in ancient times they were used to measure gold. Maintain ability in your life and give equal potential to each target.

Paddle Cactus (*Opuntia Poly Canthus*) is a desert plant. Though it has so much water that people get the water by **wringing** in heavy drought. Be helpful to everyone, no matter what even at the cost of not caring for yourself.

Orchio C (*Orchis Muscula*) very light in weight i.e. the weight of 10 lakh seeds is only one gram. The weight of your virtues must be heavier than your ego. Keep the power of creation, like seeds.

Reena

M. A. 1st Sem.


(Department of English)

Whispers of Departure

Amidst a world of shadows deep,
Where heartaches like echoes creep,
A weary soul dreams of flight,
From burdens woven in the night.
Like a star that slips its tether,
Yearns to fade, to flee, together,
I seek a realm of solitude,
A canvas blank, my spirit's interlude.
Whispering winds my confidants,
Shall carry me to distant haunts,
Where river of time unfurls, serene,
Embracing stars in tranquil sheen.
Untangling threads of worldly ties.
A butterfly's escape through skies,
A dance of absence, silent and true,
Shall sever bonds without ado.
In moon lit steps, I'll fade away,
A mirage at the break of day,
Unseen, untouched, I'll softly depart,
A whisper on the breeze, a distant art.
My exit a tale only the stars shall know,
As I melt into the cosmic flow,
No trace, no ache, no tear shall fall,
Just the echo of a distant, unheard call.

Anny Saifi
Guest Faculty
(Department of English)





The Best Academic Educational Initiatives and Its Impact on Student Progression

Today in higher education institutes, new academic initiatives are taken for betterment of the students. Education is one of the landscapes with an enormous potential shift. Institutes are applying best initiatives as per the student's capacity and the environment in which their institute grows. With the help of the traditional system teachers can only cater the knowledge which is not sufficient. Hence institutes are conducting many activities which help students to make them academically strong. In academic initiative, faculty always works to enrich and extend the learning experience of their students and always try to innovate with groundbreaking programs for the development of education. Some good initiatives followed by A grade institutes in India are: -

1. Blended Learning

Since the growth of technology blended learning is the popular educational initiative by the higher educational institutes. With this method, face to face and e-learning training are possible for students at a global level. Meanwhile teachers play the role of mentors to orient learners. This modern trend not only boost learners' learning experiences but also wakes their learning motivation up.

2. Project-based Learning (PBL)

With this initiative in education, there will be a gap if you don't refer to PBL. This is also known as experiential learning 'Knowledge is a consequence of experience'. People cannot grow if they just the grasp in textbooks; indeed, global citizens have to experience real things in life. In this education process, students sharpen their skills better by integrating with real circumstances. They work and learn in planned projects or internship programs and upgrade their skills in particular area. So PBL is now most important initiative taken by higher Educational Institutes.

3. Bite-Sized Learning (Micro-learning)

Bite-sized learning has become a popular initiative in education today. This learning style answers the concern of short-term attention. It is said that the average or show learner students' attention span is between 10 and 15 minutes so fbite sized learning was born to offer clear and concise content to learners. Learners may remain 100% attentive during every learning session.

4. Genius Hour

Genius hour is a fairly new education technique that allows students to work on self-paced and self-chosen projects for an hour each day this encourages students to innovate new ideas and practice their creativity and independent thinking skills and they can also develop a genuine love for learning.

5. STEAM Curriculum

STEM (Science, Technology, Engineering and Math) curriculum is the primary focus in the new education policy now a days and it prepares students who enter the work force with practical, high demand skills. But adding the art alongside the subjects (thus creating STEAM: STEM plus arts) can improve the students' academic performance Adding art assignments to science and math lessons can help all learners understand STEM subjects better. And it improves creativity which is a useful skill for any academic subject. The STEAM Curriculum is shown to provide students with a more well-rounded and practical education then STEM alone.

6. Resource Development and Allocation

Nowadays higher education institutes increase the resources to support academic excellence through strategic enrolment management, effective LMS systems, increasing external support for research. Digital Library access, encouraging entrepreneurial activities, students' placements with global engagements, continuously assessing program effectiveness and reallocating resources where appropriate and assuring that resources are used effectively to build academic quality and generate additional resources.

7. Extra-Curricular Activities

Extra-curricular activities are the part and parcel of education system. Students cannot grow if they just follow the text books and attend classes: indeed, they have to experience real things in real life. In this process, students get their all-round personality development in different ways. Through sports, NSS, NCC, Rangers, student's extension programmes, green initiatives, students NGO's. field workshops etc. are the most demanding extracurricular activities. In new education policy and NAAC grading system, Institutes are giving high attention to these initiatives. So higher education institutes are developing infrastructures with MoUs, increase student's participation in extracurricular activities and are going through the extracurricular aspects in the curriculum.

So, these are the best academic educational initiatives required for higher educational institutes for achieving higher student progression in different fields.

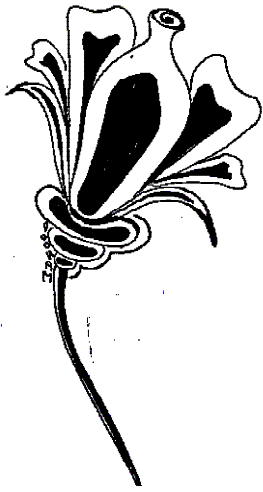


Prof. Bhawna Mittal

(Department of Physical Education & Sports)



Echoing Wishes

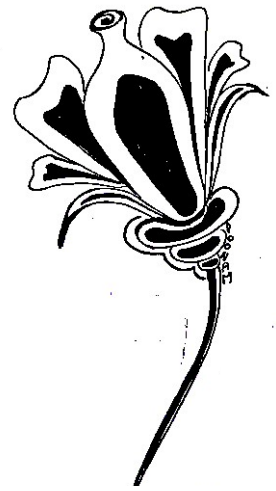


I wish to visit a new world
Where no strain of affliction is found
Which is free of all worldly agony
And all can dwell with harmony

I wish to see a new dream
Which is full of bright beams,
In which all the wishes bloom
Free of dark gloom.

I wish to start a new journey life
Where all my lost memories can be revived,
Where we carry only affection, hopes, and tranquillit
And love abides till the eternity.

I wish to permeate compassion everywhere
No trace of pain or scorn will be there
And we all love each other unconditionally
This will be a Paradise on this earth really



Ms. Preeti

Assistant Professor

(Department of English)



Art: Expression, Reflection, Innovation

Art is a multifaceted and deeply ingrained aspect of human culture, encompassing a wide range of activities and creations. At its core, art is a form of expression that allows individuals to convey ideas, emotions and narrations through various mediums such as painting, sculptures, music, literature and dance.

Art is often defined as the application of human creativity works that can be appreciated for their beauty or emotional power. This broad definition captures the essence of what art is: a means of expressing what it means to be human. It transcends mere functionality, instead to engage the senses, evoke feelings and provoke thoughts.

Art serves multiple purposes, each contributing to its importance in society.

Artists use their work to express personal or collective experiences, emotions, and perspectives. This can create a deep connection between The Artist and the audience, fostering empathy and understanding.

Art reflects the cultural, social and political contexts in which it is created. It can document historical events, embody cultural values and challenge societal norms.

Many people appreciate art for its beauty and pleasure it brings. The aesthetic value of art lies in its ability to evoke a sense of wonder, delight and contemplation.

Artist continually explore new techniques, materials, and concepts. This innovative spirit drives the evolution of art and can influence other fields such as design, technology and science.

Engaging in art, wheather through creation or appreciation, can have therapeutic effects. It can serve as a form of meditation, stress relief and emotional healing.

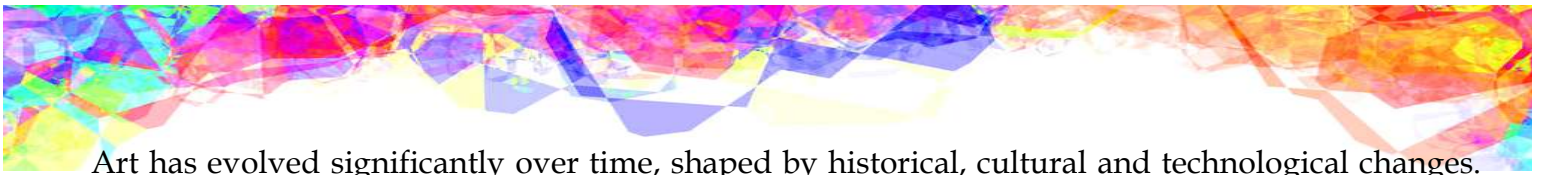
Art manifests in various forms each with unique characteristics and modes of expression.

Visual arts, includes painting, drawing, sculpture, photography and other visual media focus on creating images or objects that can be visually perceived and appreciated.

Performing arts encompasses dance, music theatre and other forms of performance, live presentations that can engage multiple senses.

Literary arts cover poetry, prose, drama and other wi orks. Literary arts rely on language to create imagery, stories and convey complex ideas.

Applied arts involves design and decoration applied on everyday objects, such as in architecture, fashion and industrial design. These arts blend functionality with aesthetic appeal.



Art has evolved significantly over time, shaped by historical, cultural and technological changes. From the cave paintings of prehistoric times to the digital art of the contemporary era, the evolution of art reflects humanity's changing views, values and capabilities. Throughout history different movements and styles, have emerged, each contributing to the rich tapestry of our include the classical art of ancient civilization, the Renaissance's emphasize on realism and Humanism, the abstract explorations on modernism and the diverse and eclectic approaches of contemporary art.

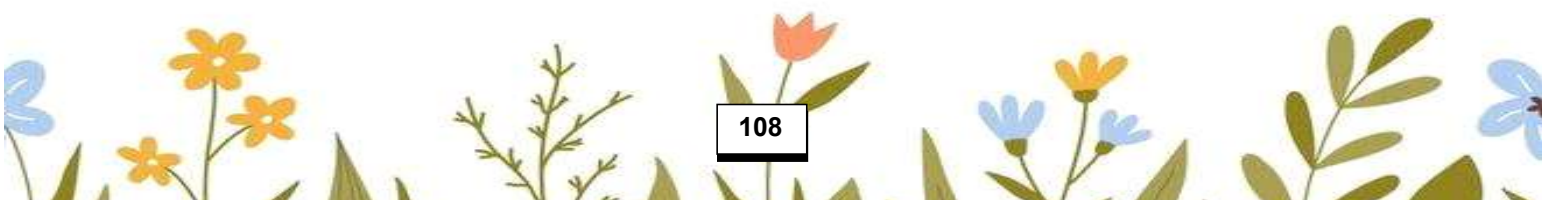
One of the most intriguing aspects of art is its subjectivity. What one person finds beautiful or moving, another might not. This subjectivity is fundamental part of art's nature, allowing for a wide range of interpretations and discussions. It encourages dialogue and exploration, making art a dynamic and ever-changing field.

Art is an essential aspect of human existence, offering window into the depths of human experience and imagination. It's diverse forms ad purposes make it a powerful tool for expression, reflection and innovation, whether through visual images performances, written words or designed objects, art continues to inspire, challenge and connect us, reminding us of our shared humanity.

Dr. Nazima Irfan

Assistant Professor

(Department of Visual Art: Drawing & Painting)





Self-Reliant India - Throughway to Real Emancipation

The total number of countries in the world is surprisingly one ninety-five,

A self-reliant Bharat can undoubtedly change every citizen's life.

The mission is to make India resilient innovative and self-sufficient,

Being self-reliant will surely take us to the pinnacle of becoming super-efficient.

Becoming vocal for our local products can literally make them global,

to focus on land labour liquidity and loss is absolutely noble.

Modi ji has envisioned India as a technology-driven nation on the global stage,

It's time for all the incredible aspects of India to get unfurled.

Our tradition of 'Vasudeva Kutumbkam' provides this world a ray of hope,

Self-Reliance turns every adversity into opportunity thus giving a greater scope.

India's specialty spirituality tradition and culture are undoubtedly its true treasure,

The magnificence of our Vedic Scriptures and saints is something one cannot measure.

Atma Nirbhar Bharat clearly means becoming self-reliant and independent everywhere,

To focus on its 5 pillars namely economy, infrastructure, system, demography. demand is out and out fair.

To call Atma Nirbhar Bharat, merely a government policy is not at all right,

It is a national spirit to acknowledge everyone working day and night.

India entering the Global market with our abundant economy will attract every native and foreigner,

Self-reliant India will again be addressed as 'Sone Ki Chidiya' in every nook and corner.

Sonali Kataria

B.Sc. IInd year

(Department of Biology)



Girls Rising: A Journey of Education

In the garden of knowledge girls stand tall,
Their dream, like blooming flowers, enthrall.

They battle storms, societal walls,
To grasp the key that destiny installs.

The tears like rain nurture the seeds of hope,
As they climb mountains, learn to cope.

Each book a torch, lighting their way,
In the dark of ignorance, they sway.

Ink-stained fingers, heart full of fire,
They rise, their spirits never tire.

Symbols of strength, breaking every chain,
In the struggle for education, they reign.

Kareena Qamar
Guest Faculty
(Department of English)





Geography and Sustainability: Exploring the Interconnected Path to a Greener Future

Geography, often referred to as the “mother of Sciences, plays a pivotal role in shaping our understanding of the world and its sustainable future. Geography and sustainability are two inseparable concepts that play a crucial role in shaping the present and future of a planet. As we navigate the challenges posed by climate change, resource depletion, and a growing global population, the study of Geography becomes an essential tool for understanding the earth diverse ecosystems, cultures, and the intricate connections between human society and the environment. In this article, we will delve into the critical intersection of geography and sustainability, exploring how they work together to address the pressing environmental and social issues of the time.

Geography: the lens through which we understand the world. Geography, in its broadest sense, is the study of the earth physical features, climate, and ecosystems, along with the human society that inhabits it. It provides the framework for understanding how natural and human factors interact to influence our world. Through geography, we can examine landforms, climate patterns, water resources, and the distribution of flora and fauna which are vital components of the earth’s ecosystem.

A key aspect of Geography is spatial analysis, which involves understanding the location and distribution of various phenomena. For example, geographers examine patterns of urbanization, deforestation, or pollution to grasp how they affect local and global environments. Understanding spatial patterns helps identify the root causes of environmental issues and develop sustainable solutions.

Sustainability: The Imperative of our time Sustainability is the practice of living in a way that at the needs of present are fulfilled without compromising the ability for future generation. It encompasses three essential pillars: environmental, economic, and social. These pillars form the basis for a balance and harmonious coexistence between humans and the environment.

Environmental sustainability involves conserving natural resources, protecting ecosystems, and mitigating pollution and climate change. Economic sustainability aims to promote a prosperous society while ensuring equitable access to resources. Social sustainability focuses on building inclusive and resilient communities that foster social equity and well-being.

The interconnected nature of geography and sustainability.

The connection between geography and sustainability is deeply woven into the fabric of our world. Here are some key aspects of interconnected relationship:

1. Environmental Geography: Understanding Ecosystem

Geographers study ecosystems, their boundaries, and the impact of human activities on them. This knowledge is fundamental for environmental sustainability. It helps us identify fragile ecosystem that require protection, such as rainforests, wetlands, and coral reefs, and understand the consequences of deforestation, habitat destruction, and pollution, by analysing the spatial distribution of biodiversity and ecosystem services, geographers inform conservation efforts.

2. Climate Geography: Addressing Climate Change

The field of climate Geography investigate the spatial patterns of climate, weather events, and climate change impacts. Geographers contribute to understanding the causes and consequences of climate change, which is central to environmental sustainability. Mitigation and adaptation, including the identification of vulnerable regions and the development of sustainable energy solutions,

3. Human Geography: Tackling Social and Economic Sustainability

Human Geography explores the distribution of population, cultures, and society across the globe. It is indispensable for achieving social and economic sustainability. By studying the spatial distribution of wealth, resources, and social inequalities, geographers provide insights into the challenges of poverty, access to education, healthcare, and social equity.

4. Geographic Information System (GIS): A Tool for Sustainability

Geographic information system (GIS) enable the integration and analysis of various Geographic data layers, offering valuable insights for sustainability initiatives. GIS, is used in field such as urban planning disaster management, and natural resource conservation. It aids in decision making by visualizing complex spatial relationships.

5. Sustainable Development Goals (SDGs): Geography in Action

The United Nations Sustainable Development Goals (SDGs) are a global framework for sustainability. Geography plays a significant role in achieving these goals. Geographers contribute to areas such as clean water and sanitation, affordable and clean energy, responsible consumption and production, and climate action, among others.

Challenges and opportunities

While the intersection of geography and sustainability offers immense potential for addressing global challenges, there are obstacles to future overcome. These include the need for interdisciplinary collaboration, that dissemination of Geographic knowledge, and the application of sustainable practices on a global scale. However, emerging technologies, such as remote sensing and geospatial data analytics, provide new opportunities for innovative solutions.

Conclusion: A sustainable future through Geography

In a world marked by rapid urbanization, climate change and environmental degradation, Geography serves as a compass for navigating the complex web of interactions between human society and the environment. By understanding the spatial dimensions of our world and recognizing the importance of sustainability we can work towards a greener, more equitable future.

Geography and sustainability are intertwined on multiple levels, from understanding ecosystems and climate patterns to addressing social and economic inequalities. This interconnectedness underscores the vital role of Geography in shaping sustainable solutions for a planet in need. As we continue to grapple with the challenges of the 21st century, the partnership between geography and sustainability remains an essential catalyst for positive change. It is through this collaboration that we can create a more harmonious and sustainable world for present and future generations.



Ms. Shail Verma
Assistant Professor
(Department of Geography)



Self-Reliant India: A Dream Coming True

The way India tried its best and has almost defeated COVID-19, the way it is using its resources and the way it is dealing with countries was all a dream if I go back a decade. Today I and every Indian feel that the world system would become just and fairer thanks to India's Aatma Nirbhar Bharat Abhiyan, which would also encourage more coexistence and peace. Today, India holds the power to decide who gets to be the next superpower in the world if it plays its cards right. Whether it be international trade, military power, soft/cultural power, technology or economy, India today is in the top 10 in every aspect of the world.

The manner in which the government has induced domestic business and public sector organization to sign long term contracts for the importation of intermediate/raw materials like ammonia, phosphoric acid, along with sulphur. These measures have made it possible for India to create NPK compounds and broaden its product line, giving farmers access to a greater variety of goods while also ensuring a healthy diet. India's courageous effort towards chemical self-sufficiency is evidence of the administration's dedication to guaranteeing adequate nutrition for its population and achieving Prime Minister Modi's goal of an Aatm Nirbhar Bharat. The goal of PM Modi's vocal or local campaign is to build a self-sufficient and autonomous economy not just to replace imports. The only country that is doing wonders in both domestic as well as global spheres is India.

Ironically, in a nation that is home to a sixth of the world's population, establishing self-reliance demands clever global connections and possibly even denser international links. The terms "trusted connectivity," "diversified origins of materials and sections," and "resilient economic and trading structures" are no more just catchphrases; rather, they refer to a strategic imperative that calls for support from all segments of India's population, including its parliamentarians, business society, and investors.

In a nutshell, this initiative is a crucial project for the growth and resuscitation of economy, which is also facing political backlash if we have to face it. It has been commended that Aatm Nirbhar Bharat revived the concept of victory as a remedy for the post-pandemic Indian economy. It has the potential to contribute to India's aspiration of becoming economically secure, technologically, advanced, and self-efficient. The widely mentioned India Bharat difference can be closed with the assistance of a coordinated approach, as could the desire for a just society.

Mrs. Vandana Agarwal

Lecturer, (Department of Computer Application)



What is Yoga?

Yoga is essentially a spiritual discipline based on an extremely subtle science, which focuses on bringing harmony between mind and body. It is an art and science of healthy living. The word 'Yoga' is derived from the Sanskrit root 'Yuj', meaning 'to join' or 'to yoke' or 'to unite'.

Yoga is a practice that connects the body, health, and mind. It uses physical postures, breathing exercises, and meditation to improve overall health. Yoga was developed as a spiritual practice thousands of years ago.

Yoga improves strength, balance and flexibility.

Bhagavad Gita dictates various types of unions or yoga for Yogi to achieve that one ultimate goal (Moksha) which is revered by all the philosophy, be it samkhya aur Vedanta aur Vaishnava. The Yoga teaching mentioned in Bhagavad Gita are ashtanga yoga, Karma Yoga, Jnan yoga and Bhakti yoga.

Shiva is called the Aadi yoga or first Yogi, since he taught yoga to the entire universe. And Shiva is the Aadi Guru, first teacher who had the Saptha Rishis as His disciples. Shiva (Rudra) taught to the entire Universe about meditation. Since that is the only way to connect to our inner self.

The 8 Limbs of yoga are Yama (abstinences), niyama (observances), asana (yoga postures), Pranayama (breath control), pratyahara (withdrawal of the senses), dharna (concentration), dhyana (meditation) and samadhi (absorption).

People are incorporating yoga in their everyday lives across the globe and this practice has stood the test of time. Yoga can be practiced by everyone regardless of their age, gender, race and fitness level.

Ms. Shreya Goyal

(Department of Yogic Science)



Mighty Millets: The Nutritious Grains of the Future

Millets, often held as the grains of future, are small seeded crops widely regarded for their nutritional benefits and environmental resilience. These ancient grains, once staple food of many civilizations are making a remarkable comeback as superfood in modern era.

Nutritional power house millets are rich source of essential nutrients. They are packed with protein, dietary fiber, vitamins, and particularly B vitamins. Additionally, they are excellent source of iron, magnesium, potassium, phosphorus, and other minerals. Their higher fiber content aids in digestion and can help in managing blood sugar levels, making them an ideal choice for diabetics.

Environmental sustainability one of the most compelling reasons for resurgence of millets is their sustainability. They are hardy crops that can grow in arid conditions and poor soils where other grains fail to grow. Millets require minimal water and are often grown without the need of chemical fertilizers/pesticides, making them a boon for eco-conscious consumers and farmers.

Culinary versatility: Millets are incredibly versatile in the kitchen. They can be used to make a variety of dishes like Ragi pancake, Bajra fritters, Ragi idli, Ragi laddu etc. As taught in the program of 'health benefits of millets' conducted in college with BRC-ICSSR. These dishes have subtle nutty flavour complementing both sweet and savory preparations and they can easily be incorporated into the daily meals of an individual.

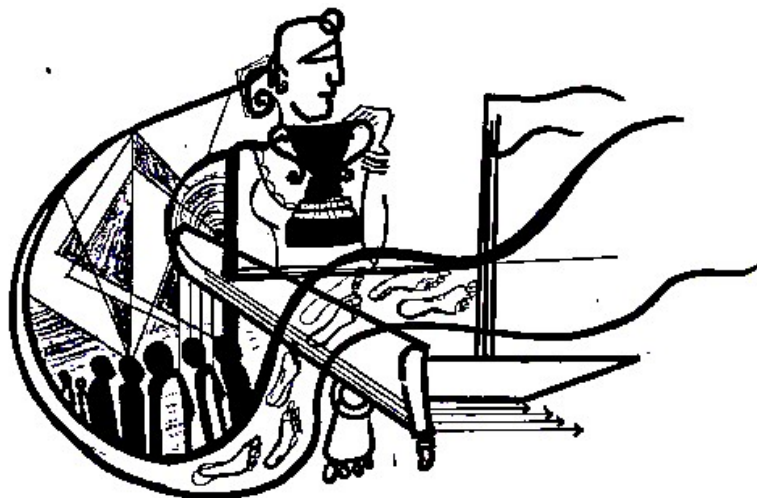
Step towards food security: With growing concerns about Climate Change and food scarcity, millets offer a sustainable solution. They have the potential to bolster food security and support the livelihoods of small farmers, particularly in developing countries like India. In conclusion, millets are not just a nutritious addition to our diets but also a step towards a more sustainable and secure food system. As we embrace these ancient grains, we contribute to a healthier planet and healthier future.

Ms. Anvita Mishra
B.A.II year



Follow Right One

Do not follow the majority,
Follow the right way.
Engage yourself in worthy deeds,
Let the evil ones away.
Love your culture,
Arise new era every day,
Respect everyone's feeling,
Don't let your aims midway.
If we spread love everywhere,
We will be blessed for it,
'Never disrespect, others
Let us try to follow it.
Your character is your memento,
Don't let it to slay,
Stay positive, calm and confident,
Better days are on the way.



Isha Chaudhary
B.Ed. Ist Year
(Department of Education)

Life and Death

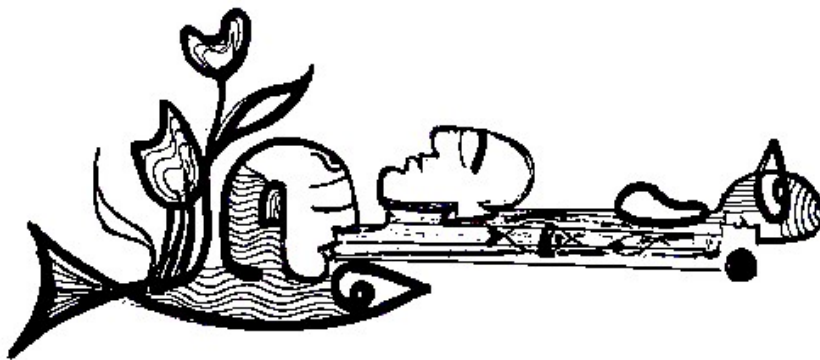
Life is a journey and death is its destination,
Death is a reality, life is an illusion,
Death is fate that everyone has to face,
Life is full of enjoyment,
Death is beyond anticipation,
Love your life,
As it is the most precious thing,
You came into this world alone.
And will leave alone
We should fill our lives
With bright colours, kindness and love
We should treat life with sincere affection
Till we are thrust into our final destination.



Reena

MA Ist year

(Department of English)



LGBTQ (Gay Marriage, Equal Rights)

LGBTQ: - stands for lesbian, gay, bisexual, transgender, queer or questioning person or the community.

Struggle: people in the LGBT community are fighting for equal rights and acceptance, specially the trans people who faces in lot of difficulty in society. These special genders are always looked down upon all the time, often discriminated.

Even after being the citizens of their own country, they don't get the equal rights. They are considered odd and different. People judge them based on their so-called mindset.

Today, homosexuality and queer identities may be acceptable to more Indian youths than ever before but within the boundaries of families, homes and schools, acceptance still remains a constant struggle for LGBT people. Discrimination is still present in rural areas, where LGBT people often face rejection from their families and are forced into opposite sex marriages.

Gay Marriage: A boy can fall in love with a girl, society find it okay, as they both love each other. But when two same sex people love each other why are the criticized? People can give different types of definitions about love but when it comes to Gay- love, they oppose it, not understanding the fact that love never sees status, caste or any gender, it just happens. Nobody is at fault. LGBT marriage should be considered legal not illegal. "Both love each other" and that is all that matters.

There are currently 34 countries where same sex marriage is legal. Andorra, Argentina, Australia, Austria, Belgium, Brazil, Canada, Chili, Denmark, Ecuador, Finland, France, Germany, Iceland, Ireland Luxembourg, Malta, Mexico, Netherlands, New Zealand, South Africa, Spain, Portugal, Slovenia, Sweden, Switzerland, Taiwan the United Kingdom, the United States of America, and Uruguay.

We are all God's children; we are humans so why treat each other differently? Everyone has equal rights in a country as well as society. Give respect and support to LGBT people. It is not about what our religion says. It is about what humanity says, whether someone is normal or abnormal.

Anjali

B.A. III year

(Department of English)





Role of Women in Nation Building

“The revolutionary energy is hidden in women which can create paradise on this earth.”

Women have a great role to play in the progress of a country and their mental and physical contact with life is much more lasting and comprehensive than that of men.

The status of Indian women has had many ups and downs from the ancient times to the present day. Our ancient society honoured women but unfortunately their position declined in the middle ages. However, with the dawn of freedom and particularly during India’s struggle for independence, their position took a turn for the better. Sarojini Naidu, Suchita Kriplani, Aruna Asaf Ali, and Vijaya Laxmi Pandit were some of the leading women freedom fighters. What they did for the nation is praiseworthy and cannot be repaid by the citizens of the country. In post-independent India, women have played a significant role as doctors, engineers, judges, scientists, diplomats, legislators and even as prime minister.

In the last few decades, women have really become into their own. They have showcased their distinct talents in various fields. Women in India are contributing to the development of the country in a significant way. Armed with education they are ready to take up even the most difficult challenges of life. Today, we can find the presence of women in those fields too which have been male-dominated. Modern women in the present age occupy top rank and achieve immense success in field such as sports, politics, administration, medicine, armed forces, performing arts, etc.

Some notable personalities who have made the nation feel proud in the recent times are Sushma Swaraj, Nikhat Zareen, Avani Chaturvedi, Manusha Chillar, and many more. With their constant and unwavering efforts, the nation could hold prestigious ranks in various fields. We must take inspiration from these wonderful women and must strive to work hard to bring laurels to our country.

Here I conclude my words with a few beautiful lines about the legendary tennis player Serena Williams-

“Every woman’s success should be an inspiration to another We are strongest when we cheer each other on.”

Sabiya M Ansari

M.A. I sem.

(Department of English)



Women Empowerment: Winds of Change

Women empowerment has become the buzzword today. Now women are working alongside men in all spheres. They profess an independent outlook. Whether they are living inside their homes or working outside. They play multiple roles of a mother, daughter, sister, wife and a working professional with remarkable harmony and ease. They are increasingly gaining control over their lives and taking their own decisions with regard to their education, career, profession and lifestyle.

With a steady increase in the number of working women, they have gained financial independence, which has given them the confidence to lead their own lives and built their own identity. They are successfully taking up diverse professions to prove that they are second to none in any respect. But while doing so women also take care to strike a balance between their commitment to their profession as well as their home and family.

With equal opportunities to work, they are functioning with a spirit of teamwork to render all possible cooperation to their male counterparts in meeting the deadlines and targets set in their respective professions.

Women empowerment is not limited to urban working in women, but women in even remote towns and villages are now increasingly making their voices heard loudly and clearly. They are no longer willing to play second fiddle to their male counterparts.

Educated or not, they are asserting their social and political rights and making their presence felt, regardless of their socio-economic background.

Ms. Shruti Gupta

BA III year

(Department of English)





Mother

All her life she tends and cares for and works
With Little space for herself.
She has a love that transcends all wordly desires,
And she selflessly works to strengthen and blaze her children's fires
When we suffer or feel low,
We reach out for her care.
Without a moment's delay,
She will always be there,
Tirelessly she works giving us her all,
Never worried about her health she begins to fall,
Yet, her only time of peace and quiet that she can save,
Is when she is beyond our reach, deep in her grave.

Reena

M.A. Ist Year

(Department of English)





Creativity and Innovation

‘Creativity’ as we call it is an immense power to do the simplest thing in a thousand different ways. It can be used to show the world the beautification of the ugliest or to make the most boring thing interesting. It ignites the human brain to follow the path of imagination, innovation and invention. It is the most powerful tool with which we can motivate the dull and even cause a sensation in cold skull.

Creativity helps humans to do a thing in more challenging manner which separates them from other. If we talk about the kids who are at the door step of knowledge they make their way with only two tools-creativity and curiosity.

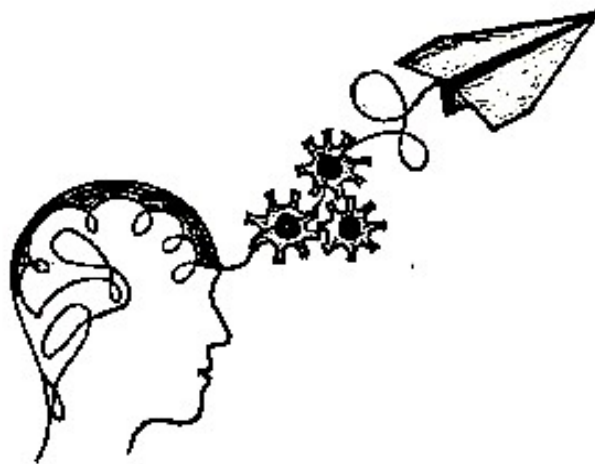
Creativity makes their learning blissful and a completely new experience. It not only makes the learning process interactive but also brings to life a never-ending desire of trying something new.

Every individual who is surviving on this planet known or unknown is creative and an innovator. He is out of all boundaries when it comes to thinking creatively. It can vary from selecting a sequin for a top, how to design a personal workstation. Problem solving, decision making and even learning is all part of this magnanimous journey of creativity. Innovation is the other side of same coin. If you can think creatively you can hold the innovation in your hand. These two are closely entwined with each other. We all use both of them in our day to day lives. So, we can say that creativity is the new enigma of evolution and Innovation.

Ankita Yadav

M.A. I year

(Department of English)





Mastering Lifestyle Management : A Guide to Balanced Living

In today's fast paced world, managing your lifestyle effectively can be a daunting task. Juggling work family, social life, and personal goals often feels overwhelming. However, mastering Lifestyle management is essential for maintaining a balanced and full feeling life. This guide explores practical strategies to help you achieve harmony in your daily routine.

Prioritize your time

Time management is the cornerstone of effective lifestyle management. Start by identifying your priorities. What are the most important aspects of your life? This could be your career, family, health, or personal growth. Once you have identified these, allocate your time accordingly. Use tools like calendars, planners, or digital app to schedule your tasks and set reminders. Remember, it's crucial to balance work with leisure and rest.

Embrace healthy living

A healthy lifestyle is fundamental to managing your life effectively. Incorporate regular exercise, a balanced diet, and sufficient sleep into your daily routine. Physical activity boosts your energy levels and reduces stress, while a nutritious diet fuels your body and mind. Aim for at least hours of sleep per night to ensure your body gets the rest it needs. Additionally, practice mindfulness or meditation to enhance your mental well-being.

Set realistic goals

Setting achievable goals is essential for maintaining motivation and focus. Breakdown your long-term goals into smaller, manageable tasks. This approach makes it easier to track your progress and celebrate small victories along the way. Be flexible with your goals and adjust them as necessary to accommodate changes in your life.

Develop positive habits

Habit shape our daily routine and overall life style. Identify and cultivate positive habits that align with your goals. Whether its reading daily, practicing gratitude, or minimizing screen time, these habits significantly impact your productivity and happiness. Conversely, work on eliminating negative habits that hinders your progress.



Manage stress effectively

Stress is an inevitable part of life, but managing it effectively is key to maintain balance. Identify your stressors and develop coping mechanisms. This could include regular exercise, hobbies, socializing with friends, or seeking professional help if necessary. Techniques like deep breathing, progressive muscle relaxation, and mindfulness can also help reduce stress levels.

Foster healthy relationships

Building and maintaining healthy relationships is crucial for emotional well-being. Surround yourself with supportive and positive people who uplift you. Communicate openly and honestly with your loved ones and invest time in nurturing these relationships. Remember, it's not just about having a social circle, but about having the quality support system.

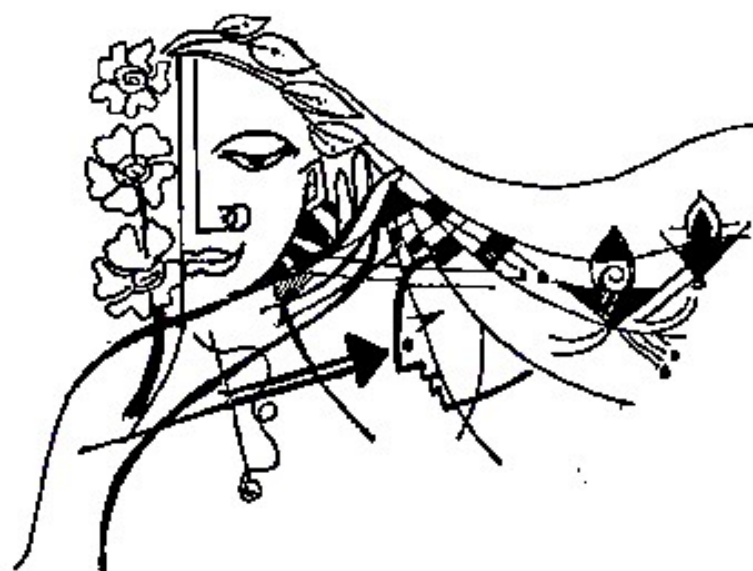
Continue Learning and Growing

Personal growth is life long journey. Stay curious a keep learning, whether through formal education, reading or new experiences. Embrace challenges as opportunities for growth and be open to change. This mindset will help you to adopt new situations and continuously improve your lifestyle.

Mrs. Himani Vishnoi

Assistant Professor

(Department of Home Science)




Childhood Memories

Sitting in the dark all alone
Remembering the past life of my own,
I remember all those days
When I enjoyed each moment in all the ways.
Whether with my friends or with nature
Every moment is memorable,
Whether the first day of my school
Or swimming for the first time
To fight with or to persuade my bestie
All were the cute childhood memories.
Fighting over silly topics
Or sometimes being over dramatic
Sharing our snacks
Or just tuning in pinks and blacks.
Thinking of the journey since day one
I realized, how far we all have come
Chasing our dreams full of passion
We lost ourselves in this world of attraction.
No matter how much I succeed
A life full of childishness still I need.
I wish to escape from all this struggling strife
Wishing to get back to my younger life
I wish to get back those Golden days
Those were my lovely childhood days.



Ms. Guari Shani
B.A.III year
(Department of English)



Narrowing the Dream Gap: Empowering the Aspirations of Indian Women

In the quiet village of Vrindavan, nestled amidst the sprawling landscapes of India, lived a young girl named Asha. Her name meant 'HOPE' and she embodied it in every way. Asha's dreams were as vast and limitless as the sky above her, filled with visions of becoming an engineer and building that spanned mighty rivers and connected distant lands.

Every evening, as the sun dipped below the horizon, Asha would climb to the roof of her home and gaze at the stars, her mind filled with calculations and blueprints. She imagined herself in a crisp white coat, her hands deftly bringing structures to life. But beneath this shimmering surface of ambition lay the murky water of societal expectations.


In Vrindavan, like in many parts of India, girls were often nudged towards more suitable aspirations. Asha's mother would remind her of the importance of learning to cook and manage the household, echoing the age-old refrain that a woman's place was within the home. Her father, though proud of her intelligence, worried about the practicality of her dreams in a world that often sidelines women's ambitions.

The village school, while a beacon of learning, was a microcosm of these societal biases. Asha's teachers, though well-meaning, rarely encouraged her to pursue the sciences, steering her instead towards the arts and home science. The other girls in her class, too, began to confirm, their dreams quietly reshaped to fit the mold of expectations.

Yet Asha's spirit remained unbroken. She found solace in books, drawing inspiration from the stories of women who had defied the odds. Kalpana Chawla, the first woman in space, was among her inspiration, if Kalpana could touch the stars, why couldn't she build bridges?

The dream gap is a silent thief, stealthily robbing young girls of their aspirations and ambitions, particularly in patriarchal societies such as India. This gap is not just void but a chasm, shaped by cultural norms and systematic barriers that subtly and overtly tell girls that their dreams are not worthy, not as attainable, as those of their male counterparts.

From the tender age when dreams first take flight, girls in India are often gently nudged away from the soaring heights of possibility. The societal whisperings begin early, steering them towards the familiar confines of domesticity, away from the vast, uncharted territories of science, tech, engineering, and mathematics.



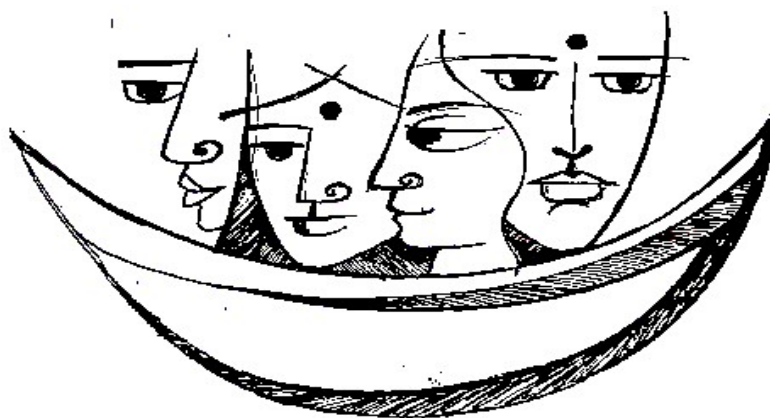
In the broader landscape, the dream gap manifests in the narrowing parts women are allowed to tread. They are often channeled into professions deemed 'appropriate' for their gender, such as teaching or nursing, while the corridor of power in business, engineering, politics and sports remain predominantly males. The pervasive stereotypes that cast doubt on women's leadership abilities and her physical strength which further entrench this divide, resulting in a glaring underrepresentation of women in positions of influences decision making and physical strength.

To Bridge this yawning gap, India must embark on a journey of profound cultural and structural transformation. Education stands at the forefront of this revolution. Schools must become bastions of gender neutrality, where girls are encouraged and mentored to pursue diverse and ambitious career paths. Public awareness campaigns can play a pivotal role in dismantling the archaic perceptions of women's capabilities and roles.

Equally important is a role of family. Parents must be encouraged to foster and support the dreams of their daughters with the same favor as they do for their sons. It is within the warmth of the family unit that the seed of ambition can be nurtured or satisfied. The quest to close the dream gap, India must create a symphony. The quest to close the dream gap, ndia must create a symphony of support and opportunity, where every girl can hear the resounding affirmation that her dreams are not just possible but vital. By doing so, India will not only bridge the dream gap but also unlock the immense potential of its women, driving forward a wave of social and economic progress that benefits all.

Ms. Anandita Dass

Research Scholar
(Department of English)





New Beginning - The College Experience

College life is one of the most remarkable times of an individual's life. Unlike school life, college life has a different experience, and each person should have this experience in his life. College life exposes us to all new experiences which we always dream of experiencing after our school life. Lucky are those who get the chance to enjoy their college life, as many people don't get this chance due to their circumstances or financial problems. For every person, college life has a different meaning, while some people spend their college life partying with friends, others become more cautious about their careers and study hard.

A new place and a new life with a new lifestyle.

First day of college is really very special and memorable for every student. The first of anything impresses us most. That is why we hardly ever forget our first love, first success, and our first friend. Likewise, we cannot forget our first day of college.

My first day of college-

It was the morning of 24 January 2021, I woke up early in the morning and I was too excited for my new beginning in college. I was getting ready for my college me and my parents were too excited. My mom gave me breakfast, but due to lot of excitement I could not have it and left home in hurry for my college. When I reached at college's gate. There was tear in my eyes and heart was full of tears. Because it was totally a new world for me. I entered into the college with so many questions in my mind On first day, I attended all my classes of every subject and came back home. First day was just okay nothing much good had happened. When my mom asked me about my first day of college, my reaction was not very positive. I just started to tell negative things about my college and all that had happened in the college. Then my mum explained me that adjusting to new things take time. And after that I started to be regular in the college and moulded myself according to the environment of my college. I made friends in my college and then my life became easier, happier, and I enjoyed my college life very much.

Hardest part of college life - As a college student, the hardest part of college life is to leave college after graduation or post-graduation. The last days of college were the hardest, knowing that you will be separated from your friends, the campus, teachers and completely leaving behind a part of life. One fine day, you will be silently smiling with tear Eyes, looking at the pictures of your college and old friends, and remembering all the good times you spent there.

Ms. Poonima Singh

M.A. Ist Sem.

(Department of English)



Friendship

What a joy of mine
To have a friend like Rhine.

For making me fine
May you always Shine.

For lifting me up
When I am feeling stuck,
Making me cheer up
And I always remember you by hiccup.

Thanks for being there,
The love you gave with care,
You are like a solitaire,
And when you are not around I feel despair.

Sakshi Ahlawat
B.Ed. I year
(Department of Education)





Everyone Deserves a Second Chance....

“Life tends to surprise you when you least expect it”

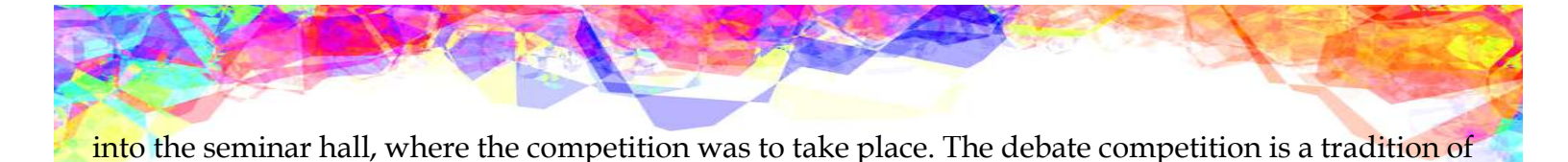
I come from a typical Indian family. which means dinner time brings with it pop quizzes on current affairs, a heated debate about anything ranging from poetry to politics, from Science to theology. You not only need to have your arguments on point but also mathematical figures memorized to perfection. ‘Shastrarth’ they say, is a very important attribute one must learn and be dexterous with. Naturally, overtime I developed a penchant for it, but I am not as brilliant as my elders. But we try and learn right?

In my school years, I was an active participant in the debate team, be it the rebuttal squad or the speaking group but we seldom get what we want or how we want it. The truth is, I was ordered to write for the favorite, or track them how to be on the stage, or formulate questions but never represent or address the audience. It was agonising, and crippling at times. I hosted events and spoke from the stage but I really wanted to debate and that dream came to fruition recently, when I represented our college in an inter college debate held at Shambhu Dayal PG College, Ghaziabad. What a splendid, overwhelming and brilliant experience it was.

The interesting turn of events began, when Dr. Garima Malik, my Botany Professor asked to write about the topic, “Should social media be censored?” I always tend to do the opposite of what the crowd would go for, so I decided to write against the motion. Then, it was time to showcase, what I had. Now this isn’t a superhero story where I excelled on my first attempt because crippling anxiety combined with self-doubt, tends to keep us from being what we are meant to be. However, I tried, practiced with the time, the time limit being (4+1) minutes. After being incessant with it, I finally managed to give my point or pick my argument in 4 minutes and 30 seconds, though still shakingly due to a flight or fight response.

Nothing prepares as you for the actual moment, because now practice time was over, and the day was upon us. The competition was scheduled to be held on the second day of February 2023, our reporting time was around 11 a.m. The very same morning earlier in the day, I was packing my bag like I was going to war, clad with my armor (our uniform), with my written matter in hand, I was ready to go. We were asked to report to the college at 8:45 a.m. sharp. Before long my fellow participant Ms. Sakshi arrived and along with Professor Anjali Yadav, we were ready to head to the battlefield.

One would think that it would take longer to get to Ghaziabad or maybe it just was my desperate nerves, but we arrived at our location in about an hour. The lack of arrangements was daunting because here at RG Degree College, everything is so precise and planned, however we soon located the registration desk, and filled out our details. Each of us was handed two coupons, one for breakfast and the other for lunch. And then finally, the festivities commenced, with the dignitaries and guest’s arrival

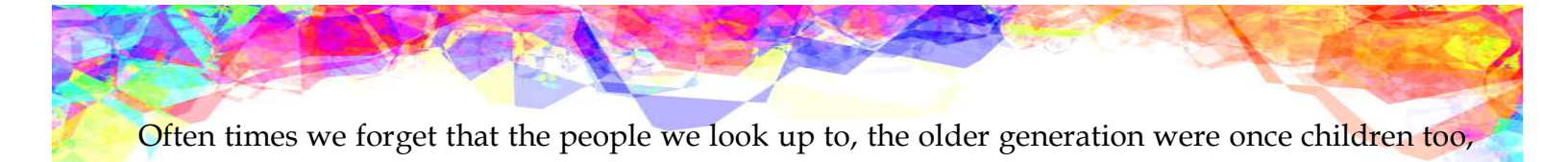


into the seminar hall, where the competition was to take place. The debate competition is a tradition of Shambhu Dayal College, commemorating their Foundation Day. The event began with a beautiful 'Saraswati Vandana' followed by the lightening of the holy lamp by guests who paid their respect to the goddess Saraswati and founding father of the Institution. Each guest received an elaborate welcome and was offered a sapling. The Jury consisted of 5 people who were seated on the stage between the two dais and the judges consisted of three people seated in the front row.

The rules were soon explained. Marks were to be awarded for originality, vocabulary, speaking style, and the ability to keep up with the clock. The program was hosted by the B.Ed department and cultural club with one of their students responsible for the later part of the event. Students were summoned in the order of their registration, and with every passing minute, the time drew nearer for us to go on stage. Miss Sakshi, who spoke for the motion, commanded the audience, even though she was as scared as I was, The audience was charmed by her unwavering voice. And then, while she was speaking, 'I was working on calming my rather jittery muscles and shaking hands, because this was it. It was my time to prove the people who look down upon me wrong. It was time for me to use the courage and conviction bestowed upon me by my professors and parents alike. And before I knew it, I was speaking, 'Laurie Halse Anderson....' like on autopilot. I have absolutely no memory of what happened one moment I was scared, the other I was speaking with confidence. The warning bell did not faze me, and not only did I manage to make my case, but it was over in 4 minutes and 50 seconds. I was greeted with a thunderous applause, which honestly took me a moment to register, with my fellow participants looking at me with a very warm, thrilled, and proud expression. Needless to say, it was overwhelming Nothing in my life felt so right.

We were fourth in line. There were several more to go, with 15 participating teams, we were in for the long haul. Some speakers made such eloquent speeches that my mind was blown; some were articulate; some commanded the audience with grace. However, debating is like the Hunger Games- follow the rules or you lose. And I think a lot of my fellow participants forgot that. But all in all, it was marvelous, to see various interpretations of what I thought was a single sensational topic, various methodologies, quoting styles, etc.

And before we knew it, the last participant made their case, and the judges were gearing up for results. Proud to say that we were blessed to hear the kind words of encouragement, support and marvel from the esteemed guests, who talked on the importance of speaking our minds and not to become slaves to our system where we do not even realize that we are slaves. And older gentleman, who went by the name of Mr. Shiv Pratap, congratulated all participants for having the courage to show up and walk up to the stage and speak. He told how difficult it can be and how scared he was when he spoke for the first time.



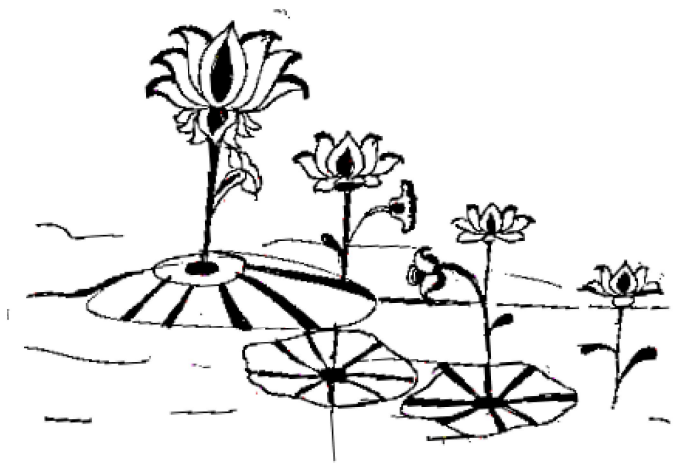
Often times we forget that the people we look up to, the older generation were once children too, From the principal, Dr Akhilesh Sharma, to the chief guest, to the judges, I will be forever grateful for their honesty and encouragement. And then, as the butterflies is in my stomach intensified, it was the time for the judgement. The prizes were divided in to certain categories: participation certificate, three prizes for the best speakers (irrespective of their motion- for or against) and the running trophy, shining and sterling, looking at us from its glass case.

Ms Sakshi bagged second place in the consolation category and I, Aditi Kaushik bagged third place in the speaker category. Was it real? Absolutely I did not believe it. I was so shaken up I would have cried. Needless to say, the grand, beautiful, heirloom-like running Trophy was ours and we were so proud. When I went to take my trophy, the judges congratulated me and said things like they were so impressed, I cannot do justice to what I felt, and I don't think that English dictionary would suffice eiher. After several pictures and congratulations' later we were moved to the dining area, and I can assure you, nothing taste like 'Gulab Jamun' eaten after a win. We talked to other participants, while the teachers and guests were in other areas. And soon it was time to go. Ironically the day I was dreading became so beautiful and memorable. However, before we were supposed to leave, a reporter took an interview, and that was an interesting experience for everyone involved. Though me and Ms Sakshi were rather focused on the fragile trophy.

And then saying our gratitude to the staff and principal, we headed back home. It was a beautiful, brilliant and splendid experience, one I shall always cherish. Julius Caesar said "Experience is the best teacher" and I staunchly believe in that and I hope there would be many such life altering experiences in my life. I also want to express my gratitude to my teacher for giving me this opportunity, to my friend and participant for being so kind and supportive, to our principal for ensuring we were comfortable as we set up to war, lastly to God and the almighty team for keeping us all safe and sound, for letting us express what we believe in.

Ms. Aditi Kaushik

B.Sc. III Sem.



Silent Shadows: A Queen's Lament

In shadows deep within the home
Where love should bloom, where comfort roams,
A heart lies broken, silenced cries,
Beneath the watch of unkind eyes.

She walks the hall where echoes ring
Of promise that once took wing
Yet now she faces night of dread
In a marriage cold, in a loveless bed.

Her voice is lost, her spirit bruised
A captive heart, a life abused
The vows they spoke, now hollow frail
Her pleas for peace to no avail.

In stolen moments, she dreams of light
A world where love conquers the night
Where comfort isn't just a word
And every whisper can be heard.

She yearns for freedom for a day
When Love's true essence finds its way
When hearts are cherished, hands are kind
And solace isn't hard to find.

Until that dawn, she fights unseen
In shadows, she remains a queen
Her strength unbroken, silent grace
A beacon in a darkened space.



Ms. Anandita Dass
Research Scholar
(Department of English)

Nature's Harmony

The multitude of living that make up life on earth
Everything is interdependent from the stage of birth.

Holistic coexistence compromise unity in diversity
All that live must die, Passing through nature to eternity

Nature reminds us how to be in harmony with our life
That how to restore mental is without aggression of knife.

Nature teaches us in various ways with decent
Working in balance together in an agreement.

As Rising Sun symbolize the beginning of new day
In contrast if refers bright outlook of thoughts for betterment every day.

Watering and caring plants can make them sick, shading and wide
They then gave fruits, provide shade too tired on the other side.

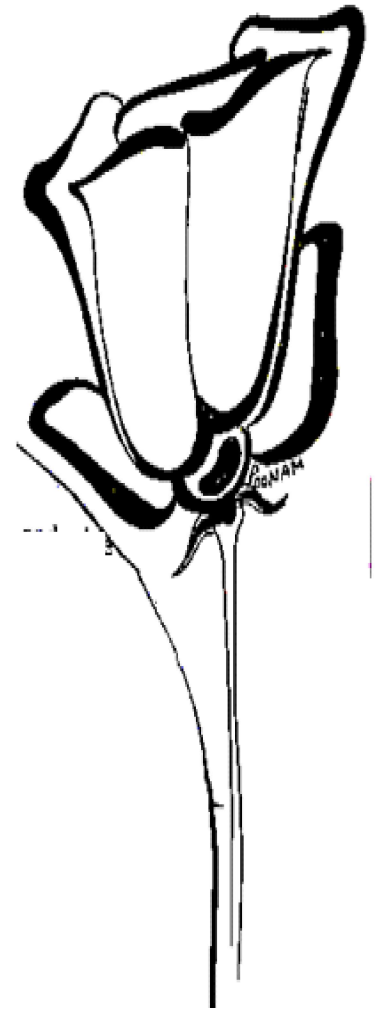
Chirping of the birds is a melodious song of tranquility
To save our nature with harmony is our Chief responsibility.

Blooming flowers reminds to embrace cheerful changes & growth
We must adopt among all creatures take this vulnerable oath

We should not exploit nature to satisfy our greed
We must live peacefully alongside as interdependence is a need.

Use natural resources carefully as a term we use sustainable
Harmony in nature is nothing beyond coexistence that is amicable.

In life in peace with nature the love of virtue and truth
Ecological balance, connection oneness for a better future of youth.



Isha Chaudhary

B.Ed 1st year

(Department of Education)

In Democracy

Amidst the flaming fire
Bloody bright but quiet
Burning embers
A Life of Gypsies
Wandering from place to place
Home on their shoulders!
Half-filled vessels
Spilling solitude
Meanings are lost
Rising fearless
The shining star of last night
Daring sunlight
Salty rivers
Fish die of thirst
Insatiate hunger
Broken in an unknown desert
Without two drops of water
Fatigue defeated hope
Show off in public places
Splendiferous motor cars
Starving people
The constitutional rights
Suffocating people's voice
In Democracy



Inspired by:

Prof. Lavi Azad

Prof. Renu Jain

HOD, (Department of History)

महाविद्यालय में NAAC टीम के आगमन की झलकियाँ



मोबाईल एवं टेबलेट वितरण समारोह



COLLEGE FACULTY MEMBERS



DEPARTMENT INCHANGES & COORDINATORS



PROFESSORS OF COLLEGE



SELF-FINANCE FACULTY MEMBERS



IQAC MEMBERS



R.G. PG INNOVATION CELL



FACULTY OF EDUCATION



FACULTY OF COMMERCE



TIME-TABLE & ADMISSION COMMITTEE



COLLEGE-O-SCOPE, 'SAURABH' MAGAZINE COMMITTEE



PROCTORIAL BOARD COMMITTEE



MEDIA CELL COMMITTEE



COLLEGE STAFF CLUB MEMBERS



LIBRARY STAFF



OFFICE STAFF



LAB ASSISTANTS STAFF



CLASS IV EMPLOYEES



महाविद्यालय से सेवानिवृत्त साथी बहनें



Prof. Kanchan Puri

Professor
Dept. of Hindi
(1996 - 2024)



Dr. Suman Lata Sharma

Associate Professor
Dept. of Music (Tabla)
(2003 - 2023)



Dr. Renu Kamboj

Associate Professor
Dept. of Home Science
(1991 - 2023)



Dr. Seema Jain

Professor
Dept. of Zoology
(1996 - 2023)

सम्पादिका मण्डल



प्रो० निवेदिता कुमारी
महाविद्यालय प्राचार्या/संरक्षिका



प्रो० अर्चना रानी
मुख्य सम्पादिका
प्रभारी: ड्राईंग एवं पेंटिंग
विभाग



प्रो० सुनीता
सह सम्पादिका
प्रभारी: हिन्दी विभाग



प्रो० पूनम लखनपाल
सह सम्पादिका
प्रभारी: संस्कृत विभाग



प्रो० ममता उपाध्याय
सह सम्पादिका
प्रभारी: अंग्रेजी विभाग

सहयोगी सदस्य

प्रो० दीक्षा यजुर्वेदी, प्रो० मंजू सिंह, डॉ० नाजिमा इरफान, श्रीमति प्रीति



